अक़ीदत के फूल

संकलन और प्रस्तुति

रमेश 'कँवल'

अक़ीदत के फूल

संकलन और प्रस्तुति
रमेश 'कँवल'

Anybook

Published By

Anybook

Cell : 9971698930

E-mail : contactanybook@gmail.com

Website : www.anybook.org

Price in India : 250.00 /- INR

First published by Anybook in 2020

Copyright © 2020 Ramesh Kanwal

Printed and bound in India

Cover Design & Typesetting by Anybook

ISBN : 978-93-86619-59-4

The author asserts the moral right to be identified as the author of this work

All right reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by means, electronic or mechanical and including photocopying, recording or by any information storage and stored in retrieval system, without the prior permission in writing of the Publisher and Author, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similer condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

मेरे तज़्किरे से ख़ाली कोई दास्ताँ नहीं है
मैं सफ़ीरे-शहरे-दिल हूँ मेरा घर कहाँ नहीं है

बज़्मे-‘हफ़ीज़’ बनारसी के सरपरस्त,ओहदेदार और मेम्बरान

बज़्मे-हफीज़ बनारसी, मरकज़े–रंगे–हुनर,पटना के संरक्षक,आजीवन और वार्षिक सदस्य

श्री रमेश कँवल

चेयरपर्सन

डॉ. अख़्तर मसूद

जनरल सेक्रेटरी

श्री परवेज़ आलम

ऑर्गनाइज़िंग सेक्रेटरी

जनाब ख़ुर्शीद अकबर

सरपरस्त

डॉ. एहसान हैदर शाम

आजीवन सदस्य

श्रीमती नन्दनी प्रनय

अब्दुल क़ादिर हफ़ीज़

प्रो.श्रीमती सुधा सिन्हा

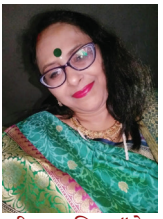

श्रीमती पूनम सिन्हा "श्रेयसी"

मो.नसीम अख़्तर

सैयद परवेज़ आलम,बि.प्र.से.

डॉ.मो.अरमान

श्रीमती निकहत आरा

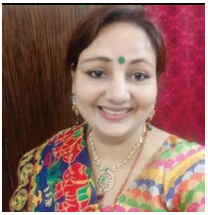

श्रीमती आराधना प्रसाद

श्री शुभ चन्द्र सिन्हा

डॉ. शँकर प्रसाद

सुश्री शाज़िया नाज़

मोहतरमा ज़ीनत शैख़

श्रीमती तलअत परवीन

श्री सुनील कुमार

कुमारी स्मृति कुमकुम

श्रीमती मासूमा ख़ातून

श्री मुनीब मुज़फ़्फ़रपुरी

श्रीमती मीना कुमारी परिहार

डॉ.शालिनी पाण्डेय

जनाब ज़फ़र महमूद हफ़ीज़

अक़ीदत के फूल के शो'अरा

श्री रमेश कँवल

डॉ. एहसान हैदर शाम

मो.ऐनुल हक़ ख़ान 'नाशाद'

अब्दुल क़ादिर हफ़ीज़

जनाब ज़फ़र महमूद हफ़ीज़

एजाज़ अली अरशद

मो. रहमतुल्लाह अली

मो. नसर आलम नसर

श्रीमती मासूमा ख़ातून

शमअ कौसर 'शमअ'

नियाज नज़र फातमी

डॉ. शमअ नास्मीन नाज़ाँ

मो. असरार आलम सैफ़ी

तबस्सुम नाज़

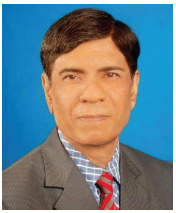
अरुण कुमार आर्य

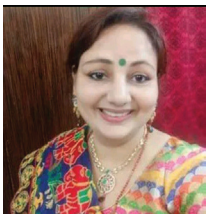
श्रीमती आराधना प्रसाद

डॉ. अख़्तर मसूद

डॉ आरती कुमारी

घनश्याम

सोमा आनन्द गुप्ता

मो.नसीम अख़्तर

डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव

डॉ.अर्चना त्रिपाठी

श्रीमती पूनम सिन्हा "श्रेयसी"

श्रीमती नन्दनी प्रनय

डॉ. शँकर प्रसाद

श्री सुनील कुमार

श्रीमती तलअत परवीन

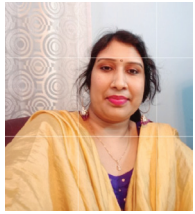
श्रीमती निकहत आरा

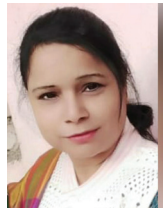
कुमारी स्मृति कुमकुम

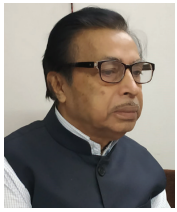
नईमुद्दीन (नईम सबा)

मो.शकील ख़ान (शकील सहसरामी)

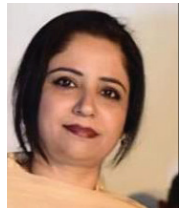
हिना रिज़्वी हैदर

मोहम्मद ज़फ़र सिद्दीक़ी

इरफ़ान अहमद (बेलहारवी)

डॉ.शालिनी पाण्डेय

श्री शुभ चन्द्र सिन्हा

प्रो.श्रीमती सुधा सिन्हा

सुश्री शाज़िया नाज़

चैतन्य चन्दन

डॉ.मो.अरमान

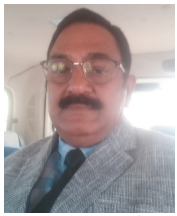

अनिल कुमार सिंह

आर.पी. 'घायल'

मोहतरमा ज़ीनत शैख़

कुन्दन आनन्द

हफ़ीज़ का कुन्बा

हफ़ीज़ बनारसी (निराला अंदाज़)

सालेह ख़ातून
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी की पत्नी

अख़्तर मसूद
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी के पुत्र

अतिया बानो
अख़्तर मसूद की पत्नी

ज़फ़र महमूद
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी के पुत्र

रिज़वाना नसरीन
ज़फ़र महमूद की पत्नी

प्रो. अब्दुल क़ादिर
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी के पुत्र

सना अफ़ज़ल
प्रो. अब्दुल क़ादिर की पत्नी

अब्दुल रहमान
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी के पुत्र

फ़ातिमा नाहिद
प्रो. अब्दुल रहमान की पत्नी

डॉ. साजिदा सानी
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी की पुत्री

डॉ. नूरुद्दीन
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी के दामाद

शाहला यास्मीन
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी की पुत्री

मरहूम ओबैदुर रहमान
मरहूम हफ़ीज़ बनारसी के दामाद

इन्तसाब
समर्पण

मोहतरमा सालेहा ख़ातून को
जो उस्तादे-मोहतरम हफ़ीज़ बनारसी मरहूम की शरीके-ज़िन्दगी और उनकी
शाइरी की प्रेरणा-श्रोत (ज़रिया-ए-तरग़ीब) हैं

उस्तादे-मोहतरम आली जनाब वफ़ा सिकंदरपुरी को
जिन्होंने मुझे शाइरी के अलिफ़, बे से वाक़िफ़ कराया

उस्तादे-मोहतरम आली जनाब डॉ. (प्रो.) तल्हा रिज़्वी 'बर्क़' को
जिन्होंने मुझे ग़ज़ल के फ़न की लतीफ़ बारीकियों से रूशनास कराया

और

उस्तादे-मोहतरम आली जनाब हफ़ीज़ बनारसी मरहूम की यादों के नाम सादर
समर्पित

रमेश 'कँवल'

विषय सूची

अक़ीदत के फूल : रमेश कँवल		18
अक़ीदत के फूल : प्रो.डॉ.तल्हा रिज़वी बर्क़		21
बज़्मे-'हफ़ीज़' बनारसी की स्थापना (तशकील) और मक़सद		23
बज़्मे-'हफ़ीज़' बनारसी के सरपरस्त, ओहदेदार और मेम्बरान		24
'हफ़ीज़' बनारसी : एक परिचय		26
आधुनिकता को परंपरा का लिबास पहनाने वाला शाइर		28
पहला इजलास : ख़िराजे-अक़ीदत का पहला फूल		**34**
हफ़ीज़ बनारसी की मिसरा तरह वाली पहली ग़ज़ल		**36**
ना'ते-पाक : यावर राशिद	नबी के इश्क़ का तुम	37
डॉ.एहसान शाम	भुला न पाए कोई ऐसा नाम	38
नाशाद औरंगाबादी	किसी तरह से ज़माने में नाम	39
डॉ. अब्दुल क़ादिर हफ़ीज़	तुम्हारा नाम ही लेते हैं	40
ज़फर महमूद	बरंगे- बादे - सबा हर तरफ़	41
एजाज़ अली अरशद	जो यादगार हो कुछ ऐसा	42
रहमत अली रहमत	सलामती की दुआ दें	43
नसर आलम नसर	जो कर सको तो	44
मासूमा ख़ातून	बड़े ख़ुलूस से ये	45
शमअ कौसर शमअ	किसी मुकाम पे देखो	46
गुलाम रब्बानी अदील	ख़ुदी न छोड़ो	47
हफ़ीज़ बनारसी:मिसरा तरह वाली दूसरी ग़ज़ल		**48**
नियाज़ नज़र फ़ातमी	तेरी आमद ने सच	49
डॉ.शमअ नासमीन नाज़ाँ	अदब ने हमसे रिश्ता	50
शमअ कौसर शमअ	तेरी चाहत, तेरी उल्फ़त	51
असरार आलम सैफ़ी	बुजुर्गों की नज़र ने	52
तबस्सुम नाज़	मैं अपने आपको	53
हफ़ीज़ बनारसी : मिसरा तरह वाली तीसरी ग़ज़ल		**54**
अरुण कुमार आर्य	मक़्तल में आप आये	55
आराधना प्रसाद	चलना है राहे-हक़ पे	56

रहमत अली रहमत	अब इस जहाँ की	57
अख़्तर मसूद	कैसा है आसमान	58
अता उर रहमान अता	चेहरे के इश्तिहार	59
नियाज़ नादिर	इक फ़िक्र-ओ आगही	60
डॉ आरती कुमारी	पत्थर न देखिये	61
रमेश 'कँवल'	जो पल गुज़र गये	62
दूसरा इजलास : खिराजे-अक़ीदत-मौसीक़ी का गुलदस्ता		**67**
फ़नकारों का तआ'रुफ़ और गुलपेशी		73
शामे-ग़ज़ल हफ़ीज़ के लिए मुन्तख़ब ग़ज़लें		78
तीसरा इजलास : पर्यावरण का संरक्षण		98
रमेश 'कँवल'	पर्यावरण संरक्षण	102
घनश्याम	क़त्ल जब-जब	104
रमेश 'कँवल'	पर्यावरण मुक्तक	105
सोमा आनन्द गुप्ता	"पर्यावरण"	106
मो. नसीम अख़्तर	वो पेड़	108
डॉ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव	मानव का आततायीपन	110
डॉ.अर्चना त्रिपाठी	दरख़्त	112
पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'	पानी	114
नन्दनी प्रनय	हरियाली हो पत्तों वाली	116
रमेश 'कँवल'	ट्रैफ़िक जाम	117
चौथा इजलास : खिराजे-अक़ीदत चौथी पेशकश		112
हफ़ीज़ बनारसी : मिसरा तरह वाली चौथी ग़ज़ल		**135**
अरुण कुमार आर्य	दिल मेरा रंग-महल	136
डॉ. शँकर प्रसाद	आज जो है वही कल	137
रमेश 'कँवल'	मसअला मुल्क़ का हल	138
नईम सबा	प्यार सच्चा मेरा कल हो	139
सुनील कुमार	वक़्त सबका ही प्रबल	140
कुमारी स्मृति 'कुमकुम'	मीर सी कोई ग़ज़ल हो	141
तलअत परवीन	ज़िन्दगी मेरी सफल	142
निकहत आरा	भागती उम्र का हल	143

डॉ. शमअ नास्मीन नाज़ाँ	जा-ब-जा शामे-ग़ज़ल हो	144
मासूमा ख़ातून	सब्र मेहनत का भी फल	146
हफ़ीज़ बनारसी : मिसरा तरह वाली पाँचवी ग़ज़ल		**148**
घनश्याम	जन्नत से चल के	149
नियाज़ नज़र फ़ातमी	मेरी समझ में इतनी	150
अरुण कुमार आर्य	कैसे कहूँ कि मैने	151
डॉ. अख़्तर मसूद	साज़े-नफ़स पे	152
शकील साहसरामी	हमने जो उसके फ़ज़्ल	154
डॉ. शँकर प्रसाद सागर	तन्हाइयों के	155
प्रो. एहसान शाम	कब किसके काम	156
हिना रिज़्वी हैदर	हमने ख़ुदा से	157
ज़फ़र सिद्दीक़ी	जब तू ने सारी	158
इरफ़ान अहमद बेलहारवी	अपनी नहीं है यारो	160
डॉ. शालिनी पाण्डेय	नायाब दोस्तों ने	161
शुभ चन्द्र सिन्हा	यूँही लबों पे भूले	162
डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा	बेग़म ने पाई पाई	163
शाज़िया नाज़	सदके में उनसे हमने	164
चैतन्य चन्दन	तुमने जो राहे वस्ल	165
रमेश 'कँवल'	गमले में तुलसी जैसी	166
शमअ कौसर	किस-किस के साथ	168
ज़िन्दगी पर 'हफ़ीज़' बनारसी के अशआर		169
मुहब्बत पर 'हफ़ीज़' बनारसी के अशआर		**172**
मयख़ाना पर 'हफ़ीज़' बनारसी के अशआर		**174**
तरन्नुम में पेश किये गये हफ़ीज़ बनारसी के अशआर		**176**
हफ़ीज़ बनारसी के ग़ज़लिया मतले : डॉ. मोहम्मद अरमान		177
'हफ़ीज़' बनारसी : गौहरे-नायाब शख़्सीयत : मासूमा ख़ातून		183
16 जून 2019 की एक शाम		187
ज़श्ने-उर्दू के अवसर पर शायरों को पुरस्कृत व सम्मानित करने का प्रस्ताव		188
पटना पुस्तक-मेला 2019 में मुनअक़द मुशायरे की दास्ताँ		195
नज़्रे-हफ़ीज़ बनारसी : डॉ.अब्दुल मन्नान तरज़ी		200

2020 की लाजवाब ग़ज़लें		202
पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'	हम अब इस प्यार की	203
श्री अनिल कुमार सिंह	दिलों में रहने वाले	204
सुनील कुमार	हक़ीक़त नीम सी कड़वी	206
आर. पी. 'घायल'	वफ़ा जिनमें नहीं है	207
ज़ीनत शैख़	दीवानगी-ए-शौक़ से	208
कुंदन आनन्द	किसी को राह की	209
डॉक्टर शँकर सागर	रिश्ता जो बना कोई	210
डॉ.(प्रो.) सुधा सिन्हा	ख़ुशियों का मेरे होंठों	211
रमेश 'कवल'	इस दौर के भारत का	212
रमेश 'कँवल' का शे'री मज्मुआ 'रंगे-हुनर' : प्रो.अब्दुल मन्नान तरज़ी		213
हार्दिक आभार संसूचन		216

अक़ीदत के फूल : रमेश 'कँवल'

(हफ़ीज़ बनारसी मरहूम के अज़ीज़ शागिर्द)

मेरा जन्म बिहार में हुआ। मैं भोजपुर ज़िला के पीरो अनुमण्डल के जितौरा गाँव में पैदा हुआ लेकिन मेरी तालीम और परवरिश पश्चिम बंगाल में हुई। जगदल के चश्म-ए-रहमत हाई स्कूल का विद्यार्थी रहा लेकिन माता-पिता चाहते थे कि मैं डॉक्टर बनूँ। मेरे स्कूल में बायोलॉजी की पढ़ाई नहीं होती थी। आर्थिक सम्पन्नता नहीं होने के बावजूद अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए मेरा नाम बड़ा बाज़ार, कोलकाता के सारस्वत क्षत्रिय विद्यालय में लिखवाया गया लेकिन मैं उनकी उमीदों पर खरा नहीं उतरा। मेडिकल में एडमिशन नहीं हो सका। मशहूर साहित्यकार के नाम से मशहूर ऋषि बंकिम चन्द्र कॉलेज, नैहाटी में मेरा नाम लिखाया। इश्क़ की मसर्रत से रूबरू हुआ। शाइरी की दौलत कमाने की हसरत बढ़ी। 'साहिर' लुधियानवी और 'शकील' बदायूँनी के फ़िल्मी गीत सुनकर गीतकार बनने की तमन्ना जाग उठी। तुकबन्दी के वरक़ देखकर झिड़कियाँ मिलीं। कोई कुछ बताने वाला नज़र नहीं आ रहा था। इस बीच एक मोहतरम ने मुझमें संभावनाओं की मीनार का दीदार किया। 18-19 साल के एक मासूम का हाथ पकड़ा। अदबी सलाहियत की रौशनी से शराबोर किया।

पहली ग़ज़ल 1972 में मेरे महबूब शाइर साहिर के शहर लुधियाना से शाया होने वाले रिसाले परवाज़ में जल्वागर हुई। मुझे ख़ुशियों के पंख लग गये। मोहतरम का शुक्रिया अदा किया और गुज़ारिश की कि मुझे भी उर्दू लिखना पढ़ना सिखा दिया जाय। ये थे मुझ पर बेहद मेहरबान रहने वाले करमफ़रमा जनाब वफ़ा सिकंदरपुरी साहब। मेरे उस्तादे-अव्वल। उन्होंने मुझ पर एक और एहसान किया। मुझसे बेरुख़ी से पेश आए और कहा कि उर्दू सीखना इतना आसान थोड़े है। मैंने कुछ नहीं कहा। बहुत एहसानात उनके थे मुझ पर। लेकिन उर्दू की शीरिनियों से इश्क़ करने की ख़्वाहिशों ने दिल ही दिल में ठान लिया कि अब आपसे उर्दू रस्मुल-ख़त सीख कर ही मिलूँगा। ग्रेजुएशन का इम्तहान हो चुका था। शाइरी के अलावा कोई काम भी तो नहीं था। जामिया उर्दू के कॉरेस्पोंडेंस कोर्स से उर्दू लिखना पढ़ना सीखा। उस्तादे-मोहतरम से मिला और इसकी इत्तला दी। वे बहुत ख़ुश हुए और गले से लगा लिया। पारिवारिक वजहों ने मुझे असीरे-ज़ुल्फ़े बंगाल से रिहा करवा कर गिरफ़्तारे-गेसू-ए-बिहार करवाया। मुझे अपने वतन ननिहाल आरा आना पड़ा।

वफ़ा साहब ने ही मुझे हफ़ीज़ बनारसी साहब से शे'रो-शाइरी के फ़न सीखने का

मशविरा दिया।

महाराजा कॉलेज, आरा के अंग्रेज़ी विभाग में उनसे मिला और अपनी बात कही। घर पर तशरीफ़ लाने का इशारा हुआ। घर पर मिला तो पूछा मैं करता क्या हूँ। जब ये मालूम हुआ कि मेरे हौसलों के पाँव बेरोज़गारी की सुलगती धूप में सरगर्मे-सफ़र हैं तो इज़्हारे-मसर्रत के बजाय उन्होंने मश्विरा दिया कि शाइरी के लिए एक उम्र पड़ी है। पहले ग़मे-रोज़गार का मुदावा करें। फिर आयें। मैंने आई.ए.एस.की तैयारी शुरू की। उर्दू सीखना जारी रक्खा। अदीब का इम्तहान भी पास किया। अम्मानी नदवी मरहूम से उर्दू के मुश्किल अल्फ़ाज़ लिखना पढ़ना सीखा। प्रोफ़ेसर तल्हा रिज़्वी 'बर्क़', मरहूम अनीस इमाम और मरहूम अल्लामा क़तील दानापुरी की सोहबत से फ़ैज़याब हुआ। हफ़ीज़ बनारसी साहब ने मुझे शागिर्दी का लुत्फ़ उठाने की इजाज़त दी। आरा के हल्क़ा-ए-अहबाब के एक मुशायरे में मेरा तआ'रुफ़ कराते हुए उन्होंने कहा कि "मैं पहले असीरे-ज़ुल्फ़े-बंगाल था लेकिन अब गिरफ़्तारे-गेसू-ए-बिहार हूँ।" फिर तो मैं आरा के तमाम मुशायरों की ज़ीनत बनने लगा। इदारा-ए-अदबे-नौ की तशकील में मैं भी शामिल रहा। नया लबो-लहजा इख़्तियार करने के बायस मैं 'कँवल' शाहाबादी से रमेश प्रसाद 'कँवल' बन गया। दौरे-हाज़िर की जदीदियत के उसूलों ने नाम छोटा करने की सिफ़ारिश की और रफ़्ता-रफ़्ता मै सिर्फ़ रमेश 'कँवल' रह गया।

उस्ताद की नसीहतें और उनकी दुआओं के ज़ेरे-असर मेरा इन्तख़ाब डिप्टी कलेक्टर में हो गया। ग़मे-रोज़गार तो दूर हुआ लेकिन मैं भी उस्ताद की नज़रों से दूर चला गया। whatsapp तो उस समय था नहीं। राब्ता टूट गया। शाइरी ने भी दामन छुड़ा लिया। क़रीब 14-15 साल बाद मनाज़िर आशिक़ हरगान्वी के तुफ़ैल अदबी फ़िज़ा मयस्सर हुई। लेकिन मसरुफ़ियत की धूप ने उस्ताद की रहमतों के साये से मुझे दूर ही रक्खा।

साल 2008 में उस्ताद का इन्तक़ाल हो गया। मैं अदबी सरगर्मियों से वाबस्ता नहीं रह सका। उनके दामाद उबैदुर रहमान उनकी सोहबतों से इस्तफ़ादा करते रहे। लेकिन वे भी बहुत दिनों तक हयात में नहीं रह सके।

2013 में मैं जॉइन्ट सेक्रेटरी के ओहदे से सुबकदोश हुआ। उसके 5 साल बाद तक उस्ताद के नाम से कोई अदबी सरगर्मी नहीं देख, साल 2018 की 26 जनवरी को मैंने बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी : मरकज़े-रंगे-हुनर की तशकील की। इस बज़्म (संस्था) ने दिनांक 8 अप्रैल 2018 को बिहार उर्दू अकादमी के सभागार में तरही मुशायरा, दिनांक 29 जुलाई 2018 को बासा (बिहार प्रशासनिक सेवा संघ) भवन में विभिन्न फ़नकारों द्वारा शामे-ग़ज़ल का इनअक़ाद (आयोजन), 22 दिसम्बर 2018 को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मलेन, पटना के सभागार में पर्यावरण के संरक्षण

और प्रदूषण के नियंत्रण के प्रति जनमानस को जागरुक करने हेतु शानदार मुशायरा सह कवि सम्मलेन का आयोजन, 16 जून, 2019 को 'हफ़ीज़' बनारसी की 11 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर ज़िन्दगी, मुहब्बत और मयख़ाना पर उनके अश्आर और तरन्नुम में उनकी ग़ज़लें पेश करने के अलावा एक तरही मुशायरा का आयोजन और पटना पुस्तक-मेला में दिनांक 16 नवम्बर, 2019 को एक मुशायरा सह कवि सम्मलेन का आयोजन कर अपनी सक्रियता और उनकी यादों को विस्मृत न करने के संकल्प का प्रदर्शन किया है।

इन सभी अदबी तक़रीबों में जो भी ग़ज़ल या नज़्म पढ़े गये हैं उन्हें एक किताब की शक्ल देने का इरादा हुआ। नाम दिया 'अक़ीदत के फूल'। ये फूल पटना, बिहार और बाहर के शाइरों और शाइरात की ख़िराजे-अक़ीदत की शक्ल में आपके दस्ते-मुबारक में पेश करते हुए बेइन्तहा मसर्रत का एहसास हो रहा है।

मोहतरम जनाब वफ़ा सिकंदरपुरी और मरहूम हफ़ीज़ बनारसी साहब ने मेरी ज़िन्दगी और मेरी शाइरी को बेहद मुतास्सिर किया है। मैं उनकी पुरख़ुलूस सोहबतों, मुहब्बतों और इनायतों का बेहद ममनून हूँ। उनको मुसल्सल याद करते रहने के सिवा उनकी शागिर्दी का फ़र्ज़ अदा करना मुमकिन भी नहीं। लिहाज़ा आपसे गुज़ारिश है कि आप मेरी काविशों की कामयाबी के लिए दुआ करें।

अक़ीदत का फूल कैसा रहा। आपकी गिराँ क़द्र राय जानने के लिए बेसब्री से मुन्तज़र हूँ।

पटना

दिनांक

12 दिसम्बर, 2019

नियाज़मंद

रमेश 'कँवल'

चेयर पर्सन

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी,पटना

मोबाइल : 878 976 1287

ईमेल :

bazmehafeezbanarasipatna@gmail.com

और / या

rameshkanwal78@gmail.com

अक़ीदत के फूल : डॉ. (प्रो.) तल्हा रिज़्वी 'बर्क़'

उर्दू शे'रो-अदब का ज़िक्र हो तो देहली और लखनऊ की तरह बिहार और उत्तर प्रदेश का नाम एक साथ आता है। यही इलाक़े उर्दू शाइरी के फ़रोग़ में अपना जवाब नहीं रखते। शुमाली[1] हिन्द के इन्हीं मराकज़े-उर्दू[2] को ज़हन में रखते हुए ग़ालिब-ओ-ज़ौक़ और आतिश-ओ-अमीर की तरह कुछ नाम ऐसे अन्दाज़ से एक साथ लिए जाते हैं मसलन जोश-ओ-फ़िराक़, जिगर मुरादाबादी, असग़र गोंडवी, अल्लामा जमील मज़हरी, कलीम आजिज़, हफ़ीज़ बनारसी-ओ-सुल्तान अख़्तर।

चमनज़ारे-शाइरी[3] के ये फूल अपनी दिलकशी और ख़ुश-निकहती में बेमिसाल हैं यानी हर गुले रंगो-बू-ए-दीगर अस्त

जनाब अब्दुल हफ़ीज़ 'हफ़ीज़' बनारसी पैदा हुए उत्तर प्रदेश के शहरे-बनारस में मगर आला तालीम से आरास्ता होकर सूबा-ए-बिहार के तारीख़ी शहर आरा में अंग्रेज़ी अदब के प्रोफ़ेसर बहाल हुए। महाराजा कॉलेज, आरा के शोअबा-ए-अंग्रेज़ी में अपनी उम्रे-अज़ीज़ के तक़रीबन 40 साल एक कामयाब मुदर्रिस[4] की हैसियत से गुज़ार कर सुबकदोश[5] हुए। हफ़ीज़ बनारसी को उर्दू शाइरी पर ख़ास मलका[6] हासिल था। वे एक फ़ितरी और ख़ुशगो शाइर थे। अपनी वतनी नज़्मों और शे'रियत-ओ-तग़ज़्ज़ुल से भरपूर ग़ज़लों के लिए आलमी शोहरत[7] के मालिक हुए। क़ुदरत ने आवाज़ में ऐसी सहर-तराज़ी[8] और दिलकश नग़मगी अता की थी जो उन्हीं से मख़सूस थी। मुशायरों के तो वे बेताज बादशाह थे। उनके दसियों शे'री मजमूए शाया होकर ख़िराजे-अक़ीदत हासिल कर चुके हैं।

जनाब हफ़ीज़ बनारसी मरहूम के शागिर्दों और दिल्दादगान की कमी नहीं। आरा में उनके बहुतेरे शागिर्द हुए जिनमें जनाब रमेश प्रसाद 'कँवल' का नामे-नामी सरे- फेहरिस्त है। ये अपने उस्ताद के आशिक़ सादिक़[9] ठहरे। उस्ताद के महाराजा कॉलेज आरा से सुबकदोश होने के बाद भी वे उनसे बंधे रहे।

2008 में हफ़ीज़ साहब के इंतक़ाल के बाद आप ने पटना में "बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी : मरकज़े-रंगे–हुनर" के नाम से एक अंजुमन की बुनियाद डाली जिसके तहत यादगारी सेमिनार, मज़ाकिरे और मुशायरे मुनअक़ीद होते रहे और ये सिलसिला मुस्तक़लन दराज़ है।

1. उत्तरी, 2. उर्दू के केंद्र, 3. शाइरी के बगीचे, 4. शिक्षक, 5. सेवानिवृत्त, 6. स्वामित्व (कमांड), 7. वैश्विक प्रसिद्धि, 8. जादूगरी, 9. सच्चा

फ़िल वक़्त मेरे पेशे-नज़र है ख़ूबसूरत मुजल्ला[1] "अक़ीदत के फूल" जिसे रमेश 'कँवल' साहब ने अक़ीदतो-मुहब्बत का एक हसीन गुलदस्ता बनाकर पेश किया गया है। इसमें हफ़ीज़ साहब से अक़ीदत[2] रखने वालों के मुख़्तसर मज़ामीन और तास्सुरात शामिल हैं। मेरे दोस्त रमेश जी ने देवनागरी तहरीर में ये दिलचस्प 'संकलन और प्रस्तुति' तरतीब दी है जिसे हम अपनी गंगा-जमुनी तहज़ीब का रौशन आइना कह सकते हैं। इसके आग़ाज़ में ही रमेश 'कँवल' साहब ने "बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी : मरकज़े-रंगे-हुनर" का तआ'रुफ़ लिखा है और इसके नेक मक़ासद[3] पर वाज़ेह[4] रौशनी डाली है।

ये मुजल्ला हक़ीक़तन हफ़ीज़ बनारसी मरहूम की हयात और शाइरी से मुताल्लिक़ बुनियादी मालूमात का खज़ाना है। उनकी रंगारंग शख़्सियत के ताबिंदा औसाफ़ यकजा कर दिए गये हैं। उनसे मुताल्लिक़ रिसर्च करने वालों के लिए ये एक अहम मआविन होगा। इसके हर बाब की तरतीब-ओ-तद्वीन[5] में रमेश 'कँवल' के सलीक़ा और हुनरमंदी की तजल्ली[6] है।

उस्ताद से सच्ची मुहब्बत और दिली इरादत की ऐसी मुँह बोलती तस्वीर कम मिलेगी। ये एक मुबारक और मुफ़ीद[7] अक़दाम[8] है। मैं तहे-दिल से दुआ करता हूँ कि रब उन्हें तवील उम्र अता करे, उन्हें सेहतमंद रखे और उनकी सरपरस्ती में "बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी : मरकज़े-रंगे-हुनर" की रंगीनियाँ तादेर उजाला फैलाती रहें।

आमीन !

मैं हफ़ीज़ बनारसी मरहूम के इस आफ़ाक़ी शे'र पर अपनी बात ख़त्म करता हूँ :

बहुत क़लील[9] है ये फ़ुर्सते-हयात 'हफ़ीज़'
जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ

शाहटोली,
11 फ़रवरी, 2020

डॉ.(.प्रो.) तल्हा रिज़्वी 'बर्क़'

1. किताब, 2. श्रद्धा, 3. उद्देश्यों, 4. स्पष्ट, 5. चयन क्रम और संकलन, 6. आभा/चमक, 7. फायदेमंद, 8. क़दम, 9. संक्षिप्त

बज़्मे-'हफ़ीज़' बनारसी
की
स्थापना (तशकील) और मक़सद

गणतंत्र दिवस (यौमे-जम्हूरियत) 2018 के पावन अवसर पर राजकीय उर्दू लाइब्रेरी, पटना में एक मुशायरा आयोजित हुआ जिसमें जनाब रमेश 'कँवल' ने बज़्मे-'हफ़ीज़' बनारसी : मरकज़े-रंगे-हुनर की तशकील का ऐलान किया। जनाब रमेश 'कँवल' जो 'हफ़ीज़' बनारसी मरहूम के शागिर्दे-ख़ास रहे हैं और बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तरीय पद से अगस्त 2013 में रिटायर हुए हैं ने 8 अप्रैल 2018 को बिहार उर्दू अकादमी के सेमीनार हॉल में इस बज़्म का पहला इजलास लगाने का पुर मसर्रत ऐलान किया और इसके मक़ासद बताये।

मक़ासद :

- उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी मरहूम की यादों को संजोना, उन पर लिखे हुए हर तहरीर, तास्सुरात, मक़ाला इत्यादि को डिजिटल फॉर्म में महफूज़ रखना
- हफ़ीज़ बनारसी लाइब्रेरी (डिजिटल लाइब्रेरी के साथ) शुरू करना
- वक़्त-वक़्त पर ग़ज़ल पर सेमिनार, परिचर्चा, मुशायरा कराना
- योमे-पैदाइश और यौम-ए-वफ़ात[1] के मौक़े पर हफ़ीज़ बनारसी एजाज़[2] से चुनिन्दा शायरों को नवाज़ना
- ग़ज़ल से मुन्सलिक़ दस्तावेजों, मजमुआ-ए-कलाम वग़ैरह शाया करवाना, वेबसाइट शुरू करना, इन्टरनेट पर अपलोड करना, महफूज़ रखना, वग़ैरह
- ग़ैर उर्दू-दाँ लोगों के बीच उर्दू से पोशीदा[3] मुहब्बत के जुनून को फ़रोग[4] देना
- देवनागरी रस्मुल-ख़त में उर्दू शायरी और उसके बेहतरीन शायरों पर अदब मुहैया कराना
- बिहार सरकार और मुल्क़ के मुख़्तलिफ़ उर्दू अकादमियों से उनकी योमे-पैदाइश और यौमे-वफ़ात मनाने की गुज़ारिश करना

रमेश कँवल,

चेयर पर्सन, बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी

1. पुण्यतिथि, 2. सम्मान, 3. छुपे हुए, 4. बढ़ावा देना

बज़्मे-'हफ़ीज़' बनारसी के सरपरस्त, ओहदेदार और मेम्बरान

बज़्मे-हफीज़ बनारसी, मरकज़े-रंगे-हुनर, पटना के संरक्षक, आजीवन और वार्षिक सदस्य

नाम	पद	मोबाइल
श्री रमेश 'कँवल'	चेयर पर्सन	878 976 1287
डॉ. अख़्तर मसूद	जनरल सेक्रेटरी	884 014 3224
श्री परवेज़ आलम	ऑर्गनाइज़िंग सेक्रेटरी	790 354 5822
जनाब ख़ुर्शीद अकबर	सरपरस्त	767 726 6932
डॉ. एहसान हैदर शाम	आजीवन सदस्य	933 487 5071
श्रीमती नन्दनी प्रनय	वार्षिक सदस्य	834 010 7009
डॉ. अब्दुल क़ादिर हफ़ीज़	तथैव	989 102 5825
प्रो. श्रीमती सुधा सिन्हा	तथैव	840 994 0929
श्रीमती पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'	तथैव	834 048 4896
मो. नसीम अख़्तर	तथैव	950 460 4986
सैयद परवेज़ आलम,बि.प्र.से.	तथैव	943 118 5717
डॉ. मो. अरमान	तथैव	993 144 1623
श्रीमती निकहत आरा	तथैव	882 530 1480
श्रीमती आराधना प्रसाद	तथैव	725 060 6100
श्री शुभ चन्द्र सिन्हा	तथैव	943 055 9673
डॉ. शँकर प्रसाद	तथैव	834 057 0376
सुश्री शाज़िया नाज़	तथैव	887 352 3989
मोहतरमा ज़ीनत शैख़	तथैव	898 730 5786
श्रीमती तलअत परवीन	तथैव	930 879 1610
श्री सुनील कुमार	तथैव	943 100 3980
कुमारी स्मृति कुमकुम	तथैव	727 402 6917
श्रीमती मासूमा ख़ातून	तथैव	730 151 5902
श्री मुनीब मुज़फ़्फ़रपुरी	तथैव	735 247 4167
श्रीमती मीना कुमारी परिहार	तथैव	707 080 0416

डॉ. शालिनी पाण्डेय	तथैव	920 444 6006
जनाब ज़फ़र महमूद हफ़ीज़	तथैव	966 50 801 7263

(सऊदी अरब)

जो लोग रिटायर्ड हैं, हफ़ीज़ बनारसी मरहूम की यादों से मुहब्बत रखते हैं, इस बज़्म के लिए बिना परेशानी माली तआ'वुन (आर्थिक सहयोग) करने की ख़्वाहिश रखते हैं और बज़्म का मक़सद हासिल करने के लिए वक़्त दे सकते हैं उन्हें बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी का सरपरस्त/लाइफ़ मेम्बर बनाने में तरजीह दी जाएगी।

जो शायर, अदीब और अदब नवाज़ हैं ; जो बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी के मक़ासद हासिल करने में शामिल होना चाहते हैं वे भी इस बज़्म के मेम्बर बन सकते हैं।

जो नौजवान उर्दू से बेपनाह मुहब्बत करते हैं ; जो टॅकनोलॉजी के जानकार हैं और वेबसाइट, सोशल मीडिया पर बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी के मक़सद को एक मिशन की तरह कामयाब करने में साथ देना चाहते हैं वे भी इस बज़्म के मेम्बर बन सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता (सालाना मेम्बरशिप)	**रु.500/- पाँच सौ रुपये मात्र**
आजीवन सदस्यता (लाइफ़ मेम्बरशिप)	**रु.5000/- पाँच हज़ार रुपये मात्र**
संरक्षक (PATRON सरपरस्त)	**रु.10000/- दस हज़ार रुपये मात्र**

आप सदस्यता शुल्क **709 159 6715** पर paytm से डिजिटल पेमेंट कर सकते है :

रमेश 'कँवल'
चेयरपर्सन
बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी,पटना
इ-मेल bazmehafeezbanarasipatna@gmail.com या
rameshkanwal78@gmail.com

हफ़ीज़ बनारसी : एक परिचय

नाम	: मोहम्मद अब्दुल हफ़ीज़
उपनाम/तख़ल्लुस	: हफ़ीज़
अवतरण (जन्म तिथि)	: 20 मई 1933
अवतरण स्थल (जन्म स्थान)	: मदनपुरा, बनारस
अवसान (मृत्यु)	: सोमवार, 16 जून 2008 सुब्ह 7 बजे
अवसान स्थल	: मुहल्ला बाज़ार सदानंद, मदनपुरा, बनारस
शरीक-ए-हयात	: श्रीमती सालेहा ख़ातून

संतान (औलाद) :

नाम	: डॉ. अख़्तर मसूद
प्रोफ़ेशन	: चिकित्सा
शौक़	: शायरी, अफ़सानानिगारी, समाज सेवा
शरीक-ए-ज़िन्दगी	: मोहतरमा डॉ. अतिया (बानो) मसूद
प्रोफ़ेशन	: चिकित्सक

नाम	: ज़फ़र महमूद ज़फ़र
प्रोफ़ेशन	: सीनियर टॅकनिकल ऑफिसर, ग्रीन क्रेसेंट हॉस्पिटल, रियाद, सऊदी अरब
शौक़	: शायरी
शरीक-ए-ज़िन्दगी	: मोहतरमा रिज़वाना नसरीन
प्रोफ़ेशन	: टीचर

नाम	: डॉ.अब्दुल रहमान
प्रोफ़ेशन	: चिकित्सक, बनारस
शरीक-ए-ज़िन्दगी	: मोहतरमा फ़ातिमा नाहीद
प्रोफ़ेशन	: शिक्षक

नाम : डॉ.अब्दुल क़ादिर
प्रोफ़ेशन : सहायक प्रोफ़ेसर, मानव संसाधन विभाग, जयपुरिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, नॉएडा
शरीक-ए-ज़िन्दगी : मोहतरमा सना अफ़ज़ाल, एम.बी.ए.
प्रोफ़ेशन : Nutritionist

नाम : मोहतरमा सहला यास्मीन,एम.ए, गृहणी (बेटी)
पति : स्व. डॉ. उबैदुर रहमान
प्रोफ़ेशन : वैज्ञानिक, शायर, अदीब
(इंडियन फार्मिंग, कृषि महाविद्यालय, पूसा से सम्बद्ध)

नाम : डॉ. साजिदा सानी बेटी
प्रोफ़ेशन : चिकित्सक, इलाहबाद
पति : डॉ. नूरुद्दीन
प्रोफ़ेशन : चिकित्सक

अदबी ख़िदमात :

गुलदस्ते-दुआ : 1968
दरख़्शाँ (ग़ज़लें, नज़्में, क़तआत) : 1969
बादा-ए-इरफ़ाँ (हम्दो-नातिया कलाम) : 1974
क़ौलो-क़सम (क़ौमी और वतनी नज़्में) : 1975
बन्दा-ए-मोमिन : 1981
ग़ज़ालाँ (ग़ज़लें) : 1984
क़सीदा-ए-नबी-ए-रहमत : 1993
जलवा-ए-इमाँ (हम्दो-नातिया कलाम) : ज़ेरे-तरतीब
फ़रमान-ए-मुस्तफ़ा (अहादीसे-नबी का रुबाइयात में तर्जुमा) ज़ेरे-तरतीब

संकलन : रमेश 'कँवल'

आधुनिकता को परंपरा का लिबास पहनाने वाला शाइर हफ़ीज़ बनारसी

20 मई (1933) को अवतरण (जन्म दिवस) पर विशेष प्रस्तुति

अंग्रेज़ी का ज्ञान बाँटने वाले उर्दू के बेहतरीन शायरों का जब ज़िक्र होता है तो पँ. रघुपति सहाय 'फ़िराक' गोरखपुरी के बाद मोहम्मद हफ़ीज़ बनारसी का नाम बड़े ही मान-सम्मान के साथ लिया जाता है। आपका जन्म गंगा के रमणीक तट पर बसे हिन्दुओं के पवित्र शहर बनारस के मदनपुरा मुहल्ले में 20 मई 1933 को एक मशग़ाली परिवार में हुआ था। आपके यहाँ बनारसी साड़ियों और कपड़ों का कारोबार बड़े पैमाने पर होता था। लेकिन आपके घर और मुहल्ले का माहौल दीनी और मज़हबी था। हाजी अब्दुल अज़ीज़ के बेटे अलहाज कारी अब्दुल क़यूम के चौथे बेटे के रूप में अब्दुल हफ़ीज़ का जन्म हुआ। अपने वालिद के दीनी और धार्मिक संस्कारों की छाप हफ़ीज़ पर बचपन के 12 वर्षों (पिता के स्वर्गवास) तक निरंतर पड़ती रही। उनके घर पर आज़ादी की लड़ाई से जुड़े लोगों का गोपनीय जमावड़ा लगता रहता था जिससे वे देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत होते रहे। देश और देश प्रेम का जोश और उन्माद उनकी देशभक्ति की रचनाओं के संकलन क़ौलो-क़सम में उजागर होता है।

आपकी रूचि शुरू से ही मशग़ाला में कम शिक्षा में ज़्यादा थी। जामिया इस्लामिया और मदरसा रहमानिया से उर्दू और फ़ारसी की बुनियादी तालीम के बाद आपने जय नारायण स्कूल, बनारस, यू.पी.बोर्ड से हाई स्कूल (1949), गवर्नमेंट क्वीन्स कॉलेज से आई.ए. (अरबी के साथ), बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से बी.ए. (1953), अंग्रेज़ी में एम.ए. (1955) और बी.एड.(1956) की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर कुछ दिनों के लिए मुस्लिम कॉलेज, मऊ नाथ भंजन और अगस्त 1957 में महाराजा कॉलेज, आरा में लेक्चरर बन गये। आरा ही उनका वतन-ए-सानी रहा जहाँ से वे वर्ष 1995 में अंग्रेज़ी के विभागाध्यक्ष की हैसियत से सेवा निवृत हुए। सेवानिवृति के बाद वे बनारस में रहने लगे जहाँ 16 जून 2008 को चलते-फिरते उनका निधन हुआ।

विद्यार्थी जीवन से ही उनकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगीं। रोज़नामा क़ौमी आवाज़, लखनऊ, रोज़नामा अलजामिया, दिल्ली, रियासत देहली (सम्पादक : दीवान सिंह मफ़तून), माहनामा कारवाँ

(सम्पादक : प्रो. एजाज़ हुसैन, अध्यक्ष उर्दू विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी) में वे प्रकाशित होते रहे।

1953 में आजकल (सम्पादक : शब्बीर हसन जोश मलीहाबादी) के शेरो-शायरी अंक में, जिसमें हिंदुस्तान की 14 भाषाओं की चुनिन्दा रचनाएँ शामिल थीं, हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़ल प्रकाशित हुई।

देश की आज़ादी के साल जब वे हाई स्कूल के विद्यार्थी थे उन्होंने बज़्मे-अदब, बनारस के मुशायरे में अपनी ग़ज़ल सुनाई थी। फिर तो वे मुशायरों के मक़बूल शायर हो गये। अपनी दिलकश आवाज़ और दिल को छू लेने वाली शायरी की बदौलत उन्हें मुल्क़ के सभी कामयाब मुशायरों में बुलाया जाने लगा। उनकी शोहरत की धूप शारजाह, दुबई, जेद्दा, सऊदी अरब, पाकिस्तान एवम् उर्दू अदब से आशना अन्य मुल्क़ों के मुशायरों तक पहुँच गयी। HMV ने उनकी ग़ज़लों की रिकार्डिंग की। Youtube पर उनके मुशायरों में ग़ज़ल-सरा होने के विडियो आज भी महफ़ूज़ हैं।

आरा उनके लिए वतने-सानी (दूसरा घर) बन चुका था। आरा के अदीबों और अदब-शनास लोगों का ज़िक्र उन्होंने ख़ूबसूरत अन्दाज़ में किया है : नुसरत आरवी, मौलाना मेहदी बुख़ारी, मौलाना अज़ीज़ अहमद वक़ील, मौलाना अब्दुल वहाब आरवी, हज़रत क़तील दानापुरी, शाह फ़ज़ल इमाम वाकिफ़, ग़ुलाम फख़रुद्दीन शाद से उनके मरासिम (सम्बन्ध) थे और इन लोगों ने उन्हें मुतास्सिर (प्रभावित) किया है।

हफ़ीज़ बनारसी के हमउम्र हसन आरज़ू, साबिर आरवी, शोएब राही और ज़हीर नाशाद सुख़नवर रहे। उनसे 3-4 साल पहले धरती पर आने वाले शायरों में मशहूर-ओ-मारुफ़ नाम अलक़मा शिबली, मज़हर इमाम और वहाब दानिश के रहे। नज़ीर बनारसी से उनके बड़े अच्छे मरासिम रहे। अपने शहरे-विलादत और दोस्तों के नाम का ज़िक्र उन्होंने अपनी रचनाओं में यूँ किया है :

परवरदा-ए-फ़िज़ा-ए-बनारस हूँ मैं हफ़ीज़
मेरी ज़बाँ में चाशनी-ए-आबे-गंग है

उसी का नाम बनारस है, शहर काशी है
जहाँ हफ़ीज़ का घर है, नज़ीर रहते हैं

सभी से मिलता है और ख़ुशदिली के साथ यहाँ
अजीब शख़्स हफ़ीज़े-बनारसी है मियाँ

11 जनवरी 1960 को उनकी शादी मोहतरमा सालिहा ख़ातून से हुई। मा'रूफ़ फ़नकार अलीम मसरूर ने उनकी शादी का सेहरा लिखा जिसका ज़िक्र अमृत लाल 'इशरत' ने अपनी प्रमुख शोधपरक पुस्तक 'सिलसिला-ए-मुसहफ़ी के सुख़नवराने-बनारस' में किया है। लीजिये सेहरा का एक बन्द पेश है :

तलब की वुसअते-तमाम आज इक नज़र में है
ख़याल का हसीं समाँ वजूदे-मोतबर में है

मुहब्बत आज ज़िन्दगी की ऐसी रहगुज़र में है
जहाँ ये मन्ज़िले-वफ़ा लिबासे-हमसफ़र में है

रुके तो है बहिश्ते-आरज़ू इसी मक़ाम पर
बढ़े क़दम तो जन्नते-वफ़ा है गाम-गाम पर

हफ़ीज़ बनारसी ने भी अपने पहले मजमुए (काव्य-संकलन) दरख़्शाँ में अपनी जीवन संगिनी के नाम 11 बन्द की नज़्म 'इब्तदा-ए-सफ़र' लिखी है।

हफ़ीज़ बनारसी के उस्ताद जनाब मुस्लिम-उल-हरीरी थे जिनका इंतक़ाल 15 फ़रवरी 1983 को हुआ।

अदबी ख़िदमात :

किताब का नाम	**प्रकाशन का साल**
गुलदस्ता-ए-दुआ	1968
दरख़्शाँ (ग़ज़लें, नज़्में, क़तआत)	1969
बादा-ए-इरफ़ाँ (हम्दो-नात)	1974
क़ौलो-क़सम (क़ौमी और वतनी नज़्में)	1975
बन्दा-ए-मोमिन	1981
ग़ज़ालाँ (ग़ज़लें)	1984
क़सीदा-ए-नबी-ए-रहमत	1993
सफ़ीर-ए-शहर-ए-दिल (ग़ज़लों, नज़्मों का कुल्लियात)	2007

इनाम और सम्मान

दरख़्शाँ पर (बिहार उर्दू अकादमी, पटना का इनाम)	1971
पत्नी और माँ के साथ हज पर	1974
क़ौलो-क़सम पर (उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल उर्दू अकादमी का इनाम)	1975
ऑल इंडिया मीर अकादमी, लखनऊ की तरफ़ से इम्तियाज़-ए-मीर अवार्ड	1981
ग़ज़ालाँ पर (बिहार उर्दू अकादमी, पटना का इनाम)	1986
इंडियन सोशल कल्चरल एण्ड लिटरेचर आर्गेनाईज़ेशन कोलकाता की तरफ़ से। SCLO अवार्ड	1986
मिल्लत सोसाइटी बनारस की तरफ़ से 'शाने-मिल्लत अवार्ड'	1997
बनारस से काशी रत्न अवार्ड	2000
मदर हलीमा फाउण्डेशन बनारस की तरफ़ से 'निगार-ए-बनारस' अवार्ड	2003

हफ़ीज़ के अवार्ड्स

गंगा महोत्सव वाराणसी 1998

इम्तियाज़-ए-मीर अवार्ड 1981

काशी रत्न सम्मान

मदर हलीमा अवार्ड 2003

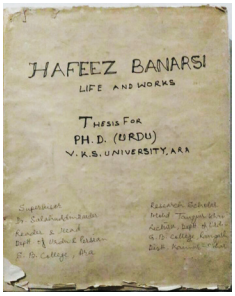

हफ़ीज़ बनारसी पर पी.एच.डी.

सबरंग बुक लौंच सेरेमनी 2007

शान-ए-मिल्लत अवार्ड बनारस

हफ़ीज़ की किताबें

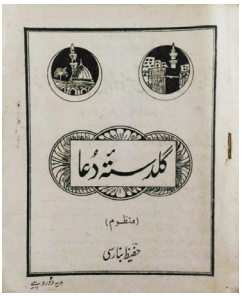

गुलदस्ता-ए-दुआँ

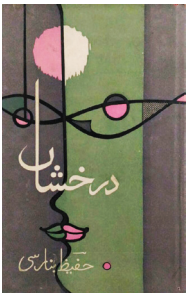

दरख़्शाँ

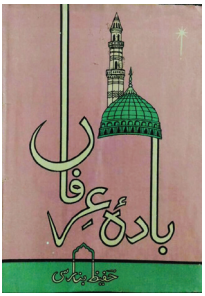

बाद-ए-इरफ़ाँ

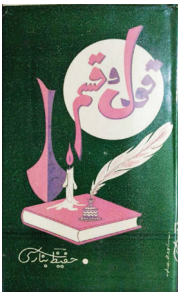

क़ौल-ओ-क़सम

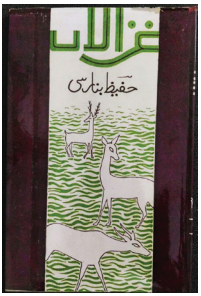

ग़ज़ालाँ

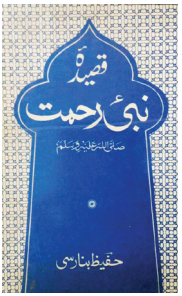

क़सीदा-ए-नबी-ए-रहमत

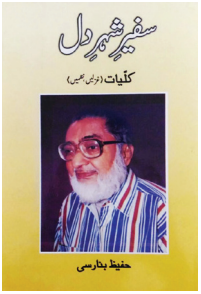

सफ़ीरे-शहरे-दिल

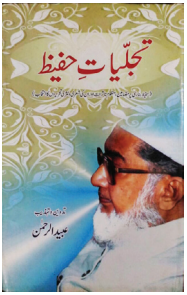

तजल्लियात-ए-हफ़ीज़

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी : मरकज़ –ए-रंग –ए-हुनर

पहला इजलास : रविवार, 08 अप्रैल, 2018

बिहार उर्दू अकादमी,पटना का सभागार

लहराई हुई ज़ुल्फ़े–गिरहगीर तो देखो
दिल क्यों न गिरफ़्तार हो ज़ंजीर तो देखो

फिर शौक़ से कह लेना दिवाना मुझे यारो
पहले मेरे महबूब की तस्वीर तो देखो

ख़िराजे-अक़ीदत का पहला फूल

दिनांक 8 अप्रैल 2018 को बिहार उर्दू अकादमी के सेमिनार हॉल में बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी की पहली महफ़िल सजी जिसमें पहले सत्र में हुए सेमिनार में प्रोफ़ेसर (डॉ.) तल्हा रिज़वी 'बर्क़', श्री मासूम अज़ीज़ काज़मी, आई.पी.एस. (से. नि.), श्री इम्तियाज़ अहमद करीमी, निदेशक राजभाषा उर्दू, मशहूर शायर श्री ख़ुर्शीद अकबर, श्री फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी, डॉ.अख़्तर मसूद, डॉ.आसिफ़ सलीम ने हफ़ीज़ बनारसी की शख़्सियत और शायरी (साहित्य) पर विस्तार से चर्चा की।

दूसरे सत्र में हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों से दी गयी तीन तरहों में विभिन्न शायरों ने अपने कलाम पेश किये। पहली तरह थी : "बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला"

इस तरह में श्री नियाज़ नज़र फ़ातमी, अबरार अकरम, अहमद सिद्दीक़ी, डॉ. शमअ नासमीन नाज़ाँ, श्रीमती शमअ कौसर 'शमअ', श्री नसीम अख़्तर और श्री सलाहुद्दीन अफ़ज़ल ने ग़ज़ल पढ़ी।

दूसरी तरह थी : "जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ"

इस तरह में डॉ. नसर आलम 'नसर', मोहतरमा मासूम ख़ातून, श्री यावर राशिद, श्री एहसान शाम, डॉ.एजाज़ अली अरशद, श्री ग़ुलाम रब्बानी आदिल, श्री शमीम क़ासमी और श्री अब्दुल क़ादिर ने ख़ूबसूरत ग़ज़लें पढ़ीं।

तीसरी तरह : "औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये"

इस तरह में श्री अरुण कुमार आर्य, श्री रमेश 'कँवल', डॉ. आरती कुमारी, श्रीमती आराधना प्रसाद, श्री नियाज़ नादिर, श्री अता-उर-रहमान 'अता', डॉ. अख़्तर मसूद, डॉ. नईम सबा और रहमत अली रहमत ने अपने कलाम पेश किये।

इस प्रकार बनारस को जन्मभूमि लेकिन आरा, बिहार को अपनी कर्म भूमि बनाने वाले 'हफ़ीज़' बनारसी को बिहार उर्दू अकादमी, पटना में बिहार वासियों ने अपनी स्नेहान्जलि भेंट की।

प्रस्तुति : रमेश 'कँवल'

चेयर पर्सन

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना

हफ़ीज़ बनारसी की तीन ग़ज़लों में से पहली ग़ज़ल जिसके मिसरा-ए-तरह "जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ" पर विभिन्न शायरों ने अपने कलाम पेश किये

खिलाओ फूल, बिखेरो हंसी जिधर जाओ
चमन से मिस्ले-नसीमे-सहर[1] गुज़र जाओ

न मिल सकेगा जहाँ में मेरी नज़र का बदल
संवर सको तो इस आईने में संवर जाओ

तुम्हारी चारागरी[2] का जहाँ में शुहरा है
कभी हमारे दिलों के भी ज़ख़्म भर जाओ

हर इक मक़ाम है मौजे-बला[3] के नर्ग़े[4] में
कहाँ पनाह लो, जाओ तो किस के घर जाओ

अजीब हाल है हर सुब्ह लो जनम फिर से
जब आये शाम तो कमरे में अपने मर जाओ

तुम्हारे नाम से मन्सूब[5] मन्ज़िलें होंगीं
ग़ुबार बन के रहे-शौक़[6] में बिखर जाओ

बहुत क़लील[7] है ये फ़ुर्सते-हयात[8] 'हफ़ीज़'
जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ

हफ़ीज़ बनारसी

1. प्रात: समीर की तरह, 2. इलाज, 3. आफ़त की लहर, 4. घेरे, 5. समर्पित, 6. प्रेम पथ, 7. संक्षिप्त, 8. जीवन के आराम की बेला

ना'त पाक

नबी के इश्क़ का तुम नोश जाम कर जाओ
कि अपनी हस्ती का ये अह्तामाम[1] कर जाओ

ज़माना याद करे आशिक़े-नबी से तुम्हें
नबी का ज़िक्र ज़माने में आम कर जाओ

वो जिनका ज़िक्र ख़ुदा ने बुलन्द फ़रमाया
उन्हीं की नज़्र तुम अपना कलाम कर जाओ

मदीने वाले से क़ुरबत का है यही मौक़ा
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

जो चाहते हो लहद[2] में न हो परेशानी
लबों पे दर्दे-मुहम्मद का नाम कर जाओ

ज़माना हुस्न की नज़रों से तुमको देखेगा
रसूले-पाक का ख़ुद को ग़ुलाम कर जाओ

बनामे-अहले-जहाँ[3] तो बहुत सी शाम हुई
नबी की याद में भी एक शाम कर जाओ

जब उनके रोज़ा-ए-अक़दस[4] पे हाजिरी हो नसीब
जबीं झुका के अदब से सलाम कर जाओ

इसी वसीले[5] से बख़्शिश मिलेगी ऐ 'यावर'
नबी की आल[6] पे तुम इख़्त्माम कर जाओ

यावर राशिद

1. प्रबंध, 2. क़ब्र, 3. दुनियावालों के लिए, 4. पवित्र मजार, 5. माध्यम, 6. वंशजों

नाम	: डॉ.(प्रो.) एहसान शाम
जन्मतिथि	: 20 जनवरी 1949
मशग़ला	: सेवानिवृत प्राध्यापक, शेरगोई **अदबी ख़िदमात**
प्रकाशित कृतियाँ	: धूप का सफ़र ; रेत का रसगीत ; रियाज़े-हुनर, मर्सिया, नौहे और सलाम का मजमुआ
सम्पर्क का पता	: फ़्लैट नं. 102, रहमान एन्क्लेव, जी. डी. मिश्र पथ, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी, पटना - 800013
मोबाइल	: 933 487 5071

भुला न पाए कोई ऐसा नाम कर जाओ
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

सकुनो-अम्न की ख़ुशबू बिखेरने के लिए
जो हो सके तो कोई इंतज़ाम कर जाओ

मिली है आज अक़ीदत की शाम क़िस्मत से
ये शाम शायरे-आज़म के नाम कर जाओ

नाम : मो.ऐनुल हक़ ख़ान 'नाशाद' औरंगाबादी
जन्मतिथि : 15 जनवरी,1935
मशग़ला : रेलवे से सेवानिवृत पदाधिकारी
प्रकाशित कृतियाँ : ग़ज़ल संग्रह परवाज़े-सुख़न (उर्दू) 1990, मील का पत्थर (हिन्दी) 1991, लम्हे-लम्हे का सफ़र (उर्दू) 2009, हमसफ़र ग़ज़लें (हिन्दी) 2009, ग़ज़ल कैसे लिखें (हिन्दी) 1997 (संपादित), ज़ख़्मे-सफ़र (उर्दू) 2019
पता : द्वारा वसीम अख़्तर ख़ान इंजीनियर
G - 2 ज़हिया कॉम्प्लेक्स क़ाज़ी नगर,
फुलवारी शरीफ़ पटना
मोबाइल : 980 100 4900

किसी तरह से ज़माने में नाम कर जाओ
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

इसी कमाल से इन्सान सबसे ऊँचा है
दिले-अदू[1] में भी पैदा मुक़ाम कर जाओ

बहुत लिखा गया अब तक है ख़ास की ख़ातिर
ये वक़्त वो है कि ज़िक्रे-अवाम कर जाओ

तुम अपने सर को कटा दो मगर झुकाओ नहीं
दरे-यज़ीद[2] को दारुस-सलाम[3] कर जाओ

अभी भी वक़्त है ये ज़िन्दगी फ़रेब नहीं
अभी भी जीने का कुछ एहतमाम कर जाओ

न मालो-ज़र है न दौलत तो कोई बात नहीं
कलम है हाथ में दुनिया में नाम कर जाओ

अभी भी याद हैं हज़रत 'हफ़ीज़' ऐ 'नाशाद'
उन्हीं की नज़्र ये ताज़ा कलाम कर जाओ

1. शत्रु हृदय, 2. हज़रत इमाम हुसैन को क़त्ल (शहीद) करने वाले (यज़ीद) का दरवाज़ा,
3. शांति निवास / स्वर्ग

नाम	: डॉ. अब्दुल क़ादिर
पैदाइश	: 1 सितम्बर, 1978
मशग़ला	: सहायक प्रोफ़ेसर, जयपुरिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, नॉएडा (HR/OB)
सम्पर्क का पता	: B-28/5A, सनशाइन अपार्टमेंट, प्रथम तल, फ़्लैट नं 202, ठोकर नं 7, शाहीन बाग़, जामिया नगर, नयी दिल्ली
मोबाइल	: 989 102 5825

तुम्हारा नाम ही लेते हैं सब जिधर जाओ
मसीहा हो तो हमारे भी ज़ख़्म भर जाओ

तुम्हारा चाहने वाला तुम्हारा हरजाई
ज़हे-नसीब ये इलज़ाम हमपे धर जाओ

अभी वफ़ा पे कुछ अपनी मुझे है शक, सो तुम
ये दिल सम्भाल के रक्खो अभी ठहर जाओ

चिराग़ माँगते रहने से कुछ नहीं होगा
चिराग़ बन के ज़माने में ख़ुद बिखर जाओ

क़रीब इतना ही रखते कि दिल बहल जाता
ये किसने तुमसे कहा था कि हमपे मर जाओ

फिर आ गयी वही मुश्किल घड़ी विसाल के बाद
फिर आज हुक्म हुआ है "अब अपने घर जाओ"

बहुत से काम हैं दुनिया में लेकिन ऐ 'क़ादिर'
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

नाम : ज़फ़र महमूद
जन्म तिथि : 24 जून 1964
मशग़ला : मेडिकल रिकार्ड्स ऑफ़िसर,
प्रकाशित कृतियाँ : ख़ामोश लब (उर्दू ग़ज़लें)
सम्पर्क का पता : डॉ. अख़्तर मसूद, D- 43/116, बाज़ार सदानन्द, वाराणसी, यू.पी. एवम् ग्रीन क्रेसेंट हॉस्पीटल, बॉक्स: 3096 रियाज- 11471, सऊदी अरबिया
मोबाइल : 00919235890173, 00966508017263

बरंगे-बादे-सबा[1] हर तरफ़ बिखर जाओ
ज़माना रश्क़[2] करे ऐसा काम कर जाओ

ग़मों को यूँ ही मेरे आस-पास रहने दो
हमारी ख़ुशियों को तुम अपने नाम कर जाओ

कुछ ऐसा हो कि ज़माने का हक़ अदा हो जाय
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

अभी न जाओ अभी डूबने का ख़तरा है
चढ़ी हुई है नदी इक ज़रा ठहर जाओ

तुम्हें ज़मीन ने ही आसमाँ बनाया है
तो इस ज़मीन का कुछ एहतराम[3] कर जाओ

सुनाओ गीत मुहब्बत के फिर से महफ़िल में
हमारे ज़हन को फिर से सुरों से भर जाओ

तुम्हें पता है मैं ख़ामोश हूँ तो किसके लिए
ख़मोशियों को मेरी दास्तान कर जाओ

परिंदे शाख़ों पे अब लौटने लगे हैं 'ज़फ़र'
हुई है शाम चलो तुम भी अपने घर जाओ

1. प्रात:समीर की तरह, 2. इर्ष्या, 3. आदर

नाम : एजाज़ अली अरशद
मोबाइल : 933 410 7757

- पूर्व प्रिंसिपल, पटना कॉलेज, पटना
- पूर्व वाईस चांसलर, मौलाना मजहरुल हक़ अरबी और फ़ारसी विश्वविद्यालय, पटना

जो यादगार हो कुछ ऐसा काम कर जाओ
नहीं तो सर को झुकाए हुए गुज़र जाओ

दयारे-इश्क़ का अब तक यही तरीक़ा है
जो चाहते हो कि ज़िन्दा रहो तो मर जाओ

मुझे न देखो कि मैं धूप का मुसाफ़िर हूँ
तुम्हें मिली है अगर छाँव तो ठहर जाओ

नाम : मो. रहमतुल्लाह अली
उर्फ़ मो.रहमत अली
तारीख़ पैदाइश : 30 दिसम्बर, 1951
सम्पर्क का पता : वलीगंज, वार्ड नं 33 आरा, भोजपुर
मोबाइल : 8507606402

सलामती की दुआ दें वो काम कर जाओ
मिलें जो राह में उनको सलाम कर जाओ

है शहर-शहर में नफ़रत की तीरगी फैली
मुहब्बतों की नई धूप आम कर जाओ

शजर[1] हो तुम भी नए दौर की गुलिस्ताँ में
तो शाख़-शाख़ से साया तमाम कर जाओ

तुम्हारी ख़ादिमी[2] पे सौंप देगी सरदारी
ज़माने वालों को अपना ग़ुलाम कर जाओ

अमीरी, ख़ुशतलबी रूह को सुकून कहाँ
मज़ा तो जब है फ़क़ीरी में नाम कर जाओ

हमेशा शहर के चक़्माक़[3] में हो गुम 'रहमत'
ये सब्ज़ गाँव में भी सुब्हो-शाम कर जाओ

1. छोटे पौधे, 2. सेवा, 3. चकाचौंध

नाम	: मो. नसर आलम नसर
जन्मतिथि	: 6 जून 1975
मशग़ला	: चिकित्सकीय परामर्श
प्रकाशित कृतियाँ	: ग़मे-आबदार (प्रकाशन में)
सम्पर्क का पता	: शाही संगी मस्जिद के पास, फुलवारी शरीफ़, पटना
मोबाइल	: 9304459648

जो कर सको तो मेरे घर क़याम कर जाओ
ख़ुलूसो-प्यार से शौक़े-तआम कर जाओ

इबादतों की तरह तुम ये काम कर जाओ
हयात अपनी मुहब्बत के नाम कर जाओ

उसी का ज़िक्र सुब्हो-शाम हो जमाने में
ख़ुदा के ज़िक्र को हर घर में आम कर जाओ

हर एक काम का बदला मिलेगा महशर[1] में
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

फ़ना के बाद भी दुनिया में तुम रहो ज़िन्दा
सफ़र हयात[2] का ऐसे तमाम कर जाओ

मुआलिजों[3] में सुना है तुम्हारा नाम 'नसर'
दवा-ए-दर्दे-दिले ना-तमाम कर जाओ

1. प्रलय, 2. ज़िन्दगी, 3. चिकित्सकों

नाम	: मासूमा ख़ातून
जन्मतिथि	: 12 सितम्बर 1970
मशग़ला	: शिक्षक हाई स्कूल
प्रकाशित कृतियाँ	: कश्मकश (उर्दू में कहानी संग्रह) 2018
सम्पर्क का पता	: तारिणी प्रसाद लेन, छोटी मस्जिद, पटना सिटी, पटना - 800008
मोबाइल	: 7301 515 902/8404 947 006

बड़े ख़ुलूस से ये एह्तमाम कर जाओ
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

ज़माना अब भी उसी दिन के इंतज़ार में है
जो हो सके तो मुहब्बत को आम कर जाओ

तुम्हारे हुस्न ने बेताब कर दिया सबको
कमाल ये है कि जीना हराम कर जाओ

मैं अपने दिल को बिछा दूँगी पाँव के नीचे
तुम अपने दिल को अगर मेरे नाम कर जाओ

यही तो नक़्शे-मुहब्बत की पहली मन्ज़िल है
किसी की आँखों में शब भर क़याम कर जाओ

फिर उसके बाद तुम्हें और कुछ नहीं दरकार
तुम अपनी माँ की दुआ अपने नाम कर जाओ

ख़ुदा की देन है 'मासूमा' तुमको इक बेटा
उसी के नाम पर क़िस्सा तमाम कर जाओ

नाम	: शमअ कौसर 'शमअ'
तारीख पैदाइश	: 05-12-1990
मशग़ला	: इन्स्योरेंस
प्रकाशित कृतियाँ	: जलती है शमअ
सम्पर्क का पता	: फुलवारी शरीफ़, पटना - 801505
मोबाइल	: 9835202493

किसी मुक़ाम पे देखो सलाम कर जाओ
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

ख़ुशी को मेरी अगर चाहो शौक़ से ले लो
ग़मों को अपने मगर मेरे नाम कर जाओ

कहीं फ़साद, बग़ावत न सर उठाये फिर
वतन में अपनी मुहब्बत को आम कर जाओ

नहीं ख़रीद सकोगे मेरी अना को तुम
तो फिर फ़िज़ूल है कहना कि दाम कर जाओ

बहुत हसीन तेरी बज़्मे-शमअ.-आराई
कभी हमारे लिए एक शाम कर जाओ

ख़ुदी न छोड़ो, ग़रीबी में नाम कर जाओ
ये एक जह्दे-मुसल्सल[1] है काम कर जाओ

फ़िज़ा कसीफ़[2] सही जिस्म भी नहीं है सही
इक अज़्म[3] ले के नई सुब्हो-शाम कर जाओ

मता-ए-ज़ीस्त[4] बहुत है क़लील[5] सी यारो
'जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ'

दिलों को जोड़ना अच्छा अमल है, प्यारा अमल
यही है वक़्त उठो और ये काम कर जाओ

हमारा मुल्क़ हमेशा से अम्न का घर है
सकून सबको हो इसका क़याम कर जाओ

कहीं से कोई भी नुक़्सान उसको हो न 'अदील'
जो कर सको तो यही एहतमाम कर जाओ

ग़ुलाम रब्बानी 'अदील'
मोबाइल 930 759 2671

1. सतत संघर्ष, 2 अनावृत, खुला, 3. संकल्प, 4. जीवन धन, 5. संक्षिप्त,थोड़ा

हफ़ीज़ बनारसी की तीन ग़ज़लों में से दूसरी ग़ज़ल जिसके मिसरा-ए-तरह "बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला" पर विभिन्न शायरों ने अपने कलाम पेश किये

लहू की मय बनाई, दिल का पैमाना बना डाला
जिगरदारों ने मक़तल[1] को भी मयख़ाना बना डाला

हमारे जज़्बा-ए-तामीर[2] की कुछ दाद दो यारो
किहमनेबिजलियोंकोशमअ-ए-काशाना[3]बनाडाला

सितम ढ़ाते हो लेकिन लुत्फ़ का एहसास होता है
इसी अन्दाज़ ने दुनिया को दीवाना बना डाला

भरी महफ़िल में हमने बात कर ली थी उन आँखों से
बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला

मेरे ज़ौक़े-परस्तिश[4] की करिश्मा-साज़ियाँ देखो
कभी काबा, कभी काबा को बुतख़ाना बना डाला

शिकायत बिजलियों से है न शिकवा बादे-सरसर[5] से
चमन को ख़ुद चमन वालों ने वीराना बना डाला

चलो अच्छा हुआ दुनिया 'हफ़ीज़' अब दूर है हमसे
मुहब्बत ने हमें दुनिया से बेगाना बना डाला

हफ़ीज़ बनारसी

1. क़त्लखाना, 2. निर्माण की भावना, 3. घर की रौशनी, 4. पूजा करने की अभिरुचि /इच्छा, 5. झंझावात

नाम : नियाज नज़र फातमी
जन्मतिथि : 10 जनवरी 1952
मशग़ला : केनरा बैंक से सेवानिवृत्त
प्रकाशित कृतियाँ : मुमकिनात(ग़ज़ल संग्रह)
सम्पर्क का पता : फ़्लैट 201 अलनूरमैशन हारून नगर
फुलवारी शरीफ़ पटना - 801505
मोबाइल : 977 122 2617

तेरी आमद ने सच, हर ख़्वाब दैरीना[1] बना डाला
हमारी अंजुमन को बज़्मे-ख़ासाना[2] बना डाला

अँधेरों से निकलकर रौशनी मे पाँव रखते ही
दिखाकर आँख तुमने मुझको बेगाना बना डाला

बहुत चालाक है इस दौर का मजनूँ कि चुपके से
सुना है उसने सहरा में ही काशाना बना डाला

किया जब अह्द तुमसे राज़दारी का तो फिर मैंने
ज़ुबाँ कर ली मुक़फ़्फ़ल[3], दिल को तहख़ाना बना डाला

किसी कमसिन ने कल शब बज़्म में पढ़ दी ग़ज़ल मेरी
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला'

शिकस्ता दिल का क्या करते सो इक तरकीब ये सूझी
हर इक टुकड़े से मैंने एक आईना बना डाला

हमें कहने लगे सब लोग दीवाना तो ज़ाहिर है
ज़माने भर को हमने 'नज़्र' दीवाना बना डाला

1. प्राचीन/पुराना, 2. ख़ास महफ़िल, 3. बंद

नाम	: डॉ. शमअ नास्मीन नाज़ाँ
जन्मतिथि	: 5 जनवरी 1978
मशग़ला	: शिक्षण, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हाई स्कूल, आरा,भोजपुर
प्रकाशित कृतियाँ	: बाग़े-ग़ज़ल (ग़ज़ल संग्रह), इज़्हारे-दिल (ग़ज़ल संग्रह)
शीघ्र प्रकाश्य	: बिखरती क़द्रें (कहानी संग्रह)
सम्पर्क का पता	: डॉ. शमअ इन्टरनेशनल अकादमी, रहमत कॉलोनी, ईसा-नगर, फुलवारी शरीफ़, पटना
मोबाइल	: 938 689 4918

अदब ने हमसे रिश्ता सबका याराना बना डाला
हमें इक दूसरे का जाना-पहचाना बना डाला

अदीबों की ये महफ़िल है, ये दिलवालों का मजमा है
यहाँ की रीत ऐसी है कि दीवाना बना डाला

हमेशा से वतन अपना रहा उल्फ़त का गहवारा[1]
सितमगर ने मगर उसको सितमख़ाना बना डाला

न जिनका सर सलामत है, न चेहरा है, न आँखें हैं
जफ़ापेशों ने उनको अपना आईना बना डाला

दिए रौशन हुए अश्कों के पलकों की मुंडेरों पर
नज़र किसकी लगी घर को कि वीराना बना डाला

मिले थे रात हम उनसे हुई थी बात ख़िलवत[2] में
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला'

ज़माना है हमारे जज़्बा-ए-तामीर[3] पे 'नाज़ाँ'
कि तारों को भी हमने शमअ का शाना[4] बना डाला

1. केंद्र, 2. एकांत, 3. सृष्टि भाव, 4. कांधा

नाम	: शमअ कौसर 'शमअ'
तारीख पैदाइश	: 05-12-1990
मशग़ला	: इन्स्योरेंस
प्रकाशित कृतियाँ	: जलती है शमअ
सम्पर्क का पता	: फुलवारी शरीफ़, पटना - 801505
मोबाइल	: 9835202493

तेरी चाहत, तेरी उल्फ़त ने दीवाना बना डाला
इसी के वास्ते दुनिया ने बेगाना बना डाला

हमारा ज़िक्र क्या ग़ैरों की महफ़िल में लगा होने
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला'

जिसे चाहे बना दे तू जिसे चाहे मिटा दे तू
तेरा लुत्फ़-ओ-करम[1] है मुझको फ़रज़ाना[2] बना डाला

करें ग़ैरों का शिकवा क्या यहाँ तो बाग़बाँ ने ख़ुद
गिरा कर बिजलियाँ गुलशन पे वीराना बना डाला

लहू दिल का बहाया है हमारा हौसला देखो
कि हमने ख़ारज़ारों[3] को भी काशाना[4] बना डाला

ये देखा है कि परवाने हैं लाखों 'शमअ' के लेकिन
ये क़िस्मत है हमारी उसने परवाना बना डाला

1. कृपा का आनंद, 2. बुद्धिमान, 3. कंटीले स्थलों, 4. छोटा-सा घर जिसे शीशा आलात से सजाया जाय

नाम	: मो. असरार आलम सैफ़ी
जन्मतिथि	: 16 मई, 1963
मशग़ला	: हाई स्कूल टीचर
प्रकाशित कृतियाँ	: असरारे-हयात (शे'री मजमुआ) प्रकाशनाधीन
सम्पर्क का पता	: 2 स्कूल, कसाप ,ज़िला भोजपुर
मोबाइल	: 860 336 7389

बुजुर्गों की नज़र ने हमको आईना बना डाला
ज़हन भी पारसा, दिल भी शरीफ़ाना बना डाला

मुहब्बत के तक़ाज़े सब निभाये इस तरह हमने
दयारे-ग़ैर को भी कूचे-जानाँना बना डाला

शिकायत आसमाँ से है न शिकवा अहले-दुनिया से
चमन को बाग़बाँ ने ख़ुद ही वीराना बना डाला

अब ऐसे में तड़प कर जान ना देते तो क्या करते
कि मुश्किल में हमें अपनों ने बेगाना बना डाला

हर इक टेबल पे है रिश्वत की क़ायम गर्मबाज़ारी
शरीफ़ों ने अब इसका नाम नज़राना बना डाला

'करीमी', 'काज़मी', 'ख़ुर्शीद', 'अख़्तर', 'बर्क़' ने आकर
'कँवल', 'परवेज़' की महफ़िल को शाहाना बना डाला

हुई थीं कुछ मुलाक़ातें, ख़यालो-ख़्वाब की बातें
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला'

अदा हो शुक्र 'सैफ़ी' किस तरह उसकी इनायत का
कि जिसने शमअ तुमको, हमको परवाना बना डाला

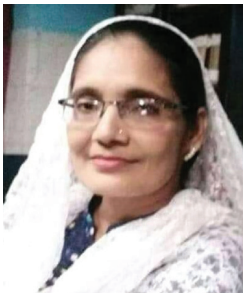

नाम	: तबस्सुम नाज़
जन्मतिथि	: 10 मई 1972
मशग़ला	: गृहणी, 1995 से लेखन
प्रकाशित कृतियाँ	: बू-ए-ग़ज़ल, मुस्कराहट, तनहाइयाँ और दस्तक (उर्दू ग़ज़ल संग्रह)
सम्पर्क का पता	: पुरानी ईमारत-ए-शरिया, फुलवारी शरीफ़, पटना
मोबाइल	: 9162537123 / 7366864351
ई-मेल	: tabassum.naaz11@gmail.com

मैं अपने आप को जब उनका दीवाना बना डाला
मुहब्बत क्या हुई अपनों ने बेगाना बना डाला

मेरे ख़त का जवाब उसने दिया लेकिन ज़रा देखो
सवाले-दिलरुबाई को रक़ीबाना[1] बना डाला

क़लम से मेरे क्यों फूटे नहीं एहसान का नग़मा
ग़ज़ल की गोद को जब मैंने काशाना बना डाला

हमारी इस रविश पर रश्क़ करती है जहाँदारी
फ़क़ीरी में भी अपने दिल को शाहाना बना डाला

मिली जब उनसे मैं, तो बढ़ गयी दिलदार की शोहरत
ज़माने ने भी उनसे कैसा याराना बना डाला

समन्दर ने नहीं पूछा कि ज़र्फे-तश्नगी[2] क्या है
मैं अपने चुल्लुओं को जबसे पैमाना बना डाला

'तबस्सुम' कर लिया था मैंने उनको देख कर इक दिन
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला'

1. प्रतिद्वंदियों-सा, 2. प्यास का दंश

हफ़ीज़ बनारसी की तीन ग़ज़लों में से तीसरी ग़ज़ल जिसके मिसरा-ए- तरह 'औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये' पर विभिन्न शायरों ने अपने कलाम पेश किये

हो जाइयेगा आप भी पत्थर न देखिये
जादूगरों का शहर है मुड़कर न देखिये

लग जाती है ख़ुद अपनी नज़र भी कभी-कभी
हर लम्हा अपने हुस्न का पैकर न देखिये

पत्थर बरस रहे हैं, फ़िज़ा फिर ख़राब है
दरवाज़े बन्द कीजिये, बाहर न देखिये

रौशन ज़मीन पर भी हैं लाखों महो-नजूम[1]
हैं आप दीदावर[2] तो फ़लक पर न देखिये

काँटें भी हैं निगाहे-तवज्जो[4] के मुस्तहक़[5]
गुलशन में रह के सिर्फ़ गुले-तर न देखिये

ये देखिये निगाह से कैसी है नौ-उरूस[6]
क्या अपने साथ लाई है ज़ेवर न देखिये

पैदा नज़र भी कीजिये गर शौक़े-दीद है
औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये

सब ऐतबार ख़ाक में मिल जायेगा 'हफ़ीज़'
किस-किस की आस्तीं में है ख़ँजर न देखिये

हफ़ीज़ बनारसी

1. चाँद सितारे, 2. पारखी / जौहरी, 3. आसमान, 4. ध्यान देने, 5. अधिकारी, 6. दुल्हन

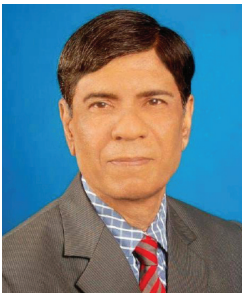

नाम	: अरुण कुमार आर्य
जन्म तिथि	: 16 मई, 1955
मशग़ला	: प्राचार्य (अवकाश प्राप्त)
प्रकाशित कृतियाँ	: एहसास- ग़ज़ल संग्रह (उर्दू)
सम्पर्क का पता	: मुहल्ला इमलीतल, पोस्ट: दानापुर कैंट ज़िला पटना
मोबाइल	: 9431620560

मक़्तल में आप आये हैं ख़ँजर न देखिए
क़ातिल की आँख देखिए, तेवर न देखिए

फिर सुब्ह ले के आयेगी उम्मीद की किरण
सूरज ग़ुरूब[1] होने का मँज़र न देखिए

तक़्दीर का अमल से है रिश्ता जुड़ा हुआ
चुपचाप यूँ ही आप मुक़द्दर न देखिए

गहराइयों में उतरें, जो गौहर[2] की है तलब
बस दूर ही से आप समन्दर न देखिए

रस्ता बनाएँ आबे-रवाँ की तरह जनाब
मन्ज़िल को पाने के लिए रहबर न देखिए

इन्साँ को बाँटिए न सियासत के नाम पर
काशी की ईंट, काबे का पत्थर न देखिए

गर देखनी है उसकी झलक आपको 'अरुण'
अन्दर ही दिल में झाँकिए बाहर न देखिए

1. अस्त, 2. मोती

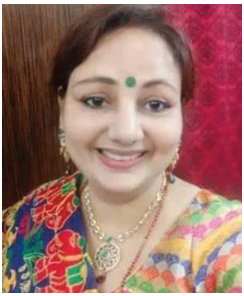

नाम	: आराधना प्रसाद
जन्मतिथि	: 5.11.1974
मशग़ला	: लेखिका (स्वतन्त्र लेखन)
प्रकाशित कृतियाँ	: ग़ज़ल संग्रह आराधना(हिन्दी), सजदा (उर्दू) शीघ्र प्रकाश्य
सम्पर्क का पता	: के - 58, पी. सी. कॉलोनी, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
मोबाइल	: 7250606100

चलना है राहे-हक़ पे तो मुड़कर न देखिये
नेज़े पे लाख़ सर है मगर सर न देखिये

बदली हुई निगाह के तेवर न देखिये
उसकी तरफ़ जनाब पलटकर न देखिये

मेरी नज़र से देखिये मँज़र बहार का
'औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये'

मन्ज़िल को पाना है तो बढ़ें हौसले के साथ
राहों में फूल, काँटे के पत्थर न देखिये

ये एहतियात रखिये कि बस ख़्वाब में मुझे
महसूस कीजिये कभी छूकर न देखिये

इस बज़्मे-शाइरी में कहें शेर क्या पढ़ूँ
मुझ जैसी कमसुख़न में सुख़नवर न देखिये

पहचानिये किसी को भी किरदार देखकर
है किसके पास कितना फ़क़त ज़र न देखिये

नाम : मो. रहमतुल्लाह अली
उर्फ़ मो.रहमत अली
तारीख़ पैदाइश : 30 दिसम्बर, 1951
सम्पर्क का पता : वलीगंज, वार्ड नं 33 आरा, भोजपुर
मोबाइल : 8507606402

अब इस जहाँ की सूरते-दीगर न देखिये
ग़फ़लत में कोई राहे-पयम्बर न देखिये

हो मुनअकिस[1] न अपने ही चेहरे की ख़ामियाँ
इस आइने में अक्स बराबर न देखिये

अपने ही घर की तल्ख़ी-ए-हालत सम्भालिये
क्या हो रहा है ग़ैर के घर-घर न देखिये

उसके बग़ल में एक मकाँ आपका भी है
जलते हुए पड़ोस का मँज़र न देखिये

इस दौर में है बेहिसी ख़ुदग़र्ज़ी हर तरफ़
हर आदमी को दर्द का पैकर न देखिये

रखिये जहाँ में जहदे-मुसल्सल[2] तमाम उम्र
लिक्खा है क्या ये हर्फ़े-मुक़द्दर न देखिये

1. प्रतिविम्बित, 2. सतत संघर्ष

नाम	: डॉ. अख़्तर मसूद
जन्मतिथि	: 2 अप्रैल 1963
मशग़ला	: यूनानी चिकित्सक, साहित्य एवम् समाज सेवा, लाइफ़ मेम्बर, इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी
प्रकाशित कृतियाँ	: कथा संग्रह ; काव्य संग्रह
सम्पर्क का पता	: डी. 43/116, बाज़ार सदानन्द, वाराणसी, यू.पी.
मोबाइल	: 923 589 0173 /884 0143224

कैसा है आसमान का तेवर न देखिये
घर से निकल पड़े हैं तो फिर घर न देखिये

आ जाएगी क़रीब न मन्ज़िल कुछ इस तरह
ये बार-बार मील का पत्थर न देखिये

कीजेगा शाम को उन्हें करना हो गर शुमार
इस वक़्त कितने साथ में हैं सर न देखिये

जाता रहेगा वरना भरम दोस्तों का सब
फेंका है किसने आप पे पत्थर न देखिये

रखिये हमेशा सामने आईना-ए-नज़र
'औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये'

आया है कोई आपके दर पर ये कम है क्या
आया है कौन आपके दर पर न देखिये

आती नहीं है नींद बहुत नर्म हो अगर
सोना हो गर तो फूलों का बिस्तर न देखिये

लिखिये ख़ुद अपनी हाथों से तक़दीर की किताब
लिक्खा है क्या किसी ने ये 'अख़्तर' न देखिये

चेहरे के इश्तिहार को पढ़ कर न देखिये
आँखों में क्यों है ग़म का समन्दर न देखिये

छत पर तुम्हारे आया है क़ुदरत का शाहकार
बैठा है ज़ाग़ या कि कबूतर न देखिये

क़ायद उसी को अपना अभी मान लीजिये
राहों में दूसरा कोई रहबर न देखिये

रूदादे-ग़म सुनाते हैं अपना सुनाइये
होता है क्या असर मेरे दिल पर न देखिये

उल्फ़त के फूल आप उगाते रहें यहाँ
ज़रख़ेज़ है ज़मीन कि बन्जर न देखिये

दौलत है उसके पास सियासी है आदमी
कितने लगे हैं दाग़ ये उस पर न देखिये

आयेंगे काम तेरे बहुत एक दिन 'अता'
मूँगा है या अक़ीक़ ये पत्थर न देखिये

अता-उर-रहमान 'अता', आरा

इक फ़िक्र-ओ आगही[1] का है दफ़्तर न देखिये
महशर[2] बपा है क़ल्ब[3] के अन्दर न देखिये

तादाद मेरे अपनों की हो जाय यूँ न फ़ाश
ज़ख़्मी हमारी पुश्त है, खँजर न देखिये

रुसवा न कर दे आपको ख़्वाबों का सिलसिला
'औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये'

काफ़ी है एक तीर ही दिल की ख़लिश को अब
मुड़-मुड़ के इस ग़रीब को अक्सर न देखिये

'नादिर' चलो तो आपकी मन्ज़िल पे हो निगाह
राहे-सफ़र में कितने हैं पत्थर न देखिये

नियाज़ नादिर

1. चिंता और बुद्धि/ज्ञान, 2. प्रलय, 3. हृदय

नाम	: डॉ आरती कुमारी
जन्मतिथि	: 25 मार्च 1977
मशग़ला	: अध्यापन
प्रकाशित कृतियाँ	: कैसे कह दूँ सब ठीक है (काव्य संग्रह)
सम्पर्क का पता	: शशि भवन, आज़ाद कॉलोनी रोड 3, माड़ीपुर, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार
मोबाइल	: 808 450 5505

पत्थर न देखिये कोई ख़ँजर न देखिये
नफ़रत भरी हो जिनमें वो मँज़र न देखिये

दुश्वारियाँ मिलेंगी हवादिस की शक्ल में
कदमों में कोई ख़ार या पत्थर न देखिए

आँखों में नींद आये न आये तो क्या हुआ
ख़्वाबों के वास्ते कोई बिस्तर न देखिए

निकले हैं गर सफ़र में सऊबत[1] का खौफ़ क्या
अब रास्ते मे कौन है रहबर न देखिए

ये देखिए कि प्यास है होंठों पे किस क़दर
आँखों के दरमियान समन्दर न देखिए

1. तकलीफ़

नाम	: रमेश 'कँवल'
चेयर पर्सन	: बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना मरकज़े-रंगे-हुनर
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: सावन का कँवल, शोहरत की धूप और स्पर्श की चाँदनी (काव्य संग्रह हिन्दी में) लम्स का सूरज और रंगे-हुनर (उर्दू में शे'री मजमुआ)
मशग़ला	: Ex ADM Law & Order, Patna
निवास	: 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8789761287 / 7091596715
Facebook	: Facebook.com/rameshkanwal
Website	: rameshkanwal.com
E-mail	: rameshkanwal78@gmail.com

जो पल गुज़र गये उन्हें मुड़कर न देखिये
सब कुछ है आज, माज़ी[1] के मँज़र न देखिये

बाहर के वाक़्यात को अन्दर न देखिये
और क़ल्बी वारदात को बाहर न देखिये

रखिये बहू को जैसे हो बेटी, दुलारिये
लाई है अपने साथ क्या ज़ेवर न देखिये

अक्सर चटख़ भी जाता है आईना-ए-जमाल[2]
हर लम्हा अपने हुस्न का तेवर न देखिये

गलियों के, शाहराहों के मँज़र तबाह हैं
अपने ही घर सुकून है, बाहर न देखिये

1. अतीत, 2. सौन्दर्य का दर्पण

पहचान अपनी रखिये हिफ़ाज़त से इन दिनों
रहज़न हैं चार सिम्त, पलट कर न देखिये

दरिया था शीरीं[1] ख़्वाबों का आँखों में मौजज़न[2]
कैसा उमड़ पड़ा है समन्दर न देखिये

शोहरत की नर्म ओस पे इतराइये बहुत
बिछने लगी है धूप की चादर न देखिये

एहसास के गुलाब भी कुम्हला गये 'कँवल'
'बर्क़'-ओ-'वफ़ा' 'हफ़ीज़'[3] से शायर न देखिये

1. मधुर, 2. लहराता हुआ, 3. 'कँवल'के उस्तादों के नाम

पहले इजलास 8 अप्रैल 2018 में
शमा रोशन करते हुए
(बाएं से सर्वश्री रमेश 'कँवल',
खुर्शीद अकबर,
इम्तियाज़ अहमद करीमी,
डॉ. (प्रो.) तल्हा रिज़वी बर्क़,
परवेज़ आलम, एम.ए. काज़मी,
और फखरुद्दीन आरफ़ी

डॉ. (प्रो.) तल्हा रिज़वी बर्क़

श्री रमेश 'कँवल',
चेयर पर्सन,बज़्मे-हफ़ीज़
बनारसी,पटना

जनाब खुर्शीद अकबर

प्रथम इजलास में मंचासीन
शख़्सीयतें

डॉ.(प्रो.) तल्हा रिज़वी बर्क़ और
श्री एम.ए. काज़मी, पूर्व आई.पी.एस.

डॉ. अख्तर मसूद (हफ़ीज़ बनारसी
मरहूम के साहबजादे)

आराधना प्रसाद

दर्द को गीत में ढालो कि बहार आई है
मयकशो, जाम उछालो कि बहार आई है

दूसरा इजलास : रविवार, 29 जुलाई, 2018

शामे-ग़ज़ल

स्थान : बिहार प्रशासनिक सेवा संघ भवन, पटना

शिकवा-ए–दर्द ही करते रहे हम लोग 'हफ़ीज़'
दर्द कहता रहा संगीत में ढालो मुझको

ख़िराजे-अक़ीदत
दूसरा इजलास -मौसिक़ी का गुलदस्ता

हफ़ीज़ बनारसी उर्दू शायरी का मशहूर और मा'रूफ़ नाम है। गुज़श्ता अप्रैल महीने में उनके चाहने वालों ने उनकी याद ताज़ा करने के उद्देश्य से एक बज़्म बनाई जिसका नाम दिया "बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी : मरकज़े-रंगे-हुनर"।

बिहार में पहली बार एक शाम हफ़ीज़ बनारसी की यादों के नाम मनाया गया। उनकी सदाबहार ग़ज़लों को बिहार के ख्याति प्राप्त फ़नकारों ने अपनी दिलकश और मखमली आवाज़ के साथ महफ़िले-शामे-ग़ज़ल में पेश किया।

रविवार, दिनांक 29 जुलाई 2018 को शाम 4 बजे बिहार प्रशासनिक सेवा संघ भवन, इनकम टैक्स गोलम्बर, पटना में आयोजित शामे-ग़ज़ल का उद्घाटन उर्दू और फ़ारसी के मशहूर शायर और अदीब प्रो.(डॉ.)तल्हा रिज़वी बर्क़ ने शायराना अन्दाज़ में किया। उन्होंने आरा में उनके साथ गुज़ारे गये 40 साल का तज़्किरा किया और उन्हें बेहतर इन्सान और ज़िन्दादिल शायर बताया। विशिष्ट अतिथि जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी, निदेशक, राजभाषा (उर्दू), बिहार, ने कहा कि हफ़ीज़ बनारसी साहब बहुत बड़े नेक इन्सान और ज़िन्दादिल शायर थे। जल्द ही राजभाषा डायरेक्टरेट हफ़ीज़ बनारसी से मुन्सलिक प्रोग्राम आयोजित करेगी। जनाब मुश्ताक़ अहमद नूरी, सचिव, बिहार उर्दू अकादमी, पटना, ने उर्दू अकादमी से जुड़े यादगार लम्हों पर रौशनी डाली। उन्होंने बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना की काविशों को सलाम करते हुए इसके सदर रमेश 'कँवल' को मुबारकबाद पेश की। उन्होंने कहा कि जब भी रूमानी शायरी का तज़्किरा होगा हफ़ीज़ बनारसी की शायरी के हवाले लाज़िम होंगें।

शामे-ग़ज़ल की सदारत करते हुए श्री सुशील कुमार, अध्यक्ष, बिहार प्रशासनिक सेवा संघ ने बताया कि हमारे प्रशासनिक सेवा में रमेश 'कँवल' और ख़ुर्शीद अकबर जैसे लोगों का होना अत्यन्त ही गौरव की बात है। उन्होंने बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी के सदर रमेश 'कँवल' से इस तरह का एक प्रोग्राम बिहार प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारियों के लिए विशेष रूप से आयोजित करने की गुज़ारिश की। इस मौके पर बिहार प्रशासनिक सेवा के सेवारत और सेवा निवृत अनेक पदाधिकारी सपरिवार शामिल थे। बिहार प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारियों की पत्नियों के संघ (बासवा) की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पलता मोहन और सचिव श्रीमती रेणु सिंह ने बासवा की अनेक सदस्यों के साथ शामे-ग़ज़ल का लुत्फ़

उठाया और ऐसे कार्यक्रम के आयोजन के लिए श्री रमेश 'कँवल' को धन्यवाद दिया। जनाब फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी ने रोचक अन्दाज़ में मंच संचालन किया।

देश और विदेश में अपनी ग़ज़लों के गायन से प्रचुर ख्याति प्राप्त करने वाले डॉ. शँकर सागर (प्रसाद) ने हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों को अपनी मख़मली आवाज़ो-अन्दाज़ में पेश किया। उन्होंने जब गाया :

हज़ारों आफ़तें हैं मेरा सर है
मैं ज़िन्दा हूँ ये मेरा ही जिगर है

तो लोग वाह-वाह कर उठे, फिर उन्होंने सुनाया

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

अब तो ले दे के तुम्हीं एक सहारा हो मेरा
छोड़ के जाओ न यादों के उजालो मुझको

आऊँ नीचे तो सलामत न रहे मेरा वजूद[1]
इतना ऊँचा न मेरे यारो उछालो मुझको

तो लोग सुरूर और मस्ती के जाम छलकाने पर मजबूर हो गये। डॉ. शँकर सागर ने रमेश 'कँवल' के शुरूआती दौर के उस्ताद और मशहूर शायर वफ़ा सिकंदरपुरी की दो ग़ज़लों को अपनी आवाज़ का जादू दिया। लोग शराबोरे-मस्ती में वाह-वाह कर उठे। उन ग़ज़लों के बोल मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

सयाने कैसी हरकत कर रहे हैं
कि दीवाने भी हैरत कर रहे हैं

किराये के हैं तख़्तो-ताज जिनके
वही हम पर हुकूमत कर रहे हैं

1. अस्तित्व

कोई दीवार न दर बाक़ी है
चलते रहिये कि सफ़र बाक़ी है

सबकी पहचान कोई बात नहीं
अपनी पहचान अगर बाक़ी है

उस्तादों की ग़ज़लों का गायन करते-करते डॉ. शँकर प्रसाद उनके शागिर्द रमेश 'कँवल' में भी शे'र कहने के हुनर खोजने लगे। उन्होंने उनकी दो ग़ज़लें पेश की :

जब तेरी बन्दगी नहीं होती
ज़िन्दगी, ज़िन्दगी नहीं होती

उमीदों की बस्ती सजी, तुम न आये
निगाहें रहीं ढूँढ़ती तुम न आये

वफ़ा से 'कँवल' इक ज़माना था बरहम
मगर आह क्या बात थी तुम न आये

डॉ. शँकर सागर ने हफ़ीज़ बनारसी मरहूम के साहबज़ादे ज़फ़र महमूद ज़फ़र की एक ग़ज़ल से लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया

जो अपने लब बहुत कम खोलते हैं
ज़माने में वही सच बोलते हैं

अभी तहज़ीब ज़िंदा है हमारी
अभी हम लोग उर्दू बोलते हैं

डॉ. शँकर सागर के अलावा अरुण कुमार आर्य, शिल्पी मित्रा, आराधना प्रसाद और रौशन कुमारी ने भी शानदार ग़ज़ल गायन किया।

आराधना प्रसाद ने 2 ग़ज़लें गाईं :

दर्द को गीत में ढालो कि बहार आई है
मयकशो जाम उछालो कि बहार आई है

क्या जुर्म हमारा है बता क्यों नहीं देते
मुजरिम हैं अगर हम तो सज़ा क्यों नहीं देते

अरुण कुमार आर्य ने अलग अन्दाज़ में गाया:

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

उन्होंने रमेश 'कँवल' की एक ग़ज़ल भी गाई और ख़ूब दादो-तहसीन बटोरी

ग़म छुपाने में वक़्त लगता है
मुस्कुराने में वक़्त लगता है

रूठ जाने का कोई वक़्त
पर मनाने में वक़्त लगता है

शिल्पी मित्रा ने भी दो ग़ज़लें गाईं

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नई ज़िन्दगी आ गयी

ग़ैर का ज़िक्र था ग़ैर की बात थी
आपकी आँख में क्यूँ नमी आ गयी

कुछ सोच के परवाना महफ़िल में जला होगा
शायद इसी मरने में जीने का मज़ा होगा

कतरा के तो जाते हो दीवाने के रस्ते से
दीवाना लिपट जाए क़दमों से तो क्या होगा

रौशन कुमारी ने गाया

आपकी याद आपका ग़म है
ज़िन्दगी के लिए ये क्या कम है

आज खुल कर न रो सकी शबनम
आज फूलों में ताज़गी कम है

शामे-ग़ज़ल देर तक लोगों में ताज़गी के ट्यूब जलाती रही। सभी ने काफ़ी लुत्फ़ उठाया

प्रस्तुति : **रमेश 'कँवल'**
चेयर पर्सन
बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी,
पटना
rameshkanwal78@gmail.com
Contact : 878 976 1287

फ़नकारों का तआ'रुफ़ और गुलपेशी : रमेश कँवल

फ़नकार : डॉ. शँकर सागर

डॉ. शँकर प्रसाद : डॉ. शँकर प्रसाद अपनी मख़मली आवाज़ के लिए मशहूर हैं। रेडियो में उद्घोषक / एनाउन्सर से कैरियर शुरू किया ; प्रोग्राम एग्ज़ीक्यूटिव बने लेकिन ग़ज़ल की आशनाई ने इस्तीफ़ा दिलवा दिया। पटना यूनिवर्सिटी में अध्यापन किया। 12 वर्षों तक प्रोफ़ेसर साहब बिहार नाटक अकादमी के चेयरमैन रहे। सैकड़ों मंचों पर उदघोषणा, गायन, ग़ज़ल गायन। सोवियत रूस के ताशकन्त, समरकन्द, बुख़ारा, मास्को, लेनिनग्राद इत्यादि अनेक शहरों में अपनी आवाज़ का जादू बिखेरा। 1973 और फिर 14 साल बाद 1987 में मॉरिशस की फेस्टिवल डेला मेर यात्रा। अब हिंदुस्तान में ग़ज़ल गायक के रूप में शोहरत-याफ़्ता। आकाशवाणी और दूरदर्शन के ग्रेडेड कलाकार। संगीत निर्देशक भी। Youtube पर लोकप्रिय। हिन्दी साहित्य सम्मलेन के यशस्वी उपाध्यक्ष। आरोह-अवरोह पत्रिका के सम्पादक। आज की शाम की अधिकांश ग़ज़लों की धुन तैयार की। आज के ख़ास गुलू'कार हैं

हज़ारों आफ़तें हैं मेरा सर है
मैं ज़िन्दा हूँ ये मेरा ही जिगर है

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

शिल्पी मित्रा : गुलपेशी श्रीमती पुष्पलता मोहन, अध्यक्ष बासवा ने की।

आप प्रोफ़ेशनल एंकर, सिंगर, इंस्ट्रूमेंटललिस्ट हैं। आप गोल्डन जुबली ऑफ़ दूरदर्शन की एंकर रही हैं। गिधौर महोत्सव की सिंगर शिल्पी ने वोकल एवम् इंस्ट्रुमेंटल दोनों में प्रथम श्रेणी में संगीत प्रभाकर किया है।

ममता शँकर, पीनाज़ मसानी, निज़ाम बंधू, मोहम्मद अज़ीज़, उदित नारायण, (लेट) सियाराम तिवारी, शँकर घोष, देवी, इंदु सोनाली, छोटू छलिया, अजीत अकेला एवम् अन्य प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ दिल्ली, जयपुर, राँची, जयनगर, यू.पी., मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, लहान एवम् नेपाल में मंच साझा करने वाली पटना की यह

फ़नकार पटना यूनिवर्सिटी से म्यूज़िक में 1st क्लास ऑनर्स हैं। ख़ुशनसीबी का आलम यह कि आप डॉ. शँकर सागर की शागिर्दा हैं। इन्हें हफ़ीज़ बनारसी साहब के दो मतले बेहद अज़ीज़ हैं, मुमकिन है आप इनकी आवाज़ में ग़ज़ल के हुस्न से रूबरू हों :

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नई ज़िन्दगी आ गयी

कुछ सोच के परवाना महफ़िल में जला होगा
शायद इसी मरने में जीने का मज़ा होगा

श्री अरुण कुमार आर्य : गुलपेशी इम्तियाज़ अहमद करीमी

श्री अरुण कुमार आर्य उच्च विद्यालय +2 के प्राचार्य, प्रिंसिपल पद से सेवा निवृत मुख़्लिस इन्सान हैं । आपने पटना विश्वविद्यालय से गणित में एम.एस.सी, एम.एड. किया। प्रयागराज (इलाहबाद) के प्रयाग संगीत समिति से सीनियर डिप्लोमा प्राप्त श्री अरुण कुमार आर्य आकाशवाणी के सुगम संगीत में ख्यातिलब्ध फ़नकार हैं। उर्दू के मशहूर शायर हैं जिनका मजमुआ (ग़ज़ल संग्रह) एहसास के नाम से मँज़रे-आम पर आ चुका है। आकाशवाणी और दूरदर्शन से इनकी शायरी प्रसारित होती रहती है। हिन्दी और उर्दू के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। बिहार एवम् यू.पी. उर्दू अकादमी ने इन्हें सम्मानित कर इनकी हौसला अफज़ाई की है। मेहदी हसन, बेग़म अख़्तर, जगजीत सिंह, ग़ुलाम अली जैसे नामी-गिरामी गुलू'कार इनके आदर्श रहे हैं।

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

को दीगर अन्दाज़ में महफ़िल में पेश करने की ख़्वाहिश रखते हैं।

श्रीमती आराधना प्रसाद : गुलपेशी : श्रीमती रेणु सिंह, सचिव बासवा

श्रीमती आराधना प्रसाद ग़ज़ल और गीत विधा में पारंगत शायरा हैं। वनस्पति विज्ञान में एम.एस.सी. करने वाली आराधना, बैंक अधिकारी की शरीके-ज़िन्दगी हैं। पूसा, बिहार में जन्मी कंकड़बाग, पटना की समाज सेविका आराधना जी देश की ख्याति प्राप्त साहित्यकार हैं जिन्हें लेखन, पठन-पाठन के अलावा नृत्य, संगीत और पाक कला में गहरी रूचि है। अभी तक 9 साझा संकलन में प्रकाशित इस शायरा की पुस्तक "बावरे नैन" शीघ्र आपके हाथों में आने वाली है। दूरदर्शन और आकाशवाणी से हमेशा प्रसारित होने वाली एवम् राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होने वाली विदूषी आराधना को बिहार उर्दू अकादमी, पश्चिम बंगाल उर्दू अकादमी और हिन्दी साहित्य सम्मलेन ने समय-समय पर सम्मानित किया है। आपको बिहार और बिहार से बाहर के कवि सम्मेलनों और मुशायरों में ग़ज़ल के हुस्न का जादू बिखेरने के लिए दावतें दी जाती रहीं हैं। इनके जीवन का उद्देश्य किसी के काम आ सकना, औरों को ख़ुशी दे सकने की कोशिश है। लेकिन संगीत में पारंगत होने की ललक ने इन्हें संगीत गुरू डॉ. शँकर की क़ुर्बत की ख़ुशबू दी। आज की महफ़िल में हफ़ीज़ बनारसी के अन्दाज़े-तकल्लुम और तर्ज़-ए-बयाँ के जादू को इस ख़ुशबू के साथ पेश करने के लिए इनका इन्तख़ाब देखिये :

दर्द को गीत में ढालो कि बहार आई है
मयकशो जाम उछालो कि बहार आई है

क्या जुर्म हमारा है बता क्यों नहीं देते
मुजरिम हैं अगर हम तो सज़ा क्यों नहीं देते

रौशन कुमारी : गुलपेशी : श्रीमती नन्दनी प्रनय

रौशन कुमारी आपके शहर पटना की उभरती हुई फ़नकारा हैं। दूरदर्शन एवम् अन्य चैनलों की कलाकार सुगम-संगीत की गायिका हैं। बिहार कला संस्कृति एवम् युवा विभाग और संगीत नाटक अकादमी की कलाकारा हैं।

आपकी याद आपका ग़म है
ज़िन्दगी के लिए ये क्या कम है

सावन की हसीन शाम : ग़ज़ल की रंगीनियों के नाम :

मौसम को यह बताना है कि सावन आ गया। इस हसीन शाम का आग़ाज़ हम सरस्वती वन्दना से करते हैं, सरस्वती वन्दना करने आ रही हैं : आराधना (प्रसाद)

सरस्वती वन्दना के बाद हम ना'त पेश करने के लिए आवाज़ दे रहे हैं ख़ुशगुलू' शायर क़ाज़िम रज़ा को, ना'त के बाद फिर एक बार आराधना पेश करेंगी एक ख़ूबसूरत ग़ज़ल। अब अपनी ग़ज़ल के साथ क़ाज़िम रज़ा आपसे मुख़ातिब हैं :

अब डॉ. शँकर प्रसाद आपकी समाअतों की महफ़िल में---ग़ज़ल के बोल :

हज़ारों आफ़तें हैं मेरा सर है
मैं ज़िन्दा हूँ ये मेरा ही जिगर है

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

सयाने कैसी हरकत कर रहे हैं
कि दीवाने भी हैरत कर रहे हैं

कोई दीवार न दर बाक़ी है
चलते रहिये कि सफ़र बाक़ी है -वफ़ा सिकंदरपुरी

शिल्पी मित्रा :

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नई ज़िन्दगी आ गयी

कुछ सोच के परवाना महफ़िल में जला होगा
शायद इसी मरने में जीने का मज़ा होगा

अरुण कुमार आर्य :

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

ग़म छुपाने में वक़्त लगता है
मुस्कुराने में वक़्त लगता है -शायर रमेश कँवल

आराधना प्रसाद :

दर्द को गीत में ढालो कि बहार आई है
मयकशो जाम उछालो कि बहार आई है

क्या जुर्म हमारा है बता क्यों नहीं देते
मुजरिम हैं अगर हम तो सज़ा क्यों नहीं देते

रौशन कुमारी :

आपकी याद आपका ग़म है
ज़िन्दगी के लिए ये क्या कम है

डॉ. शँकर प्रसाद :

जब तेरी बन्दगी नहीं होती
ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं होती -रमेश 'कँवल'

उमीदों की बस्ती सजी, तुम न आये
निगाहें रहीं ढूँढ़तीं तुम न आये -रमेश 'कँवल'

जो अपने लब बहुत कम खोलते हैं
ज़माने में वही सच बोलते हैं -ज़फ़र महमूद

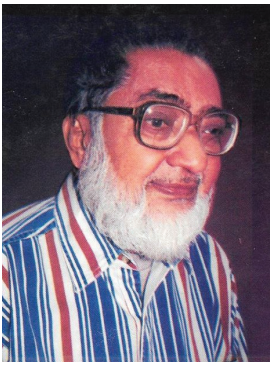

शामे-ग़ज़ल हफ़ीज़ के लिए मुन्तख़ब ग़ज़लें

1

हज़ारों आफ़तें हैं मेरा सर है
मैं ज़िन्दा हूँ ये मेरा ही जिगर है

कहाँ थे मेरे नग़मे इतने शीरीं
तेरे दर्द-ए-मुहब्बत का असर है

ज़माने भर के ग़म में रोने वाले
तुझे कुछ अपने घर की भी खबर है

न पूछो आज सजदों की लताफ़त
मेरा सर है और उनका संगे-दर है

मिले फ़ुर्सत तो सुन लेना किसी दिन
मेरा क़िस्सा निहायत मुख़्तसर है

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 52)

फ़नकार : डॉ. शँकर सागर

2

आपकी याद आपका ग़म है
ज़िन्दगी के लिए ये क्या कम है

इन दिनों कुछ अजीब आलम है
हर नफ़स[1] एक महशरे-ग़म[2] है

आज खुल कर न रो सकी शबनम
आज फूलों में ताज़गी कम है

ज़िन्दगी तो नहीं 'हफ़ीज़' कहीं
अब फ़क़त ज़िन्दगी का मातम है

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 56)

फ़नकार : रौशन कुमारी

1. साँस, 2. कष्ट का प्रलय

3

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नई ज़िन्दगी आ गयी

क्या निज़ामे-चमन है ज़रा देखिये
कोई रोया, किसी को हंसी आ गयी

ग़ैर का ज़िक्र था ग़ैर की बात थी
आपकी आँख में क्यूँ नमी आ गयी

कोई इक दूसरे का शनासा नहीं
हाय किस मोड़ पर ज़िन्दगी आ गयी

या नज़ारों में वो जाज़बीयत नहीं
या हमारी नज़र में कमी आ गयी

चाँद तारे भी हैं महवे-हैरत 'हफ़ीज़'
बढ़ते-बढ़ते कहाँ बन्दगी आ गयी

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 57)

फ़नकार : शिल्पी मित्रा

4

किस के चेहरे पे ग़म की धूल नहीं
कौन इस दौर में मलूल नहीं

जिसने गुलशन को ज़िन्दगी बख़्शी
उसके दामन में कोई फूल नहीं

जिसमें शामिल न हो तुम्हारा ग़म
वो मसर्रत हमें क़बूल नहीं

कोई सैराब हो कोई तरसे
मयक़दे का तो ये उसूल नहीं

संगरेज़ा हो या गुहर हो 'हफ़ीज़'
कोई शय दहर में फ़िज़ूल नहीं

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 68)

फ़नकार - डॉ. शँकर सागर

5

कुछ सोच के परवाना महफ़िल में जला होगा
शायद इसी मरने में जीने का मज़ा होगा

गुमराहे-मुहब्बत हूँ पूछो न मेरी मन्ज़िल
हर नक़्शे-क़दम मेरा मन्ज़िल का पता होगा

कतरा के तो जाते हो दीवाने के रस्ते से
दीवाना लिपट जाए क़दमों से तो क्या होगा

मयख़ाने से मस्जिद तक मिलते हैं नक़ूशे-पा
या शैख़ गये होंगे या रिन्द गया होगा

फ़रज़ानों का क्या कहना हर बात पे लड़ते हैं
दीवाने से दीवाना शायद ही लड़ा होगा

रिन्दों को 'हफ़ीज़' इतना समझा दे कोई जा कर
आपस में लड़ोगे तुम वाइज़ का भला होगा

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 62)

फ़नकार : शिल्पी मित्रा

6

पैग़ाम दिया है कभी पैग़ाम लिया है
आँखों से मुहब्बत में बड़ा काम लिया है

जब ज़िक्र छिड़ा है मेरी बर्बादी-ए-दिल का
दुनिया ने मेरे साथ तेरा नाम लिया है

ये बात अलग है कि ख़ता किससे हुई थी
दीवानों ने सब अपने सर इलज़ाम लिया है

याद आये जो गुज़रे हुए लम्हाते-मुहब्बत
वो चोट पड़ी है कि जिगर थाम लिया है

हर सुब्ह किया तर्के-तअल्लुक़ का इरादा
हर शाम मगर हमने तेरा नाम लिया है

हूँ तिश्ना 'हफ़ीज़' आज तक इस जुर्म के बाइस
साक़ी की नज़र से कभी इक जाम लिया है

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 75)

फ़नकार - डॉ. शँकर सागर और शिल्पी मित्रा

7

दर्द को गीत में ढालो कि बहार आई है
मयकशो जाम उछालो कि बहार आई है

मैं सुनाता हूँ नए गीत नए लहन के साथ
तुम उठो साज़ सम्भालो कि बहार आई है

उनकी मस्ती भरी आँखें भी यही कहती हैं
आतिशे-शौक़ बुझा लो कि बहार आई है

क्या हो कल सुब्ह किसे इसकी ख़बर है यारो
रतजगा आज मना लो कि बहार आई है

उनको रूठे हुए इक उम्र हुई आओ 'हफ़ीज़'
चल के अब उनको मना लो कि बहार आई है

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 80)

फ़नकार : आराधना प्रसाद

8

इधर भी तबाही उधर भी तबाही
कहाँ जाएँ आख़िर मुहब्बत के राही

मेरा इश्क़ क्या है तेरी दिलनवाज़ी
तेरा हुस्न क्या है मेरी ख़ुशनिगाही

तेरी जुस्तजू में कहाँ आ गये हम
न जादा, न मन्ज़िल, न रहबर, न राही

अभी नामुकम्मल है जश्ने-चिराग़ाँ
कहीं रौशनी है कहीं है सियाही

'हफ़ीज़' उनके लब पर है कुछ और लेकिन
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 105)

फ़नकार – रौशन कुमारी

9

गुमराह कह के पहले जो मुझसे ख़फ़ा हुए
आख़िर वो मेरे नक़्शे-क़दम पर फ़िदा हुए

अब तक तो ज़िन्दगी से तआ'रुफ़ न था कोई
तुमसे मिले तो ज़ीस्त से भी आशना हुए

मेरी नज़र ने तुमको जमाल आशना किया
मुझको दुआएँ दो कि तुम इक आईना हुए

सुनता हूँ इक मुक़ामे-ज़ियारत[1] है आजकल
वो ज़िन्दगी का मोड़ जहाँ हम जुदा हुए

क्या होगा इससे बढ़ के कोई रब्ते-बाहमी[2]
मन्ज़िल हमारी वो तो हम उनका पता हुए

कब ज़िन्दगी ने हमको नवाज़ा नहीं 'हफ़ीज़'
कब हमपे बाबे-लुत्फ़-ओ-इनायत[3] न वा[4] हुए

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 99)

फ़नकार – डॉ. शँकर सागर

1. तीर्थस्थल, 2. परस्पर सम्बन्ध, 3. कृपा और आनंद के अध्याय. 4, खुले

10

आस्तीनों में न ख़ँजर रखिये
दिल में जो है वही लब पर रखिये

होंट जलते हैं तो जलने दीजे
अपनी आँखों में समन्दर रखिये

किसको मालूम है कल क्या होगा
आज की बात न कल पर रखिये

जो महो-साल का पाबन्द न हो
कोई ऐसा भी कलेंडर रखिये

हर नज़र संग-बदामाँ[1] है यहाँ
आबगीनों[2] को छुपा कर रखिये

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 292)

फ़नकार : डॉ. शँकर सागर

1. पत्थर बरसाने वाला, 2. शराब की बोतलों

11

रात का नाम सवेरा ही सही
आप कहते हैं तो ऐसा ही सही

क्या बुराई है अगर देख लें हम
ज़िन्दगी एक तमाशा ही सही

क़त्ल कर देगी उसे भी दुनिया
अपने युग का वो मसीहा ही सही

तुम तो मौसम की तरह मत बदलो
अब ज़माने का ये शेवा[1] ही सही

मेरा क़द आपसे ऊँचा है बहुत
मैं 'हफ़ीज़' आपका साया ही सही

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 295)

फ़नकार - रौशन कुमारी

1 आदत

12

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

अब तो ले दे के तुम्हीं एक सहारा हो मेरा
छोड़ के जाओ न यादों के उजालो मुझको

आऊँ नीचे तो सलामत न रहे मेरा वजूद
इतना ऊँचा न मेरे यारो उछालो मुझको

शिकवा-ए-दर्द ही करते रहे हम लोग 'हफ़ीज़'
दर्द कहता रहा संगीत में ढालो मुझको

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 297)

फ़नकार : डॉ. शँकर सागर, श्री अरुण कुमार आर्य

13

क्या जुर्म हमारा है बता क्यों नहीं देते
मुजरिम हैं अगर हम तो सज़ा क्यों नहीं देते

तुमको तो बड़ा नाज़े-मसीहाई था यारो
बीमार है हर शख़्स दवा क्यों नहीं देते

कुछ लोग अभी इश्क़ में गुस्ताख़ बहुत हैं
आदाबे-वफ़ा उनको सिखा क्यों नहीं देते

नग़्मा वही नग़्मा है उतर जाए जो दिल में
दुनिया को 'हफ़ीज़' आप बता क्यों नहीं देते

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 308)

फ़नकार : आराधना प्रसाद

14

उसके होंटों की हंसी अच्छी लगे
अधखिली सी वो कली अच्छी लगे

हमनशीं है जबसे वो जाने-ग़ज़ल
दिन भी अच्छा रात भी अच्छी लगे

लोग तो रंगीनियों पर हैं फ़िदा
मुझको तेरी सादगी अच्छी लगे

उसका प्यार, उसकी वफ़ा, उसके सितम
हर अदा उस शोख़ की अच्छी लगे

ग़ैर के महलों में जी लगता नहीं
अपनी टूटी झोंपड़ी अच्छी लगे

सू-ए-काबा किसलिए जाये 'हफ़ीज़'
जिसको काशी की गली अच्छी लगे

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 315)

फ़नकार : आराधना प्रसाद

15

दिल परेशाँ नज़र है आवारा
किसलिए हर बशर है आवारा

किसकी ज़ुल्फ़ों को छू के आई है
क्यों नसीमे-सहर है आवारा

कुछ तुम्हारा शबाब है चंचल
कुछ हमारी नज़र है आवारा

चाँदनी है ज़मीन पर रक़्साँ
आसमाँ पर क़मर है आवारा

क्या उसे रास्ते पे लाये कोई
फ़ितरतन हर बशर है आवारा

क्या दिखायेगा राहे-रास्त 'हफ़ीज़'
ख़ुद अगर राहबर है आवारा

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 326)

फ़नकार : शिल्पी मित्रा

16

जो अपने लब बहुत कम खोलते हैं
ज़माने में वही सच बोलते हैं

उन्हीं के पास है बस अज़्मे-शाहीं
जो हर परवाज़ पर, पर तोलते हैं

अभी तहज़ीब ज़िंदा है हमारी
अभी हम लोग उर्दू बोलते हैं

नज़र ख़ामोश लब पर मुस्कुराहट
तकल्लुम में वो ख़ुशबू घोलते हैं

दरीचे इश्क के खोले हैं उसने
मुहब्बत के परिंदे बोलते हैं

ख़ुमार इतना है उन आँखों में ज़ालिम
कि मयकश बिन पिये ही डोलते हैं

'ज़फ़र' दिल तक उतर जाते हैं सारे
वो जब अश्कों के मोती रोलते हैं

ज़फ़र महमूद 'ज़फ़र'

फ़नकार – डॉ. शँकर सागर

ज़फ़र महमूद 'ज़फ़र', उस्ताद हफीज़ बनारसी मरहूम के साहबज़ादे हैं। रियाद, सऊदी अरब में रहते हैं

नाम	: ग़ुलाम अहमद
क़लमी नाम	: वफ़ा सिकंदरपुरी
पिता	: स्व. शाह मोहम्मद नबी ख़ान
जन्मदिन	: 3 मार्च, 1943
जन्मस्थान	: सिकंदरपुर, ज़िला बलिया
शिक्षा	: एम.ए. (उर्दू), कोलकाता विश्वविद्यालय
मशग़ला	: सेवानिवृत
पता	: 12 एन.सी.रोड, कांकीनारा, उत्तरी 24 परगना - 743126 (प.बंगाल)
मोबाइल	: 8013530181

रमेश 'कँवल' के शुरुआती दौर के (पहले) उस्ताद वफ़ा सिकंदरपुरी की ग़ज़लें

17

सयाने कैसी हरकत कर रहे हैं
कि दीवाने भी हैरत कर रहे हैं

किसी के हाथ आलूदा नहीं हैं
तो क्या पत्थर शरारत कर रहे हैं

बुरा बहुरूपियों को कहने वाले
मुखौटों की तिजारत कर रहे हैं

जहाँ वो हैं वहाँ के बामो-दर की
तसव्वुर में ज़ियारत कर रहे हैं

उन्हें ज़ख़्मों की रिश्वत लाज़मी है
जो तीरों की वक़ालत कर रहे हैं

किराये के हैं तख़्तो-ताज जिनके
वही हम पर हुकूमत कर रहे हैं

18

कोई दीवार न दर बाक़ी है
चलते रहिये कि सफ़र बाक़ी है

धूप हर राह में इस्तादा[1] है
कोई साया न शजर बाक़ी है

अपनी बैसाखियाँ खोने वालो !
दूर तक राहगुज़र बाक़ी है

उड़ते रहना है परिंदों को अभी
आशियानों में शरर बाक़ी है

कोई ख़तरा न सही, अभ्र सही
दिल के हर गोशे में डर बाक़ी है

कैसे मौसम ने छुआ पेड़ों को
गुल, न पत्ता, न समर बाक़ी है

सबकी पहचान कोई बात नहीं
अपनी पहचान अगर बाक़ी है

फ़नकार : डॉ. शँकर सागर

1 खड़ी हुई /ठहरी हुई

दूसरा इजलास : शामे-ग़ज़ल 29 जुलाई 2018

दावतनामा (आमंत्रण पत्र)

श्री सुशील कुमार,अध्यक्ष, बिहार प्रशासनिक सेवा संघ और श्री इम्तियाज़ अहमद करीमी, डायरेक्टर, राजभाषा उर्दू, बिहार

डॉ.(प्रो.) तल्हा रिज़वी बर्क़, श्री इम्तियाज़ अहमद करीमी, डायरेक्टर, राजभाषा उर्दू, बिहार, श्री मुश्ताक़ अहमद नूरी और जनाब फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी

नंदनी प्रनय, डॉ. एहसान शाम
और घनश्याम

डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ,
परवेज़ आलम, डॉ. शँकर प्रसाद

डॉ. शँकर प्रसाद, नंदनी प्रनय
और आराधना प्रसाद

इंदिरा गुप्ता, अधिवक्ता, पटना
हाईकोर्ट, गुलुकार शिल्पी मित्रा
को पुष्प गुच्छ देते हुए

तीसरा इजलास

22 दिसम्बर, 2018

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मलेन, पटना का सभागार

पर्यावरण के संरक्षण और प्रदूषण के नियंत्रण के प्रति जनमानस को जागरूक करने हेतु मुशायरा सह कवि सम्मलेन

धूप हर राह में इस्तादा है
कोई साया न शजर बाक़ी है

कैसे मौसम ने छुआ पेड़ों को
गुल, न पत्ता, न समर बाक़ी है

-वफ़ा सिकंदरपुरी

पर्यावरण के संरक्षण एवम् प्रदूषण के नियंत्रण हेतु जनमानस को जागरूक करने हेतु बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना द्वारा आयोजित मुशायरे और कवि सम्मलेन की रूदाद रविवार, दिनांक 22 दिसम्बर को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मलेन, पटना के सभागार में आयोजित मुशायरे और कवि सम्मलेन का उद्घाटन डॉ. (प्रो.) तल्हा रिज़वी 'बर्क़', डॉ. अनिल सुलभ, अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मलेन, श्री इम्तियाज़ अहमद करीमी, निदेशक राजभाषा उर्दू, बिहार सरकार, डॉ. क़ासिम ख़ुर्शीद, डॉ. शँकर प्रसाद, डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह और श्री रमेश 'कँवल', चेयरपर्सन बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी ने दीप प्रज्वलित कर, किया।

डॉ. (प्रो.) तल्हा रिज़वी 'बर्क़' ने महौलियात की हिफ़ाज़त और आलूदगी पर बन्दिश लगाने को बहुत ही ज़रूरी बताया और कहा कि इसके बिना इन्सान ही नहीं जल, थल, नभ के सभी प्राणियों की जान भी ख़तरे में है। उन्होंने गाय की उपयोगिता और सुरक्षा पर भी बल दिया।

डॉ. अनिल सुलभ, मुख्य अतिथि ने अपनी ग़ज़ल पेश कर मुशायरे का ख़ूबसूरत आग़ाज़ किया :

डॉ. क़ासिम ख़ुर्शीद ने हफ़ीज़ बनारसी को याद करते हुए कहा :

ये रस्मे- दुनिया है और हम निभाते रहते हैं
तुम्हारे बाद भी महफ़िल सजाते रहते हैं

वे बेख़बर हैं अभी ज़ालिमों की फ़ितरत से
जो पेड़ काट कर दुनिया बसाते रहते है

प्रसिद्ध कवि, कथाकार और चिन्तक भगवती प्रसाद द्विवेदी ने प्रकृति का दर्द कुछ इस तरह से बयाँ किया :

जंगल हैं कंक्रीट के बहु-मन्ज़िले मकान
जड़ ज़मीन से हम काटे गुम अपनी पहचान

सभ्य दानवों ने किया यूँ प्रकृति आखेट
स्वर्ग सरीखी ज़िन्दगी चढ़ी नरक की भेंट

मशहूर शायर घनश्याम ने प्रकृति के दुःख दर्द का सत्य चित्रण करते हुए कहा :

क़त्ल जब-जब शजर का होता है
दिल, ज़मीं-आसमाँ का रोता है

जब भी जंगल पहाड़ कटते हैं
विश्व अपना वजूद खोता है

उनके इस बयान से प्रभावित होकर शमअ कौसर 'शमअ' ने संकल्प व्यक्त किया :

हर तरफ़ पेड़ हम लगायेंगे
इस तरह पेड़ हम बचायेंगे

मशहूर शायर आर. पी. घायल ने प्रकृति के सामीप्य और प्रकृति के वियोग की स्थितियों का मर्मस्पर्शी चित्रण करते हुए ग़ज़ल पेश की :

कभी जब धूप राहों में किसी का तन जलाती है
इशारों से उसे हर पेड़ की टहनी बुलाती है

जहाँ जंगल नहीं होता जहाँ पर्वत नहीं होता
वहाँ की धूप में बस्ती हमेशा बिलबिलाती है

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी के चेयरपर्सन रमेश 'कँवल' ने लोगों को सावधान करते हुए मशविरा दिया :

सब्ज़ियों में फलों, अनाजों में
कीटनाशक न डालिए इतना

बाँझ बन जायेगी धरा अपनी
और नुक़सान होगा सेहत का

मुशायरे और कवि सम्मलेन में निम्न प्रमुख कवियों ने भी अपनी कविताओं से जनमानस को उद्वेलित किया :

मेहता नगेन्द्र सिंह, डॉ. शँकर सागर, सुनील कुमार दूबे, ओम प्रकाश पाण्डेय 'प्रकाश', नीलांशु रंजन, डॉ. शालिनी पाण्डेय, डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, डॉ. सुलक्ष्मी कुमारी, आराधना प्रसाद, नन्दनी प्रनय, नसीम अख़्तर, नसर आलम 'नसर', सिद्धेश्वर, अमिय नाथ चटर्जी, मधुरेश नारायण, डॉ. सुधा सिन्हा, सरोज तिवारी, मेनका, पूनम सिन्हा 'श्रेयसी', पूनम आनन्द, डाली अनिल, डॉ. शमअ नास्मीन 'नाज़ाँ', आनन्द किशोर शास्त्री इत्यादि ने अपनी रचनाएँ पेश कीं।

नाम	: रमेश 'कँवल'
चेयर पर्सन	: बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना मरकज़े-रंगे-हुनर
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: सावन का कँवल, शोहरत की धूप और स्पर्श की चाँदनी (काव्य संग्रह हिन्दी में) लम्स का सूरज और रंगे-हुनर (उर्दू में शे'री मजमुआ)
मशग़ला	: Ex ADM Law & Order, Patna
निवास	: 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8789761287 / 7091596715
Facebook	: Facebook.com/rameshkanwal
Website	: rameshkanwal.com
E-mail	: rameshkanwal78@gmail.com

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण, वातावरण में ज़हर अब मत छोड़िये
'मेहता नगेन्द्र' की काविशों की आप भी जय बोलिये

अब बोलिए नदियों में कूड़ा कचरा न फेंके कोई
अब कारख़ानों के रसायन नदियों में मत फेंकिये

अब मूर्तियों का भी विसर्जन पोखरों में मत करें
अब तो प्रदूषित नालों का शुद्धीकरण कर लीजिये

तालाब, पोखर में करें परहेज़ शैम्पू, सोप से
नदियों के घाटों पर तो अब मल-मूत्र करना छोड़िये

अब छोड़िये खेतों, बधारों में खुले में शौच भी
अब घर में अपने बन्द शौचालय प्रयोग ही कीजिये

अब ओडीएॅफ़ यानि खुले से मुक्त शौचालय की ही
बातें प्रचारित गावों, टोलों, वार्डों में कीजिये

अब जल ही जीवन है उतारें ज़िन्दगी में रात-दिन
जल-सन्चयन की सीख बच्चों को प्रतिदिन दीजिये

जब चाहिए तब खोलिए नाहक़ न हो बर्बाद जल
घर का हो या बाहर का हो नल को खुला मत छोड़िये

बस सोचिये कुएँ की लाइन चापाकल की भीड़ को
महिलाओं की पेशानी पर जल का तसव्वुर देखिये

ब्रश कर रहे नल चल रहा कीजे नहीं ऐसा कभी
साबुन लगाते वक़्त तो नल बन्द ही कर दीजिये

भू-गर्भ जल बस काम भर, बारिश के जल का सन्चयन
हरगिज़ प्रदूषित हो 'कँवल' न जल शपथ यह लीजिये

नाम	: घनश्याम
जन्मतिथि	: 01.04.1951
मशग़ला	: सेवानिवृत्त लेखापाल बिहार राज्य विद्युत बोर्ड
सम्पर्क का पता	: बड़ीकोठी, लल्लूबाबू का कूचा, पटना सिटी, पटना - 800009.
मोबाइल/ व्हाट्सएप	: 9507219003

क़त्ल जब-जब शजर का होता है
दिल ज़मीं-आसमाँ का रोता है

चिमनियों का धुआँ हवाओं में
मौत के बीज रोज़ बोता है

जल के बदले यहाँ हर इक दरिया
रोज़ कचरों का बोझ ढोता है

बाँधकर हाथ-पाँव नदियों के
कौन इतना निढाल सोता है

जब भी जंगल, पहाड़ कटते हैं
विश्व अपना वजूद खोता है

नाम	: रमेश 'कँवल'
चेयर पर्सन	: बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना मरकज़े-रंगे-हुनर
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: सावन का कँवल, शोहरत की धूप और स्पर्श की चाँदनी (काव्य संग्रह हिन्दी में) लम्स का सूरज और रंगे-हुनर (उर्दू में शे'री मजमुआ)
मशग़ला	: Ex ADM Law & Order, Patna
निवास	: 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8789761287 / 7091596715
Facebook	: Facebook.com/rameshkanwal
Website	: rameshkanwal.com
E-mail	: rameshkanwal78@gmail.com

पर्यावरण मुक्तक

ज़हर भरने लगा हवाओं में
जां है साँसत में शहरों-गाँवों में
मस्तियाँ छीन ली पटाखों ने
दम घुटा जाता है फ़िज़ाओं में

शोर है गाड़ियों की सड़कों पर
हॉर्न से कान फट न जाये कहीं
जानवर गामज़न क़तारों में
कोई तरतीब गाड़ियों की नहीं

सब्ज़ियों में फलों, अनाजों में
कीटनाशक न डालिए इतना
बाँझ बन जायेगी धरा अपनी
और नुक़सान होगा सेह्त का

नाम	: सोमा आनन्द गुप्ता
जन्मतिथि	: 13 जुलाई, 1977
मशग़ला	: गृहणी, काव्य सृजन
प्रकाशित कृतियाँ	: भावों का चितेरा (काव्य संग्रह)
साझा काव्य संग्रह	: 'भावकलश', 'नीलाम्बरा' 'शब्दशिल्पी' 'दस्तक दिल से दिल तक', 'भारत के युवा कवि एवम् कवयित्रियाँ' और साझा कथा संग्रह : 'कथाकार'।
सम्पर्क का पता	: सतीश सरकार लेन, गुहा विला, मशाकचक, भागलपुर, बिहार
मोबाइल	: 8210 323 475

"पर्यावरण"

ईश्वर ने जब रचा संसार,
पृथ्वी को दिया
अमूल्य उपहार।
धूप, जल, वायु
पेड़-पौधे और पशु-पक्षी,
इस ख़ूबसूरत धरा के
सभी बने ज्वलन्त साक्षी।

फैली हरियाली चारों ओर,
झूमी प्रकृति होकर भाव-विभोर।
पशु-पक्षी के कलरव और गान से,
गौरवान्वित हुई वसुधा अभिमान से।

दूर तक फैली निर्झरणी का शोर,
पक्षियों की चहचहाहट से
होती धरा की भोर।
बहती बयार मदमस्त सी इठलाकर,
खिलता रवि भी अम्बर पर मुस्काकर।

झूमकर हर्ष से धरती होती शराबोर,
शुद्धता रक्त-मिश्रित हो मनुष्य को
स्वस्थ रखतीं चहुँओर।

छायी हरियाली बनकर,
धरा का आवरण
सुशोभित हुई नये नामों से
कहलायी "पर्यावरण"

नाम	: मो. नसीम अख़्तर
जन्मतिथि	: 15.05.1963
मशग़ला	: कार्यालय अधीक्षक (रेल), राजेंद्र नगर टर्मिनल, पटना
प्रकाशित कृतियाँ	: पाँच साझा संकलन
सम्पर्क का पता	: मोग़लपुरा जग्गी का चौराहा, पटना सिटी, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 9504604986

वो पेड़

वो पेड़
जिसके तले हमने बैठकर बरसों
ज्ञान, ध्यान की बातें
सुनी थीं
समझी थीं
रोज़ के कठिन और मुश्किल रास्तों पर
दुनिया के दु:खों को
झेलने का फ़न भी सीखा था

वो पेड़
जिसकी घनी छाँव के तले हमने
सुलगती धूप में पनाह पाई थी
हर ओर जले थे प्रेम के दिये
अँधेरी रात की तक़दीर जगमगाई थी

वो पेड़
जिसकी घनी टहनियों के घेरे में
दुनिया की फ़िक्र

दिन-रात के अनुभव
और कई तरह की होती थी सभाएँ
वो पेड़
जिसकी जड़ों से लिपट के रातों में
सुकूनो-चैन की बँसी बजाया करते थे
बदन की सारी थकान भुला के सपनों में
नये दिनों के घरौंदे बनाया करते थे

ये क्या हुआ
वही पेड़ गिर गया "अख़्तर "
नज़र में समा गया धुन्ध भरा आसमान

हो गया ज़मीन बन्जर
आओ, हम सब मिलकर
ऐसी मुसीबत की घड़ी में
माँगें दुआएँ
ताकि, मिल सके हमें सुकून
और फिर से वापस मिल जाए
हरियाली. . .
क़सम लेकर इस बात की
अनावश्यक नहीं काटा करेंगे पेड़
नहीं उजाड़ा करेंगे हरे-भरे पौधे
नित सींचा करेंगे हम
नये-नये पौधों को
और लगाते रहेंगे हम
पौधों का अनवरत सिलसिला. .

नाम	: डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
जन्म	: 4-10-1962
मशग़ला	: शिक्षण, पत्रकारिता तथा साहित्य सृजन
प्रकाशित कृतियाँ	: मुट्ठी में बन्द धूप (काव्यसंग्रह) तथा सात साझा काव्यसंग्रह
सम्पर्क का पता	: द्वारा अरुण कुमार, रूपसपुर नहर पर, बेली रोड पटना, बिहार - 801503
मोबाइल	: 9576815977
ई-मेल	: annpurnashrivastava1@gmail.com

मानव का आततायीपन

ओ मानव, देख
अपने आततायीपन से
तूने, क्या-क्या खो दिया.....
अमृत-सी धरती में
विष-बीज बो दिया !
धरती को कोड़ा
पहाड़ों को झकझोरा
मन न भरा तो
गगन को भी टटोला,
चाँद-मंगल पर
धावा बोला !
जंगलों को काटा
नदी, कुओं, तालाबों को भी पाटा,
पर, हाँ बेवक़ूफ़,
लगा लिए ख़ुद
अपने ही मुँह पर चाँटा !
विज्ञान और प्रगति के नाम पर
कितने खेल-खेले
सुख-सुविधाएँ, ख़ुशियों के लिए

कितने ही पापड़ बेले !
पर तू रह गया आज
बिल्कुल अकेले !
अणु-परमाणु, प्रक्षेपणास्त्र बनाए,
जल, वायु, भूमि पर
अनेक क़हर ढाए !
पर, क्या पाए? क्या पाए....?
साँस लेने को न शुद्ध हवाएँ रही,
बैरन-सी हो गई, दसों दिशाएँ रही
न शुद्ध औषधीय फल रहे

न पीने को पर्याप्त जल रहे.....!
धरती की कोख हो रही ख़ाली,
ये सारी विपदाएँ तूने स्वयम् पाली!
संभल, अब तो संभल ....
कर सन्चय जल ....
संरक्षित कर
गिरिवन, धरती, भू-स्थल !
नहीं, तो कीड़े-मकोड़ों की तरह
मरेगा बिलबिलाकर
हँसेगी प्रकृति खिलखिलाकर!!
आकाश टूटेगा, धरती डोलेगी,
भू-गर्भ, पर्वतों से
ज्वालामुखियाँ फटेगी !!!
रुक-जा, रुक-जा
मत कर विकास, नहीं तो
अब होगा, सर्वनाश!
सर्वनाश ! सर्वनाश !! सर्वनाश !!!

नाम	: डॉ.अर्चना त्रिपाठी
जन्मतिथि	: 04 अप्रैल, 1976
मशग़ला	: अध्यापन,श्री अरविंद महिला कॉलेज
सम्पर्क का पता	: श्री अरविंद महिला कॉलेज, काज़ीपुर पटना
मोबाइल	: 7033643268 / 9708329867

दरख़्त

ओ दरख़्त
तूने देखे
न जाने ..
कितने वक़्त
है खड़ा हरा-भरा
... फिर भी मस्त।

उड़ा दी
मज़हबी छतरी
शीतलता की आँधी बन
तेरी स्नेहिल छाँव ने
भूल जाति का भेद
बाहें फैलाए
तेरी
अनगिनत शाख़ें
आग़ोश में ले
पथिकों को देती
निद्रा रूपी
निश्छल प्यार।

जलयुगों से आतप में
तू खड़ा अविचल सख़्त।
ओ दरख़्त
तूने सहे न जाने
कितने कष्ट
एहसानों को भुला, तेरा
अन्त कर रहे वे.....

एहसान फरामोश
अन्जान अनभिज्ञ अपने
ही हाथों कर रहे
स्वयम् अपना विनाश कर

कट गये तरु समस्त
होगी विडम्बना जीवन की अभिशप्त
ओ दरख़्त कर क्षमा मूर्खों को
मुक्त हस्त .. मुक्त हस्त..

नाम	: पूनम सिन्हा "श्रेयसी"
जन्मतिथि	: 5 सितम्बर
मशग़ला	: स्वतन्त्र लेखन
प्रकाशितकृतियाँ	: (1) तेरी हँसी कृष्ण विवरसी (कविता संग्रह) साझासंग्रह- 2) नीलाम्बरा 3) नई रौशनी नया आसमान 4) त्रिवेणी 5) कविता के दस रंग 6)भाषा सहोदरी
सम्पर्क का पता	: द्वारा श्री नरेन्द्रकुमार सिन्हा, (भा०प्र०से०) पटना स्काइज अपार्टमेंट, फ़्लैट न० 21, विवेकानन्द पार्क रोड, रोड न०1, न्यू पाटली पुत्र कोलोनी, पटना
Mobile no	: 8340484896
Email	: punamsinha2013@gmail.com

"पानी"

देवों का अर्पण है
पितरों का तर्पण है
मुखड़ों का दर्पण है
भावों का समर्पण है
चढ़ जाए तो शान है
बह जाए तो नुक़सान है
बन्द हो तो बहिष्कार है
उतर जाए तो तिरस्कार है
उठ जाए तो परिवर्तन है
कर जाए तो क्रोध शमन है
पियें तो यह जीवन है
छूट जाए तो मरण है
वारि के बून्दों से

सागर है,
सरिता है,
झील है,
पोखर है
नयनों में नीर है
लहरों में सलिल है
तल में पावन जल है
अमृत यह शीतल तरल है
धरती से अम्बर तक
घनरस का नाता है
मेघपुष्प बरसता है
धरा को सींचता है
पानी को पानी सा
बहने न देना कभी
जल का दुनिया से
दुनिया का जल से
अटूट अनुबन्ध है
अटूट अनुबन्ध है।

नाम	: नन्दनी प्रनय
जन्मतिथि	: 16 मई
मशग़ला	: शिक्षिका (बिहार सरकार)
प्रकाशित कृतियाँ	: कई साझा संकलन, पत्र-पत्रिकाओं में लगातार रचनाएँ प्रकाशित
सम्पर्क का पता	: E/505, गुलमोहर पार्क एन्क्लेव, विनायक हॉस्पिटल के पीछे, अमेठिया नगर, नामकुम, रांची, झारखण्ड
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8340107009

हरियाली हो पत्तों वाली
दुनिया अपनी हो मतवाली
भूल गये हम गाँवों के वो
पौधे, झूले, बगिया, डाली
पर्यावरण को दूषित करके
अपना जीवन हो गया ख़ाली
जब देखा कटते वृक्षों को
रूदन ही दामन में पाली
बोएँ फिर से बीज वृक्षों के
जो छाँव देता हमको आली!!!

नाम	: रमेश 'कँवल'
चेयर पर्सन	: बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना
	मरकज़े-रंगे-हुनर
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: सावन का कँवल शोहरत की धूप
	स्पर्श की चाँदनी
मशग़ला	: Ex ADM Law & Order, Patna
निवास	: 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा
	गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8789761287 / 7091596715
Facebook	: Facebook.com/rameshkanwal
Website	: rameshkanwal.com
E-mail	: rameshkanwal78@gmail.com

ट्रैफ़िक जाम

ट्रैफ़िक जाम से राहत हो — आपको गर ये चाहत हो
सिर्फ़ क़तार में चलना हो — इधर-उधर न मचलना हो
शुरू में कुछ मुश्किल होगी — जल्दी फिर मंज़िल होगी
हेलमेट पहनो बाइक पर — बेल्ट लगा ही ड्राइव कर
डिजिटल हो या फ़िज़िकल हो — साथ में आर.सी डी-एल हो
पोल्यूशन की सनद रहे — इंश्योरेंस हो अप-टू-डे
सीधा जाना बीच में चल — एकाएक न लेन बदल
लेन बदल कुछ पहले ही — बाएं-दायें हो जो भी
एम्बुलेंस को जाने दो — दमकल आग बुझाने दो
सिग्नल लाल न पार करो — पार करो तो चलान भरो
जहाँ लिखा स्टॉप रुको — ज़ेबरा कभी न क्रॉस करो
पैदल चलने वालों पर — हरदम रक्खो एक नज़र
पैदल चलने वाले भी — रुक जाएँ, जो चले गाड़ी
धूल-धुएँ से बचाते हैं — पेड़ जो राह में आते हैं
सुख की छाँव ये देते हैं — लंग्स में अमृत भरते हैं
पेड़ न रस्ते के काटें — इनके कुछ दुख भी बाटें
हरा भरा रखिए रस्ता — जीवन से रिश्ता इनका

तीसरा इजलास : 22 दिसम्बर 2018
दीप प्रज्ज्वलित करते हुए पर्यावरणवादी
डॉ.मेहता नगेन्द्र सिंह, डॉ. शँकर प्रसाद,
इम्तियाज़ अहमद करीमी, डॉ. अनिल
सुलभ, डॉ.(प्रो.) तल्हा रिज़वी बर्क़,
डॉ. क़ासिम खुर्शीद और रमेश कँवल

पौधारोपण करते हुए पर्यावरणवादी
डॉ.मेहता नगेन्द्र सिंह एवं अन्य

तीसरे इजलास में हाज़िर शख्शीयतें और
निज़ामत करते हुए फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी

मंच का दृश्य

आयोजन स्थल : बिहार हिंदी साहित्य सम्मलेन

नन्दनी प्रनय सम्मान ग्रहण करते हुए

डॉ.नस्र आलम नस्र सम्मान ग्रहण करते हुए

हफ़ीज़ बनारसी की प्रशंसक महिला

रमेश 'कँवल' उद्बोधन करते हुए

डॉ.(प्रो.) तल्हा रिज़वी बर्क़, पर्यावरण संरक्षण पर बोलते हुए

श्री इम्तियाज़ अहमद करीमी, डायरेक्टर, राजभाषा उर्दू, बिहार अपने उदगार व्यक्त करते हुए

डॉ. शँकर प्रसाद सम्मान ग्रहण करते हुए

श्रीमती आराधना प्रसाद सम्मान ग्रहण करते हुए

श्री आर.पी.घायल सम्मान ग्रहण करते हुए

श्रीमती निकहत आरा सम्मान ग्रहण करते हुए

श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी सम्मान ग्रहण करते हुए

चौथा इजलास
रविवार, 16 जून, 2019

बिहार उर्दू अकादमी, पटना का सभागार

अशोक राजपथ, पटना

मेरा इश्क़ क्या है तेरी दिलनवाज़ी
तेरा हुस्न क्या है मेरी ख़ुशनिगाही

खिराजे-अक़ीदत : चौथी पेशकश

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के तत्वावधान में (ज़ेरे-अह्तमाम) उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की 11वीं पुण्यतिथि 16 जून, 2019 पर आयोजित कार्यक्रम "एक शाम हफ़ीज़ बनारसी की यादों के साथ" की झलकियाँ

रविवार, दिनांक 16 जून की ख़ुशनुमा शाम ; बिहार उर्दू अकादमी, पटना के अशोक राजपथ पर अवस्थित ऐतिहासिक सभागार, शाम के चार बजे की सुहानी बेला में साहित्यिक और सांस्कृतिक शख़्सीयतों का ख़ुशियों से शराबोर उत्सवी माहौल। अदब, शायरी और मुशायरों के मशहूर और मारुफ़ शख़्स उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की 11वीं बरसी (यौमे-वफ़ात/पुण्यतिथि) अदबी अन्दाज़ में मनाने का मुहज़्ज़ब मौक़ा। खचाखच भरा सभागार। मशहूर उर्दू अफ़साना-निगार जनाब फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी का मसनदे-निज़ामत से बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़े-रंगे-हुनर के ओह्ददार और इज़्ज़त-मआब मेहमानों से स्टेज पर आने की गुज़ारिश कर रही आवाज़ ..... बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़े-रंगे-हुनर के चेयरपर्सन और उर्दू के मशहूर शायर जनाब रमेश 'कँवल' ; मुख्य अतिथि जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी, निदेशक, राजभाषा उर्दू निदेशालय, बिहार सरकार ; विशिष्ट अतिथि उर्दू अदब के मशहूरो-मारूफ़ शायर और "आमद" के मुदीर जनाब ख़ुर्शीद अकबर ; विशिष्ट अतिथि बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष और यशस्वी साहित्यकार डॉ. अनिल सुलभ ; विशिष्ट अतिथि बिहार संगीत अकादमी के पूर्व अध्यक्ष, आकाशवाणी और दूरदर्शन से सम्बद्ध मशहूर ग़ज़ल गायक प्रोफ़ेसर डॉ. शँकर प्रसाद को मंच पर तशरीफ़ लाने की गुज़ारिश की गयी।

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना की तरफ़ से जनाब रमेश 'कँवल' को शायरा मोहतरमा निकहत आरा ने, जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी को डॉ. मो. अरमान ने, डॉ. अनिल सुलभ को रेडियो जौकी और शायरा ज़ीनत शैख़ ने जनाब ख़ुर्शीद अकबर को मोहतरमा शाज़िया नाज़ ने और डॉ. शँकर प्रसाद को ख़ुशगुलू' शायरा मोहतरमा आराधना प्रसाद ने पुष्प गुच्छ (बुके) देकर और बैज लगाकर स्वागत किया।

मुख्य अतिथि एवम् अन्य सभी सम्मानित विशिष्ट अतिथियों ने शमअ रौशन कर इस हसीं शाम का आगाज़ किया। सर्वप्रथम उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की आवाज़ में प्रोजेक्टर पर उनकी नात पेश की गई जिसे दर्शकों ने बहुत पसन्द

किया। इसी दरम्यान उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी के दो साहबज़ादे डॉ. अख़्तर मसूद और प्रो. अब्दुल क़ादिर इस ख़ुशनुमा महफ़िल में तशरीफ़-फ़रमा हुए। मोहतरमा निदा अली ने डॉ. अख़्तर मसूद को और मोहतरमा पूनम सिन्हा 'श्रेयसी' ने प्रो. अब्दुल क़ादिर को पुष्प गुच्छ (बुके) देकर और बैज लगाकर स्वागत किया।

श्रीमती आराधना प्रसाद ने सरस्वती वन्दना निराला की 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। सभी मेहमानों ने हफ़ीज़ बनारसी की तस्वीर का अनावरण किया जिसे कार्यक्रम के बाद अकादमी की दीवार पर लगा दिया जाएगा। ख़ुशगवार शाम को एक आलमी मुशायरे में पढ़ी गयी हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़ल यू ट्यूब और प्रोजेक्टर के माध्यम से बड़े स्क्रीन पर दिखा और सुना कर और भी हसीन बनाया गया। मतला था :

जो ख़त है शिकस्ता है जो अक्स है टूटा है
या हुस्न तेरा झूटा या आइना झूटा है

स्क्रीन पर हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़ल का लुत्फ़ उठाने के बाद पटना कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल और मौलाना मज़हर-उल-हक़, अरबी-फ़ारसी विश्वविद्यालय के पूर्व वाईस चान्सलर प्रो. एज़ाज़ अली अरशद ने हफ़ीज़ बनारसी की यादों को शेयर करते हुए इस यादगार शाम का उद्घाटन किया। उन्होंने बी.एन. कॉलेज के क़ाबिले-नाज़ मुशायरों का ज़िक्र करते हुए बताया कि कैसे एक बार बारिश में भीगते हुए भी बेकल उत्साही और हफ़ीज़ बनारसी एक मुशायरे में उर्दू शे'रो-अदब की ख़िदमत करने पहुँच गये। उन्होंने क़बूल किया कि हम इसलिए बड़े हैं क्योंकि हम अपने बुज़ुर्गों के काँधे पे खड़े हैं। इस दौर में जब कि रिश्तेदारियाँ नहीं चलती; लोग अपने अजदाद को याद नहीं रख पाते, अपने उस्ताद को इतनी शिद्दत से याद करने की जद्दो-जहद रमेश 'कँवल' को ख़ास बनाती है। मैं उनका शुक्रिया भी अदा करता हूँ और मुबारकबाद भी देता हूँ।

इश्क़ हो और सफल हो ये कहाँ मुमकिन है
हर महल, ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

गुल तो यूँ गुलशने-हस्ती में ही खिलते हैं मगर
हर कोई फूल 'कँवल' हो ये कहाँ मुमकिन है

प्रो. एज़ाज़ अली अरशद के उद्घाटन (इफ़्ताह) के बाद इज़्ज़त-मआब मेहमानों ने बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़े-रंगे-हुनर की स्मारिका (सोवेनियर) 2019 और रमेश 'कँवल' के पाचवें शेरी मजमुए "स्पर्श की चाँदनी" का विमोचन सह लोकार्पण किया।

स्मारिका में वर्ष 2018 में बज़्म द्वारा बिहार उर्दू अकादमी के सभागार में 8 अप्रैल 2018 को आयोजित पहले इजलास की गुफ़्तगू, बिहार प्रशासनिक सेवा संघ के भव्य हाल में 29 जुलाई 2018 को आयोजित डॉ. शँकर प्रसाद एवम् बिहार के अन्य ग़ज़ल गायकों द्वारा हफ़ीज़ बनारसी और वफ़ा सिकंदरपुरी को उनकी ग़ज़ल गायन से खिराजे-अक़ीदत पेश करती शामे-ग़ज़ल की ग़ज़लें और बिहार हिन्दी साहित्य सम्मलेन के सभागार में 22 दिसम्बर, 2018 को आयोजित पर्यावरण के संरक्षण और प्रदूषण के नियन्त्रण के प्रति जन-मानस को सजग और जागरूक करती नज़्में-ग़ज़लें बहुत ही कलात्मक ढंग से सहेजी गयी हैं। इसके सम्पादक मो. नसीम अख़्तर ने बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के सदस्यों और तीनों कार्यक्रमों की रंगीन तस्वीरों से इसे और दर्शनीय बनाया है।

'स्पर्श की चाँदनी' रमेश 'कँवल' का 5वाँ मजमुआ है। इसके पहले 'सावन का कँवल' और 'शोहरत की धूप' (देवनागरी लिपि में) और 'लम्स का सूरज' तथा 'रंगे-हुनर' (उर्दू में) प्रकाशित हो चुके हैं। इस काव्य संग्रह में ग़ज़लें, नज़्में, माहिये, क़तआत वग़ैरह शामिल हैं।

डॉ. मोहम्मद अरमान ने 'हफ़ीज़ बनारसी के ग़ज़लिया मत्ले' उन्वान से एक शोधपरक आलेख पढ़ा और उनके अनेक अशआर का हवाला भी दिया। इनके मक़ाला को पसन्द किया गया और इन मत्लों पर बहुत दाद मिली :

ख़ुशबू नहीं तो फूल की रंगत फ़िज़ूल है
किरदार के बग़ैर ये सूरत फ़िज़ूल है

जब तसव्वुर में कोई माहजबीं होता है
रात होती है मगर दिन का यक़ीं होता है

डॉ. अनिल सुलभ, अध्यक्ष, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मलेन ने कहा कि हफ़ीज़ बनारसी दिल में उतर जाने वाली शायरी के गेसू सँवारने वाले शायर थे। कोई भी शायर जब इन्सानियत और मुहब्बत की शायरी करता है तभी वह बड़ा और महान शायर

बनता है। हफ़ीज़ बनारसी निस्सन्देह उर्दू ज़बान के महान शायरों में शुमार किये जाते हैं क्योंकि उनकी शायरी का पैमाना इन्सानियत और मुहब्बत से लबरेज़ था। डॉ. सुलभ ने अपने उस्ताद को निरन्तर याद रखने के लिए रमेश 'कँवल' का शुक्रिया अदा किया और बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना द्वारा शाइरों को सम्मानित करने की पेशकश की तारीफ़ की। उन्होंने कहा कि देने से ही लोग बड़े बनते हैं। और जो दूसरों को देने की तहज़ीब ज़िन्दा रखता है उसे ऊपर वाला ज़रूर देता है।

मोहतरमा मासूमा ख़ातून ने अपना मक़ाला - 'हफ़ीज़ बनारसी- एक गौहरे-नायाब शायर' पढ़ा जिसे बहुत ही पसन्द किया गया। उन्होंने उनके एक से बढ़कर एक शे'र पेश किये जिस पर भरपूर तालियाँ बजीं।

पैदा नज़र भी कीजिये गर शौक़े-दीद है
औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये

जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी, निदेशक, राजभाषा उर्दू, बिहार सरकार ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि हिन्दी भाषी लोग मसलन प्रेम किरण, आराधना प्रसाद, सुनील कुमार, मेहता नगेन्द्र सिंह, शुभ चन्द्र सिन्हा इत्यादि उर्दू की ख़िदमत में लगे हुए हैं। रमेश 'कँवल' ने तो उर्दू का शे'र सुनाकर ही डिप्टी कलेक्टर का ओहदा हासिल कर लिया। ये 'हफ़ीज़' बनारसी मरहूम के शागिर्दे-ख़ास हैं। हफ़ीज़ बनारसी, जैसा कि नाम से ही पता चलता है बनारस के रहने वाले थे। 20 मई 1933 को बनारस में उनका जन्म हुआ लेकिन वे महाराजा कॉलेज, आरा में अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर थे। वे उर्दू के बेहतरीन शायर तो थे ही किसी भी मुशायरे की कामयाबी की ज़मानत भी थे। 16 जून 2008 को बनारस में ही उनका इंतकाल हुआ। ये महफ़िल उन्हें ही खिराज़े-अक़ीदत पेश करने के लिए उनके शागिर्दे-नेक रमेश 'कँवल' ने मुनअक़ीद की है। आज के दौर में जब लोग अपने वालदैन का हक़ अदा नहीं कर पाते ये अपनी शागिर्दी का हक़ बख़ूबी अदा कर रहे हैं।

हफ़ीज़ बनारसी दिल के शायर थे। उनकी शायरी में आम बोलचाल के लफ़्ज़ मिलेंगे जिन्हें हिन्दी उर्दू की विशेष जानकारी न रखने वाले लोग भी आसानी से समझ सकते हैं :

जिसने गुलशन को ज़िन्दगी बख़्शी
उसके दामन में कोई फूल नहीं

ये अजीब माजरा है कि चढ़ी हुई नदी में
जिन्हें डूबना था यारो वही पार उतर गये हैं

रात जितनी तवील होती है
सुब्हे-नौ की दलील होती है

तदबीर के दश्ते-ज़रीं से तक़दीर दरख़्शाँ होती है
क़ुदरत भी मदद फ़रमाती है जब कोशिशे-इन्साँ होती है

अभी मोहतरमा मासूमा ख़ातून ने हफ़ीज़ बनारसी पर ख़ूबसूरत मक़ाला पढ़ा जिसमें उनके बहुत सारे अशआर पेश किये गये। उनका एक मज़मून 2-4 दिन क़ब्ल ही क़ौमी तन्ज़ीम में शाया हुआ था। डॉ. मो. अरमान ने भी उनकी शायरी पर विस्तार से प्रकाश डाला है। मैं ऐलान करता हूँ कि राजभाषा उर्दू का निदेशालय बहुत जल्द अभिलेख भवन में हफ़ीज़ बनारसी पर एक सेमीनार का आयोजन करेगा। इस बज़्म के रूहे-रवाँ रमेश 'कँवल' से गुज़ारिश है कि वे एक समिति बना दें जिसकी सिफ़ारिश पर आज के तरही मुशायरे में ग़ज़ल पढ़ने वाले 3 शाइरों और 3 शाइरात को उर्दू निदेशालय द्वारा इस माह में आयोजित होने वाले बज़्मे-सुख़न (जश्ने-उर्दू) में सनदी एज़ाज़ और इनाम से नवाज़ा जायेगा। सभी उपस्थित लोगों ने उनके ऐलान का भरपूर तालियों से ख़ैर मक़दम किया और फ़ौरन रमेश 'कँवल', चेयरपर्सन, डॉ. अख़्तर मसूद, जनरल सेक्रेटरी और जनाब फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी की समिति बना दी गयी।

जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी, निदेशक, राजभाषा उर्दू, बिहार सरकार ने उर्दू के जाने-माने शायर जनाब ख़ुर्शीद अकबर के बज़्मे- हफ़ीज़ बनारसी, पटना के सरपरस्त बनने पर ख़ुशी जताई, उनका इस्तक़बाल किया और शुक्रिया अदा किया। जनाब ख़ुर्शीद अकबर ने जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी से भी इस बज़्म का सरपरस्त बनने का इसरार किया।

प्रोफ़ेसर डॉ. शँकर प्रसाद ने हफ़ीज़ बनारसी के आरा में साथ गुज़ारे दिनों को याद किया और खिराज़े-अक़ीदत के रूप में हारमोनियम पर दो ग़ज़लें पेश कीं जिनका मतला और एक शे'र मुलाहिजा फ़रमाइए :

जो नज़र से बयान होती है
क्या हसीं दास्तान होती है

बे-पिए भी सरुर होता है
जब मुहब्बत जवान होती है

दिल परेशाँ नज़र है आवारा
किसलिए हर बशर है आवारा

कुछ तुम्हारा शबाब है चंचल
कुछ हमारी नज़र है आवारा

उन्होंने प्रो. (डॉ.) तल्हा रिज़वी 'बर्क़' की एक ग़ज़ल भी पेश की

कट गयी उम्र यही एक तमन्ना करते
सामने बैठ के हम आपको देखा करते

सामने सबके बुलाया मगर इक बात न की
और क्या इससे ज़्यादा मुझे रुसवा करते

जनाब वफ़ा सिकन्दरपुरी (रमेश 'कँवल' के पहले उस्ताद) की ग़ज़ल भी बहुत पसन्द की गयी :

कोई दीवार न दर बाक़ी है
चलते रहिये कि सफ़र बाक़ी है

कैसे मौसम ने छुआ पेड़ों को
गुल, न पत्ता, न समर बाक़ी है

इसके बाद बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़े-रंगे-हुनर के सभी सदस्यों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। सदस्यों की तस्वीर चस्पाँ ख़ूबसूरत मोमेंटो हासिल करने वालों में श्री सुनील कुमार, डॉ. मोहम्मद अरमान, श्रीमती आराधना प्रसाद, श्रीमती पूनम सिन्हा 'श्रेयसी', प्रो. अब्दुल क़ादिर, कुमारी स्मृति कुमकुम, श्रीमती ज़ीनत शैख़, श्रीमती निकहत आरा, श्रीमती मासूमा ख़ातून, सुश्री शाज़िया नाज़, प्रो. (डॉ.) सुधा सिन्हा, श्री शुभ चन्द्र सिन्हा, डॉ. शँकर प्रसाद, श्री नसीम अख़्तर

के नाम उल्लेखनीय हैं।

इसके अलावा बेहतरीन ग़ज़ल गायन के लिए डॉ. शँकर प्रसाद, बेहतरीन निज़ामत के लिए जनाब फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी, स्मारिका सम्पादन के लिए जनाब नसीम अख़्तर, मीडिया कवरेज के लिए सुश्री निदा अली को मख़्सूस मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी के साहबज़ादे और बज़्म के जनरल सेक्रेटरी, डॉ. अख़्तर मसूद को बनारस से आकर इस जलसे में शिरकत करने के लिए मोमेंटो से नवाज़ा गया।

स्टेज पर मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के साथ सभी सम्मानित सदस्यों का एक ग्रूप फ़ोटो भी हुआ।

जनाब रमेश 'कँवल' ने आज के प्रोग्राम पर तफ़सील से रौशनी डालते हुए बताया कि तरही मुशायरा के पहले ज़िन्दगी, मुहब्बत और मयख़ाना पर 'हफ़ीज़' बनारसी के अश'आर पढ़े जायेंगे और उनमें से दो-दो बेहतरीन पेशकश को सनद और मोमेंटो से नवाज़ा जायेगा। इसके बाद हफ़ीज़ बनारसी के अश'आर तरन्नुम में पढ़े जायेंगे और उनमें से भी दो बेहतर करने वाले ख़वातीनो-हज़रात को सनद और मोमेंटो से नवाज़ा जायेगा। तरही ग़ज़ल पढ़ने वाले सभी शोअरा को एज़ाज़ी सनद दिया जायेगा। उन्होंने इस बात पर ख़ुशी ज़ाहिर की कि हफ़ीज़ बनारसी की यादों को सहेजने में और भी बहुत लोगों का सहयोग मिल रहा है। अब वे अकेले नहीं हैं।

आज बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के सरपरस्त बने उर्दू के मशहूरो-मारुफ़ शायर और अदीब जनाब ख़ुर्शीद अकबर का शुक्रिया अदा करती है और उनसे गुज़ारिश करती है कि वे चन्द अल्फ़ाज़ इनायत करें।

जनाब ख़ुर्शीद अकबर ने कहा कि 'किसी भी शायर का मर्तबा और उनका मुक़ाम उनकी हयात में तय नहीं होता। हफ़ीज़ बनारसी अवाम और ख़वास के मक़बूल शायर थे। नाक़िदों ने उनकी शायराना सलाहियतों को तस्लीम तो किया लेकिन उन्हें वो अज़मत और इज़्ज़त नहीं बख़्शी जिसके वे हक़दार थे। इसलिए मैं शुक्रिया अदा करता हूँ अपने मोहतरम सीनियर कलीग रमेश 'कँवल' की काविशों का जिनके पिछले 3-4 तक़रीबात के ज़ेरे-असर हम हफ़ीज़ बनारसी का तज़्किरा करने लगे हैं ; उनपर गुफ़्तगू होने लगी है। कई ज़ावियों से उन पर नज़रे-सानी होने लगी है। वरना ये मुमकिन था कि हम उन्हें रफ़्ता-रफ़्ता भूल जाते – जैसे बहुत अज़ीम शायरों को हम भूल गये हैं। दर हक़ीक़त रमेश 'कँवल' ने शागिर्दी का हक़ अदा कर दिया है लेकिन मैं उन्हें मशविरा देना चाहूँगा कि हफ़ीज़ बनारसी का होच-पोच प्रोग्राम न बनावें। जितना प्रोग्राम आज उन्होंने रखा है उसके लिए कम से कम दो दिनों का वक़्त चाहिए। इसलिए हफ़ीज़ बनारसी पर बेहतर assesment के लिए वेल प्लांड प्रोग्राम बनावें।

हम लोगों पर ये फ़र्ज़ भी है और क़र्ज़ भी कि हम उन्हें उनका वाज़िब मुक़ाम दिलावें।

ज़िन्दगी, मुहब्बत और मयख़ाना पर विभिन्न शायरों ने हफ़ीज़ बनारसी के कलाम पेश किये। इनमें नसीम अख़्तर, निकहत आरा, नियाज़ नज़र फ़ातमी, प्रो. डॉ. सुधा सिन्हा, आराधना प्रसाद, शुभ चन्द्र सिन्हा, पूनम सिन्हा 'श्रेयसी', ज़ीनत शैख़, शिप्रा श्रीवास्तव के नाम उल्लेखनीय हैं।

ज़िन्दगी पर हफ़ीज़ बनारसी के निम्न अशआर ने काफ़ी दादो-तहसीन बटोरे :

कभी ख़िरद कभी दीवानगी ने लूट लिया
तरह-तरह से हमें ज़िन्दगी ने लूट लिया -नसीम अख़्तर

आपकी याद आपका ग़म है
ज़िन्दगी के लिए ये क्या कम है -प्रो. सुधा सिन्हा

हरचन्द ग़म के हाथों सताये हुए तो हैं
हम ज़िन्दगी का बोझ उठाये हुए तो हैं -निकहत आरा

जीना पड़ेगा औरों की खातिर हमें यहाँ
अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी -तलअत परवीन

हर तरफ़ है मौत की परछाइयाँ
गामज़न किस राह पर है ज़िन्दगी -शाज़िया नाज़

मुहब्बत पर हफ़ीज़ बनारसी के अशआर सुनते ही हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा :

पैग़ाम दिया है कभी पैग़ाम लिया है
आँखों से मुहब्बत में बड़ा काम लिया है -आराधना प्रसाद

बे-पिए भी सुरूर होता है
जब मुहब्बत जवान होती है -शिप्रा श्रीवास्तव

रंगीं इन्हीं दोनों से दुनिया की कहानी है
इक लफ़्ज़ मुहब्बत है, इक लफ़्ज़ जवानी है -ज़ीनत शैख़

मैख़ाने पर भी हफ़ीज़ बनारसी के अशआर बहुत पसन्द किये गये

मैख़ाने से मस्जिद तक मिलते हैं नक़ूशे-पा
या शैख़ गये होंगे या रिन्द गया होगा -नज़र फातमी

बादाकशी से हमको तअल्लुक़ नहीं मगर
आँखों से तुम पिलाओ तो इनकार भी नहीं -नसीम अख़्तर

रिन्दों को मयकशी की ज़रूरत नहीं रही
साग़र उठाये कौन तुम्हारी नज़र के बाद -शुभ चन्द्र सिन्हा

वहीं-वहीं तो चिराग़े-हयात हैं रौशन
जहाँ-जहाँ तेरे मस्तों ने जाम उछाले हैं -तलअत परवीन

हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों को तरन्नुम में निम्नलिखित शायरों ने पेश किया :

ग़म याद रहेगा, न ख़ुशी याद रहेगी
हाँ आपकी बेगाना रवी याद रहेगी

दिन तिश्नालबी के तो गुज़र जायेंगे लेकिन
साक़ी तेरी पैमाँ-शिकनी याद रहेगी

भूलेगा कोई कैसे 'हफ़ीज़' अपने वतन को
का'बे में भी काशी की गली याद रहेगी -पेशकश : ज़ीनत शैख़

मुद्दत की तश्नगी का इनआम चाहता हूँ
मस्ती भरी नज़र से इक जाम चाहता हूँ

कल हमसे कह रहा था शोहरत तलब ज़माना
तुम काम चाहते हो मैं नाम चाहता हूँ

बादे-सबा से कह दो मेरी तरफ़ भी आये
मैं भी 'हफ़ीज़' उनका पैग़ाम चाहता हूँ -पेशकश : निकहत आरा

दर्द को गीत में ढ़ालो कि बहार आई है
मयकशो जाम उछालो कि बहार आई है

उनकी मस्ती भरी आँखें भी यही कहती हैं
आतिशे-शौक़ बुझा लो कि बहार आई है

उनको रूठे हुए इक उम्र हुई आओ 'हफ़ीज़'
चल के अब उनको मना लो कि बहार आई है -पेशकश : आराधना प्रसाद

उसे पास से हमने देखा नहीं था
वो दरिया का धोखा था दरिया नहीं था

उसे छोड़ना ही पड़ा हमको इक दिन
किराये का घर था वो अपना नहीं था

किसे हम 'हफ़ीज़' अपना क़ातिल बताते
सब अपने थे कोई पराया नहीं था -पेशकश : पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'

इसके बाद तरही ग़ज़ल का दौर चला। दो मिसरा-ए-तरह दिये गये थे :

- मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है
- अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी

'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है' मिसरा-ए-तरह पर डॉ. शमअ नास्मीन 'नाज़ाँ', मासूमा ख़ातून, निकहत आरा, तलअत परवीन, कुमारी स्मृति कुमकुम, रमेश 'कँवल', अरुण कुमार आर्य, मुनीब मुज़फ़्फ़रपुरी और 'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी' मिसरा-ए-तरह पर डॉ. शँकर प्रसाद, घनश्याम, रमेश 'कँवल', अरुण

कुमार आर्य, शकील सहसरामी, नियाज़ नज़र फ़ातमी, हिना रिज़वी हैदर, ज़फ़र सिद्दीक़ी, इरफ़ान अहमद बेलहारवी, सुनील कुमार और शाज़िया नाज़ ने ग़ज़ल पढ़ी।

इसके अलावा मेहता नगेन्द्र सिंह ने पर्यावरण पर कवितायें पढ़ी। आर.पी. घायल और डॉ. अर्चना त्रिपाठी ने ज़िन्दगी पर ख़ूबसूरत ग़ज़लें पढ़ीं।

निम्नलिखित अश'आर बहुत पसन्द किये गये :

उनकी मेहनत ने तराशा तो इमारत है खड़ी
बिन पसीने के महल हो ये कहाँ मुमकिन है -डॉ. शँकर प्रसाद

कर्म कीजे कि यही आपके वश में है 'कँवल'
आपके हाथ में फल हो ये कहाँ मुमकिन है -रमेश 'कँवल'

दूर रह कर भी तुझे चाहा, तुझे पूजा है
अब मेरा कोई बदल हो ये कहाँ मुमकिन है -तलअत परवीन

वो शहनशाह मुहब्बत की निशानी लाया
फिर नया ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है -निकहत आरा

जिसकी आदत ही है बस वादों पे वादा करना
उसके वादे पे अमल हो ये कहाँ मुमकिन है -डॉ. शमअ नास्मीन 'नाजाँ'

साथ तेरे मैं गुज़रती रहूँ पनघट-पनघट
मुश्तरी सुब्हे-अज़ल हो, ये कहाँ मुमकिन है? -कुमारी स्मृति 'कुमकुम'

अब न मुमताज़ महल है न कोई शाहजहाँ
फिर कोई ताजमहल हो, ये कहाँ मुमकिन है

शमअ यादों की तेरी जब न जले दिल में मेरे
अब कोई ऐसा भी पल हो ये कहाँ मुमकिन है -अरुण कुमार आर्य

रहमो-करम उसी की ये साँसें उधार की
अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी -डॉ. शँकर प्रसाद

किसको सुनाएँ शाज़िया है कौन हम-नवा
मुझको ये किस मुक़ाम पे लाई है ज़िन्दगी -शाज़िया नाज़

गमले में तुलसी जैसी उगायी है ज़िन्दगी
पूजा है, अर्चना है, दवाई है ज़िन्दगी -रमेश 'कँवल'

मिलती नहीं है राह कोई भी निजात की
दामे फ़रेबे-इश्क़ में आई है ज़िन्दगी -शकील सहसरामी

गुज़री है हर मक़ामे-नशेबो-फ़राज़ से
एक पल पहाड़, दूसरे खाई है ज़िन्दगी -नियाज़ नज़र फातमी

जन्नत से चल के सामने आई है ज़िन्दगी
साँसों में, धड़कनों में, समाई है ज़िन्दगी -घनश्याम

हमने ख़ुदा से जैसी भी पाई है ज़िन्दगी
करके हज़ार शुक्र बिताई है ज़िन्दगी

मजलिस हो रन्जो-ग़म की या ख़ुशियों की महफ़िलें
दोनों तरह से ख़ूब मनाई है ज़िन्दगी -हिना रिज़वी हैदर

मोहतरमा निकहत आरा और प्रो. डॉ.सुधा सिन्हा को ज़िन्दगी, आराधना प्रसाद और शिप्रा श्रीवास्तव को मुहब्बत और ज़ीनत शैख़ तथा शुभ चन्द्र सिन्हा को मयख़ाना मौज़ूँ पर बेहतर अशआर पेश करने के लिए मोमेंटो और एज़ाज़ी सनद से नवाज़ा गया। तरन्नुम में हफ़ीज़ बनारसी के बेहतर कलाम पेश करने के लिए ज़ीनत शैख़ तथा पूनम सिन्हा 'श्रेयसी' को मोमेंटो और एज़ाज़ी सनद से नवाज़ा गया।

बेहतरीन ग़ज़ल पेश करने के लिए मोहतरमा हिना रिज़वी हैदर और श्री अरुण कुमार आर्य को मोमेंटो और एज़ाज़ी सनद से नवाज़ा गया।

मुशायरा देर शाम तक चलता रहा और लोगों ने इसका भरपूर लुत्फ़ उठाया।

प्रस्तुति : रमेश 'कँवल'

हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़ल जिसके एक मिसरे की तरह पर विभिन्न शायरों ने अपनी ग़ज़ल पढ़ कर खिराजे-अक़ीदत पेश की :

ज़ुल्फ़े-दौराँ में न बल हो ये कहाँ मुमकिन है
मस'अला वक़्त का हल हो ये कहाँ मुमकिन है

हर हसीं जिस्म कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है
हर महल ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

चोट तो रोज़ कलेजे पे लगा करती है
रोज़ इक ताज़ा ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है

साक़िया साग़रे-मय भी है बहुत ख़ूब मगर
तेरी आँखों का बदल हो ये कहाँ मुमकिन है

वो जो हर रोज़ बदलते हैं अदाएँ अपनी
उनका वादा और अटल हो ये कहाँ मुमकिन है

जिसकी फ़ितरत में ही तल्ख़ी हो वो क्या देगा मिठास
नीम में आम का फल हो ये कहाँ मुमकिन है

यूँ तो कह लेते हैं कहने को ग़ज़ल हम भी 'हफ़ीज़'
मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 342)

बहर : बहरे - रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन
SISS IISS IISS SS
2122 1122 1122 22

हफ़ीज़ बनारसी की तरह में कही गयी ग़ज़लें :

तरह - 1 'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

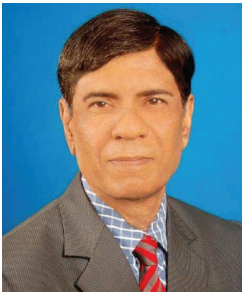

नाम	: अरुण कुमार आर्य
जन्म तिथि	: 16 मई, 1955
मशग़ला	: प्राचार्य (अवकाश प्राप्त)
प्रकाशित कृतियाँ	: एहसास- ग़ज़ल संग्रह (उर्दू)
सम्पर्क का पता	: मुहल्ला इमलीतल, पोस्ट: दानापुर कैंट ज़िला पटना
मोबाइल	: 9431620560

दिल मेरा रंग-महल हो ये कहाँ मुमकिन है
और चेहरा भी कंवल हो ये कहाँ मुमकिन है

अब न मुमताज़ महल है न कोई शाहजहाँ
फिर कोई ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

प्यार कहते हैं जिसे है ये दिलों का रिश्ता
इसमें अब कोई बदल हो ये कहाँ मुमकिन है

तू ही रहता है मेरी ग़ज़लों में ऐ जाने-वफ़ा
बे तेरे मेरी ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है

मौत आनी है ये आ जाएगी एक दिन लेकिन
वक़्त से पहले अजल हो ये कहाँ मुमकिन है

शम्अ यादों की तेरी जब न जले दिल में मेरे
अब कोई ऐसा भी पल हो ये कहाँ मुमकिन है

मुझसे कहता है कि मैं दिल से भुला दूँ तुझको
ऐसी बातों पे अमल हो ये कहाँ मुमकिन है

जो नहीं चलते हैं पत्थर की लकीरों पे कभी
उसका दावा भी अटल हो ये कहाँ मुमकिन है

ता-अबद प्यार 'अरुण' तुझसे रहेगा मेरा
इसका फिर कोई अज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है

नाम	: डॉक्टर शँकर प्रसाद
जन्मतिथि	: 04-07-1946
मशग़ला	: अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग पटना विश्वविद्यालय, पटना।
प्रकाशित कृतियाँ	: 1. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों के नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 1950 से 1975 तक, 2. मुक्तिबोध के काव्य में अस्तित्ववादी दर्शन, 3. समय का सूर्य लालूयादव, 4. लालू यादव का नया बिहार, 5. तुमसे दूर 40 दिन (संस्मरण साहित्य), 6. ग़ज़ल की किताब प्रेस में
सम्पर्क का पता	: 306 महादेवी अपार्टमेंट काशीनाथ लेन, पूर्वी लोहानीपुर, पटना-800003
मोबाइल	: 983 5056266

आज जो है वही कल हो ये कहाँ मुमकिन है
कोई मुश्किल न सहल हो ये कहाँ मुमकिन है

आज गुलशन में खिज़ाँ हैं, थीं बहारें भी कभी
रोज़ ही खिलता कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है

अब भी दुनिया में सुख़नवर तो कई मिलते हैं
'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

उनकी मेहनत ने तराशा तो इमारत है खड़ी
बिन पसीने के महल हो ये कहाँ मुमकिन है

कितने परवाने लुटा देते हैं जाँ उल्फ़त में
इश्क़ में कोई सफल हो ये कहाँ मुमकिन है

नाम	: रमेश 'कँवल'
चेयर पर्सन	: बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना मरकज़े-रंगे-हुनर
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: सावन का कँवल, शोहरत की धूप और स्पर्श की चाँदनी (काव्य संग्रह हिन्दी में) लम्स का सूरज और रंगे-हुनर (उर्दू में शे'री मजमुआ)
मशग़ला	: Ex ADM Law & Order, Patna
निवास	: 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8789761287 / 7091596715

मसअला मुल्क़ का हल हो ये कहाँ मुमकिन है
घर ग़रीबों का महल हो ये कहाँ मुमकिन है

शोख़ अदाओं का न छल हो ये कहाँ मुमकिन है
उनके माथे पे न बल हो ये कहाँ मुमकिन है

मुख़्तलिफ़ राय के अफ़राद इकट्ठे न हों जब
खिलना लाज़िम न कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है

अब हुक़ूमत है नयी, तोहफ़ा में गीता लीजे
गिफ़्ट अब ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

अब कहाँ कहते हैं इस दौर के उस्तादे-ग़ज़ल
'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

पेड़ पौधे, न कोई छाँव, न बारिश, न घटा
रास्ते में कहीं नल हो ये कहाँ मुमकिन है

कर्म कीजे कि यही आपके वश में है 'कँवल'
आपके हाथ में फल हो ये कहाँ मुमकिन है

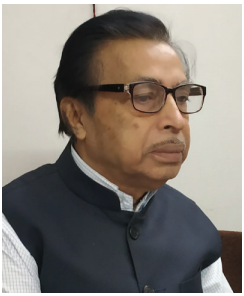

नाम	: नईमुद्दीन (नईम सबा)
जन्मतिथि	: 21 अगस्त 1951
मशग़ाला	: शाइरी
प्रकाशित कृतियाँ	: मौजे-सबा 2008, हिसाब ज़ख़्मों का 2010 (ग़ज़ल संग्रह), समर टिकारवी की नातिया शायरी
सम्पर्क का पता	: मोहल्ला गुलिस्तान, फुलवारी शरीफ़, पटना - 801505
मोबाइल	: 7070000804 / 7488288914

प्यार सच्चा मेरा कल हो ये कहाँ मुमकिन है
हीर का कोई बदल हो ये कहाँ मुमकिन है

जो मुक़द्दर में लिखा है वो रहेगा होकर
उसपे दुनिया का ख़लल हो ये कहाँ मुमकिन है

हम ग़रीबों की मुहब्बत में कहाँ दम लोगों
दूसरा ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

जंग के शोलों का लेते हो सहारा लेकिन
कोई कश्मीर का हल हो ये कहाँ मुमकिन है

साथ दीवाली-ओ-बक़रीद मनाते थे हम
लौट कर आये वो पल फिर, ये कहाँ मुमकिन है

साहिबे-फ़न की तो सफ़ में मैं खड़ा हूँ लेकिन
'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

कर गये वादे पे वादा वो 'सबा' रैली में
अपने वादे पे अटल हों ये कहाँ मुमकिन है

नाम	: सुनील कुमार
जन्मतिथि	: 21 जनवरी 1964
मशग़ला	: पटना उच्चन्यायालय में सहायक निबंधक के पद पर कार्यरत।
प्रकाशित कृतियाँ	: 'नीलाम्बरा' व 'हृदय की विह्वलधारा' दो साझा संग्रह।
सम्पर्क का पता	: बी-11, इंद्रपुरीपथ, सरिस्ताबाद रोड, पटना- 800001
मोबाइल	: 943 100 3980

वक़्त सबका ही प्रबल हो ये कहाँ मुमकिन है
एक सा तेज हो, बल हो ये कहाँ मुमकिन है

दिल ने सन्ताप कई झेले थे हँसते-हँसते
अब वो पहले सा सबल हो ये कहाँ मुमकिन है

मैं भी आया तो हूँ उम्मीद लिए महफ़िल में
'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

ज़ुल्फ़ शानों पे किसी रोज़ जो लहरा जाती
मन में खिलता न कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है

है बसी सूखे गुलाबों की महक साँसों में
भूलना तुमको सहल हो ये कहाँ मुमकिन है

रोज़ वादों का पिटारा ही लिए फिरते थे
इक मुनासिब सी पहल हो ये कहाँ मुमकिन है

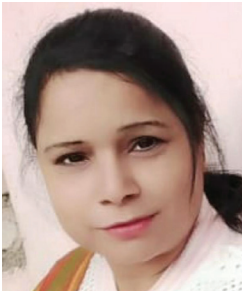

नाम	: कुमारी स्मृति "कुमकुम"
जन्मतिथि	: 29 मार्च
मशग़ला	: शिक्षण
प्रकाशित कृतियाँ	: ये कहाँ मुमकिन है, मेरा चाँद किधर है काव्य संग्रह (डुएट ग़ज़ल संग्रह) और कई साझा संकलन
सम्पर्क का पता	: क़ाजीबाग़, पोस्ट गुलज़ार बाग़, आलमगंज पटना सिटी, पटना
मोबाइल	: 7654858853

'मीर सी कोई ग़ज़ल हो, ये कहाँ मुमकिन है'
ताज सा कोई महल हो, ये कहाँ मुमकिन है

अश्क बहते ही रहेंगे, ये वफ़ा है मेरी
चाँद सा चेहरा कँवल हो, ये कहाँ मुमकिन है

मैं चुभूँ ख़ार सी बनकर ये सिला हो कब तक
आँख फिर कोई सजल हो, ये कहाँ मुमकिन है

पीर का उनको पता क्या ऐ मुहब्बत, बोलो
मुश्किलों में भी अटल हो, ये कहाँ मुमकिन है

साथ तेरे मैं गुज़रती रहूँ पनघट-पनघट
मुश्तरी[1] सुब्हे-अज़ल[2] हो, ये कहाँ मुमकिन है

जल रही है ये मुहब्बत, न इसे दफ़्न करो
फिर मुहब्बत की फ़सल हो, ये कहाँ मुमकिन है

सोंचती हूँ मैं बहारों से गिला कर लूँ फिर
आज 'कुमकुम' सी ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है

1. ख़रीदार , एक तारा, 2. सृष्टि के आरम्भ की सुबह

नाम	: तलअत परवीन
जन्मतिथि	: 21अप्रैल
मश्ग़ला	: अध्यापन, सय्यदना हाल एहसन कॉलेज, बाढ़, पटना
प्रकाशित कृतियाँ	: अधूरे ख़्वाब..(तलअत परवीन की कविताओं का संग्रह)
सम्पर्क का पता	: डॉ इक़बाल अहमद वारसी दरियापुर, कोइरी टोला पटना-800004
मोबाइल	: 9308791610

ज़िन्दगी मेरी सफल हो ये कहाँ मुमकिन है
तेरी नज़रों में भी बल हो ये कहाँ मुमकिन है

हो तेरा साथ तो फिर मौत भी रस्ता बदले
सामने मेरे अजल हो ये कहाँ मुमकिन है

दूर रह कर भी तुझे चाहा, तुझे पूजा है
अब मेरा कोई बदल हो ये कहाँ मुमकिन है

ख़त्म हो जाए फिर इस फूल की यकताई भी
बाग़ में खिलता कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है

अहद बदला तो मसाइल भी हैं यकसर बदले
'मीर सी मेरी ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

ये अलग बात कि चाहत है अभी भी बाक़ी
गुफ़्तगू में भी पहल हो ये कहाँ मुमकिन है

इश्क़ की राह में ठोकर लगे जितनी 'तलअत'
फ़ैसला कोई अटल हो ये कहाँ मुमकिन है

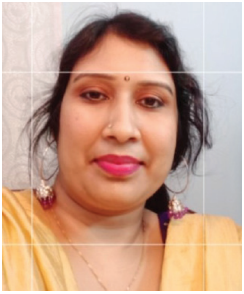

नाम	: निकहत आरा
जन्मतिथि	: 2 जनवरी
मशग़ला	: गृहणी, किताबें पढ़ना
प्रकाशित कृतियाँ	: रंगे-ज़िन्दगी (काव्य संग्रह)
सम्पर्क का पता	: फ़्लैट नं. डी जे 203, प्रकाश दीप एन्क्लेव, आशियाना, दीघा रोड, पटना
मोबाइल	: 9572 305 548/882 530 1480

भागती उम्र का हल हो ये कहाँ मुमकिन है
उम्रे-नादाँ का बदल हो ये कहाँ मुमकिन है

ज़िन्दगी आज मेरी नाज़ के क़ाबिल है मगर
ये बुलन्दी भी अटल हो ये कहाँ मुमकिन है

दर-ब-दर हो के ही चमका है ये क़ंदीले-हुनर[1]
ऐशो-इशरत[2] में सफल हो ये कहाँ मुमकिन है

क्या ये अन्दाजे-जुनूँ है, दिले-नादाँ वाजिब ?
इस सफ़र का न अज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है

सोचना अज़मते-रफ़्ता[3] ही पलट कर आये
फिक्र करने से ये हल हो ये कहाँ मुमकिन है

वो शहनशाह मुहब्बत की निशानी लाया
फिर नया ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

इज़्ने-दिल[4], इज़्ने-सहर[5] में वो सरापा देखूँ
ज़ात से मेरी पहल हो ये कहाँ मुमकिन है

1. ज्ञान का प्रकाश (हुनर की मोमबत्ती), 2. मौज-मस्ती, 3. प्राचीन गौरव, 4. दिल का आदेश, 5. सुबह का आगमन

नाम	: डॉ. शमअ नास्मीन नाज़ाँ
जन्मतिथि	: 5 जनवरी 1978
मशग़ला	: शिक्षण, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हाई स्कूल, आरा,भोजपुर
प्रकाशित कृतियाँ	: बाग़े-ग़ज़ल (ग़ज़ल संग्रह), इज़्हारे-दिल (ग़ज़ल संग्रह)
शीघ्र प्रकाश्य	: बिखरती क़द्रें (कहानी संग्रह)
सम्पर्क का पता	: डॉ. शमअ इन्टरनेशनल अकादमी, रहमत कॉलोनी, ईसा-नगर, फुलवारी शरीफ़, पटना
मोबाइल	: 938 689 4918

जा-ब-जा शामे-ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है
हुस्न ये हुस्ने-अज़ल[1] हो ये कहाँ मुमकिन है

भाई-भाई में ही तक़रार मुसल्सल जब है
घर मुहब्बत का कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है

जानो-दिल, मालो-मता[2] तुझपे लुटाये मैंने
मेरी नीयत में ख़लल हो ये कहाँ मुमकिन है

जिनकी आदत ही है बस वादे पे वादे करना
उनका वादे पे अमल हो ये कहाँ मुमकिन है

रब ने ही कर दिया जब एहसनो-अशरफ़[3] तुझको
कोई तेरा भी बदल हो ये कहाँ मुमकिन है

ख़ुशनुमा घर को क़फ़स[4] उसने बना रक्खा है
अब न फिर जंगो-जदल हो ये कहाँ मुमकिन है

1. शास्वत सौन्दर्य, 2. धन-दौलत, 3 अति सम्मानित, 4 पिंजरा

अपनी कुटिया को कभी कम न समझना हरगिज़
सबका घर ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

अपना हर काम यहाँ आप ही करना है हमें
ग़ैब से कोई पहल हो ये कहाँ मुमकिन है

शे'र कहने को तो सब कहते हैं लेकिन 'नाज़ाँ'
'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

नाम	: मासूमा ख़ातून
जन्मतिथि	: 12 सितम्बर 1970
मशग़ला	: शिक्षक हाई स्कूल
प्रकाशित कृतियाँ	: कश्मकश (उर्दू में कहानी संग्रह) 2018
सम्पर्क का पता	: तारिणी प्रसाद लेन, छोटी मस्जिद, पटना सिटी, पटना - 800008
मोबाइल	: 7301 515 902/8404 947 006

सब्र मेहनत का भी फल हो ये कहाँ मुमकिन है
कुछ ग़रीबी का भी हल हो ये कहाँ मुमकिन है

मौत का वक़्त मुअय्यन है ये सब जानते हैं
आज का वाक़या कल हो ये कहाँ मुमकिन है

आपकी फ़िक्रो-नज़र जैसी है पुरपेच हयात
ये मुअम्मा कभी हल हो ये कहाँ मुमकिन है

हम ग़रीबों की मुहब्बत की निशानी है कहाँ
अपना भी ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

कोई लम्हा तेरी यादों से नहीं है ख़ाली
इस वज़ीफ़े में ख़लल हो ये कहाँ मुमकिन है

नौजवानों के गुज़र जाते हैं तफ़रीह में वक़्त
कुछ उन्हें फ़िक्रे-अमल हो ये कहाँ मुमकिन है

इश्क़ के दर्द से जब तक न हो कोई बेचैन
'मीर सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है'

यूँ तो 'मासूमा' बहुत शहर में मिलते हैं 'रमेश'
दूसरा उनमें 'कँवल' हो ये कहाँ मुमकिन है

'हफ़ीज़' बनारसी की ग़ज़ल जिसके एक मिसरे की तरह पर विभिन्न शायरों ने अपनी ग़ज़ल पढ़ कर ख़िराजे-अक़ीदत पेश की :

जोशे-जुनूँ[1] में आबला-पाई है ज़िन्दगी
अहले-ख़िरद[2] के हाथ कब आई है ज़िन्दगी

दौड़े है काटने के लिए अपना साया भी
किस दश्ते-बेपनाह में लाई है ज़िन्दगी

जीना पड़ेगा औरों की ख़ातिर हमें यहाँ
अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी

कुछ इम्बिसाते-वस्ल[3] भी कह लीजिये, मगर
सच पूछिये तो दर्दे-जुदाई है ज़िन्दगी

तब उनकी बज़्मे-नाज़ के क़ाबिल हुए हैं हम
बरसों बरंगे-शमअ जलाई है ज़िन्दगी

शर्म आ रही है काबे को जाते हुए 'हफ़ीज़'
हमने सनमकदों में गँवाई है ज़िन्दगी

तरह -2 'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

बहर : बहरे- मुजारे-मुसम्मन मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन
SSI SISI ISSI SIS
221 2121 1221 212

1. उन्माद का जोश, 2. दिमाग वालों, 3. मिलन का आनंद

नाम : घनश्याम
जन्मतिथि : 01.04.1951
मशग़ला : सेवानिवृत्त लेखापाल
बिहार राज्य विद्युत बोर्ड
सम्पर्क का पता : बड़ीकोठी, लल्लूबाबू का कूचा,
पटना सिटी, पटना - 800009.
मोबाइल/ व्हाट्सएप : 9507219003

जन्नत से चल के सामने आई है ज़िन्दगी
साँसों में, धड़कनों में, समाई है ज़िन्दगी

उस बाग़बाँ के हाथ का जादू तो देखिए
सूखे हुए शज़र ने भी पाई है ज़िन्दगी

ग़ुरबत में, मुफ़लिसी में, उधारी में, कर्ज़ में
क्यों पूछते हो कैसे बिताई है ज़िन्दगी

जब ज़िन्दगी की डोर भी औरों के हाथ हो
तो जान लीजिए कि पराई है ज़िन्दगी

उस ज़िन्दगी को हर घड़ी लाखों सलाम हैं
जिसने वतन के नाम लुटाई है ज़िन्दगी

इस ज़िन्दगी को खून-पसीने से सींचकर
'घनश्याम' ने ज़रा-सी कमाई है ज़िन्दगी

नाम	: नियाज नज़र फातमी
जन्मतिथि	: 10 जनवरी 1952
मशग़ला	: केनरा बैंक से सेवानिवृत्त
प्रकाशित कृतियाँ	: मुमकिनात(ग़ज़ल संग्रह)
सम्पर्क का पता	: फ़्लैट 201 अलनूरमैशन हारून नगर फुलवारी शरीफ़ पटना - 801505
मोबाइल	: 977 122 2617

मेरी समझ में इतनी ही आई है ज़िन्दगी
बस एक हादसे की बनाई है ज़िन्दगी

गुज़री है हर मक़ामे-नशेबो-फ़राज़[1] से
इक पल पहाड़, दूसरे खाई है ज़िन्दगी

रुख़्सत के बाद सूनी हवेली को देखने
इक बार भी पलट के न आई है ज़िन्दगी

रौशन ख़याल होता है यूँ ही नहीं कोई
मिस्ले-चराग़ मैंने जलाई है ज़िन्दगी

माँगे बग़ैर मिलती है, जाती है बिन कहे
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

आख़िर रहा भी कौन मेरे साथ उम्र भर
यारी तो सिर्फ़ तुमने निभाई है ज़िन्दगी

मरने के बाद 'नज़्र' है जो दाएमी[2] सकूँ
उसके लिए ही धूनी रमाई है ज़िन्दगी

1. बुलंदी और पस्ती स्थलों से, 2. अलौकिक

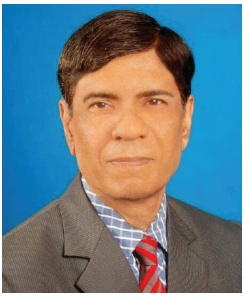

नाम	: अरुण कुमार आर्य
जन्म तिथि	: 16 मई, 1955
मशग़ला	: प्राचार्य (अवकाश प्राप्त)
प्रकाशित कृतियाँ	: एहसास- ग़ज़ल संग्रह (उर्दू)
सम्पर्क का पता	: मुहल्ला इमलीतल, पोस्ट: दानापुर कैंट ज़िला पटना
मोबाइल	: 9431620560

कैसे कहूँ कि मैने गँवाई है ज़िन्दगी
मैंने तो तुझपे अपनी लुटाई है ज़िन्दगी

मुद्दत से खो गयी थी मेरी ज़िन्दगी कहीं
मुश्किल से मेरे हाथ में आई है ज़िन्दगी

ये सच है ज़िन्दगी तो अमानत किसी की है
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

जाने-बहार, जाने-ग़ज़ल, जाने-आरज़ू
क्या ख़ूब तूने मेरी बनाई है ज़िन्दगी

जब भी ख़ुलूस प्यार से मैंने पुकारा है
ख़ुद चल के मेरे सामने आई है ज़िन्दगी

इस ज़िन्दगी में रंग कई हैं मिले हुए
ग़म है, ख़ुशी है, दुःख है, दवाई है ज़िन्दगी

दिल से भुला दूँ उसको ये मुमकिन नहीं 'अरुण'
उल्फ़त से जिसने मेरी सजाई है ज़िन्दगी

नाम	: डॉ. अख़्तर मसूद
जन्मतिथि	: 2 अप्रैल 1963
मशग़ला	: यूनानी चिकित्सक, साहित्य एवम् समाज सेवा, लाइफ़ मेम्बर, इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी
प्रकाशित कृतियाँ	: कथा संग्रह ; काव्य संग्रह
सम्पर्क का पता	: डी. 43/116, बाज़ार सदानन्द, वाराणसी, यू.पी.
मोबाइल	: 923 589 0173 /884 0143224

साज़े-नफ़स[1] पे नग़मा-सराई[2] है ज़िन्दगी
सोज़े-दुरूँ[3] की अक्स-नुमाई[4] है ज़िन्दगी

कहते हैं इसको बारे-गिराँ[5] लोग जो उन्हें
शायद समझ में ही नहीं आई है ज़िन्दगी

औरों के काम आए अगर हम न दोस्तो
बेकार हमने अपनी गँवाई है ज़िन्दगी

कब साथ छोड़ देगी नहीं जानता कोई
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

कोई बताये, जाएँ तो अब जाएँ हम कहाँ
हमको ये किस मुक़ाम पे लाई है ज़िन्दगी

ये और बात इससे नहीं हैं वो बा-ख़बर
उनकी गली में मैंने लुटाई है ज़िन्दगी

1. साँसों के साज़, 2. गीत गाना, 3. प्रेम की आग/ हृदय की जलन, 4. तस्वीर बनाना, 5. मुश्किल ज़िम्मेदारी

यूँ ही नहीं हुई है ये इस दर्जा सुर्ख़रू
मेरे लहू में यारो नहाई है ज़िन्दगी

बज़्मे-हफ़ीज़ आपसे जिन्दा है ऐ 'कँवल'
इस अन्जुमन ने आप से पाई है ज़िन्दगी

औरों की बात तो मुझे 'अख़्तर' नहीं पता
हाँ मैंने ज़िन्दगी से चुराई है ज़िन्दगी

नाम	: मोहम्मद शकील ख़ान (शकील सहसरामी)
जन्मतिथि	: 5 जुलाई 1966
मशग़ला	: बिहार विधान परिषद में कार्यरत
प्रकाशित कृतियाँ	: आवारजा (उर्दू में ग़ज़ल संग्रह)
सम्पर्क का पता	: रहमान मस्जिद के पास, मोहल्ला समनपुरा, राजा बाज़ार, पटना - 800014
मोबाइल	: 957 670 0407 / 983 564 2267

हमने जो उसके फ़ज़्ल[1] से पाई है ज़िन्दगी
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

हर लमहा-ए-हयात[2] बरंगे-अजल[3] रहा
मत पूछ हमने कैसे बिताई है ज़िन्दगी

कैसे न ज़िन्दगी से मुहब्बत हो, इश्क़ हो
इक दर्दे-बे-बहा की कमाई है ज़िन्दगी

वो चाहता है हमसे हक़ीक़त हयात की
जिसने बरंगे-ख़्वाब निभाई है ज़िन्दगी

हम दे रहे हैं नाम ग़ज़ल का इसे मगर
सच पूछिए तो नौहा-सराई[4] है ज़िन्दगी

मिलती नहीं है राह कोई भी निजात[5] की
दामे-फ़रेबे-इश्क़[6] में आई है ज़िन्दगी

वो सब हरीफ़े-जान हुए हैं 'शकील' के
जिस-जिस पे इसने अपनी लुटाई है ज़िन्दगी

उस मोड़ पे रहा नहीं साबित क़दम कोई
जिस मोड़ पे 'शकील' को लाई है ज़िन्दगी

1. कृपा, 2. ज़िन्दगी, 3. मौत, 4. आर्तनाद, 5. मुक्ति, 6. प्रेम का भ्रम जाल

नाम	: डॉक्टर शँकर प्रसाद
जन्मतिथि	: 04-07-1946
मशग़ला	: अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग पटना विश्वविद्यालय, पटना।
प्रकाशित कृतियाँ	: 1. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों के नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 1950 से 1975 तक, 2. मुक्तिबोध के काव्य में अस्तित्ववादी दर्शन, 3. समय का सूर्य लालूयादव, 4. लालू यादव का नया बिहार, 5. तुमसे दूर 40 दिन (संस्मरण साहित्य), 6. ग़ज़ल की किताब प्रेस में
सम्पर्क का पता	: 306 महादेवी अपार्टमेंट काशीनाथ लेन, पूर्वी लोहानीपुर, पटना-800003
मोबाइल	: 983 5056266

तन्हाइयों के दश्त में लाई है ज़िन्दगी
ऐसा लगे मुझे कि जुदाई है ज़िन्दगी

पाया है जो भी मैंने उसे बाँटता रहा
मेरे लिए तो क़र्ज़-अदाई है ज़िन्दगी

रहमो-करम उसी की ये साँसें उधार की
अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी

हुस्नो-शबाब ऐसा कि महताब भी जले
रानाइयों को देख बिताई है ज़िन्दगी

उसकी हसीन ज़ुल्फ़ों में यूँ क़ैद हो गया
कैसे कहूँ कि उससे जुदाई है ज़िन्दगी

बीते दिनों की यादों में गुज़री तमाम शब
ऐसा लगे मुझे कि जलाई है ज़िन्दगी

नाम	: डॉ.(प्रो.) एहसान शाम
जन्मतिथि	: 20 जनवरी 1949
मशग़ला	: सेवानिवृत प्राध्यापक, शेरगोई
	अदबी ख़िदमात
प्रकाशित कृतियाँ	: धूप का सफ़र ; रेत का रसगीत ; रियाज़े-हुनर, मर्सिया, नौहे और सलाम का मजमुआ
सम्पर्क का पता	: फ़्लैट नं. 102, रहमान एन्क्लेव, जी. डी. मिश्र पथ, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी, पटना - 800013
मोबाइल	: 933 487 5071

कब किसके काम दोस्तों आई है ज़िन्दगी
अपनी कहाँ है ये तो पराई है ज़िन्दगी

फूलों के साथ काँटे भी होते हैं इसलिए
ख़ुशियों के साथ ग़म को भी लाई है ज़िन्दगी

मिलता नहीं है कोई ख़रीदार क्या करें
क़ीमत ही मेरी ऐसी लगाई है ज़िन्दगी

मैंने तो उसको टूट के चाहा बहुत मगर
मुझको पता चला कि पराई है ज़िन्दगी

आँसू, फ़रेब, दर्द, घुटन और ठोकरें
मेरे नसीब में यही लाई है ज़िन्दगी

अक्सर बिखेर देता है कोई हमारे ख़्वाब
सपनो में हमने जब भी सजाई है ज़िन्दगी

आती नहीं है 'शाम' मुझे नींद रात में
तस्वीर जबसे अपनी दिखाई है ज़िन्दगी

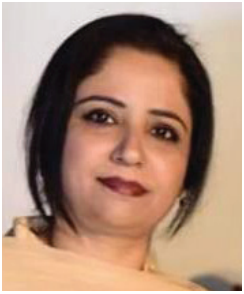

नाम	: हिना रिज़्वी हैदर
जन्म	: 18 दिसम्बर
मशग़ला	: शाइरी
प्रकाशित कृति	: रंगे-हिना
पता	:लखनऊ
मोबाइल	: 780 031 3410

हमने ख़ुदा से जैसी भी पाई है ज़िन्दगी
करके हज़ार शुक्र बिताई है ज़िन्दगी

मजलिस हो रंजो-ग़म की या ख़ुशियों की महफ़िलें
दोनों तरह से ख़ूब मनाई है ज़िन्दगी

पहले लगा था जश्ने-बहाराँ का है सफ़र
अब जानते हैं आबला-पाई है ज़िन्दगी

उसकी अना के ऊँचे पहाड़ों के इस तरफ़
मेरी ख़ुदी को मार के लाई है ज़िन्दगी

है मिस्ले-रेत, हमने मगर बस तेरे लिए
मुठ्ठी में किस जतन से बचाई है ज़िन्दगी

गून्धी है अश्को-ख़ूँ में बहुत हसरतों की ख़ाक़
तब चाक पर दिलों के बनाई है ज़िन्दगी

जैसे ज़मीं उठाये है सारे जहाँ का बोझ
शानों पे हमने ऐसे उठाई है ज़िन्दगी

नाम : मोहम्मद ज़फ़र सिद्दीक़ी
जन्मतिथि : 11 नवम्बर, 1954
प्रकाशित कृतियाँ : बाद अज़ ख़ुदा और रिसालत मआब (ना'त संग्रह उर्दू में) लहजा हमारा (ग़ज़ल संग्रह उर्दू में) ज़फ़र सिद्दीक़ी की चुनिन्दा ग़ज़लें और प्यास का लश्कर (ग़ज़ल संग्रह हिन्दी में)
सम्पर्क का पता : ख़लीलपुरा, प्राइमरी स्कूल के सामने, फुलवारी शरीफ़, पटना
मोबाइल : 933 429 8652

जब तूने सारी बात सुझाई है ज़िन्दगी
तब जा के मुझमें कुछ समझ आई है ज़िन्दगी

घर मेरा इस क़दर तो मुनव्वर[1] कभी न था
तूने ग़ज़ब की चोट जगाई है ज़िन्दगी

फ़र्शे-ज़मीं से अर्शे-बरीं पर बिठा दिया
तूने हमारी शान बढ़ाई है ज़िन्दगी

कोशिश के बावजूद भी मिलना मुहाल है
तू भूल जा इसी में भलाई है ज़िन्दगी

निकली है बेतहाशा मेरे लब से गर्म आह
तूने वो आग दिल में लगाई है ज़िन्दगी

उलझा हूँ हादिसात से निपटा हूँ मौत से
खौफ़ो-ख़तर में रह के बिताई है ज़िन्दगी

1. प्रकाशमान,रोशन

अम्नो-अमाँ का नाम नहीं है जहान में
सर ता क़दम लहू में नहाई है ज़िन्दगी

ये उसको इख़्तियार है जब चाहे माँग ले
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

बच्चे हमारे रोते बिलखते नहीं 'ज़फ़र'
जबसे सुना है नग़मा-सराई है ज़िन्दगी

नाम : इरफ़ान अहमद (बेलहारवी)
जन्म : 1 जनवरी,1957
मशग़ाला : शेरो-शाइरी (सेवानिवृत सरकारी सेवक)
सम्पर्क का पता : फ़्लैट नं 104 मुक़ीम एन्क्लेव,
मस्जिद रोड, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी,
पटना
मोबाइल : 943 067 5965

'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'
है शुक्र उसका जिसने सजाई है ज़िन्दगी

हर हाल में माला जपो मालिक के नाम की
उसने ही हम सभी की बनाई है ज़िन्दगी

अक़्लो-हुनर से जिसने नहीं काम है लिया
सच पूछिये तो यूँ ही गँवाई है ज़िन्दगी

आऐं मुसीबतें जो अगर कुछ भी ग़म न कर
ग़म और ख़ुशी का नाम ही भाई है ज़िन्दगी

इसपे सभी को नाज़ है और इसपे फ़ख़्र है
अलक़िस्सा ये कि सारी ख़ुदाई है ज़िन्दगी

'इरफ़ान' अब भी वक़्त है इसको सँवार ले
ने'मत बड़ी है तूने जो पाई है ज़िन्दगी

नाम	: डॉ. शालिनी पाण्डेय
जन्मतिथि	: 10 मई 1973
मशग़ला	: गृहणी, कवयित्री
सम्पर्क का पता	: रेलवे हंटर रोड, पूर्वी लोहानीपुर, क़दमकुआँ, पटना
मोबाइल	: 9204446006

नायाब दोस्तों ने बचाई है ज़िन्दगी
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

दस्तूरे-ख़ुशनुमा से ये ग़फ़लत में पड़ गयी
सच है कि मुझको रास न आई है ज़िन्दगी

शर्मो-हया का नूर सहर में सिमट गया
शब भर जली बुझी नहीं भायी है ज़िन्दगी

शबनम की बूँद-बूँद गुलों पर दहक उठी
आग़ोश में ख़ुशी की समाई है ज़िन्दगी

मैं 'शालिनी' पड़ोसी के ग़म दूर कर थी ख़ुश
सबका भला करो तो भलाई है ज़िन्दगी

नाम : शुभ चन्द्र सिन्हा
जन्मतिथि : 27 मार्च
मशग़ला : बिहार सरकार में अभियन्ता पद से सेवानिवृत साहित्य सेवा, नाटकों में अभिनय, निर्देशन

यूँही हँसी लबों पे न लाई है ज़िन्दगी
मयकश इज़ा[1] ने प्यास बनाई है ज़िन्दगी

पीना पड़ा कि होश न लाये ये वक़्त भी
वरना ख़ुदी के नाम न पाई है ज़िन्दगी

हमको गये वो छोड़ के राहों मे मुम्तहिन[2]
इज़्ने-वफ़ा[3] की राह चलाई है ज़िन्दगी

मेरे ग़मों को कौन मिटाये है मयकदा
तूने यहाँ भी और मिलाई है ज़िन्दगी

सहमी रही थी रात ज़माने की चाल से
रस्मे-जहाँ ने रात सताई है ज़िन्दगी

हमको नहीं है इल्म बढ़ाये हैं फ़ासले
बस्ती जला के हाथ न आई है ज़िन्दगी

मजबूर हो के उसने तो ख़ुद को मिटा दिया
वरना किसे पसंद न आई है ज़िन्दगी

1. पीड़ा, 2. जिसकी परीक्षा ली जाए, 3. वफ़ा का आदेश,

नाम	: प्रो. डॉ. सुधा सिन्हा
जन्मतिथि	: 16 फरवरी
मशग़ला	: आचार्य एवं अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय (से.नि.)
प्रकाशित कृतियाँ	: 'जयतीर्थ' की 'न्याय सुधा' का दार्शनिक पक्ष, गगरिया छलकत जाये कविता संग्रह
सम्पर्क का पता	: कुमुद एन्क्लेव, बी-1 कृष्णा निकेतन स्कूल के पास, बुद्धा कॉलोनी, पटना
मोबाईल	: 943 028 4838 / 840 994 0929

बेग़म ने पाई-पाई जुटाई है ज़िन्दगी
मेरी शरीके-जाँ की कमाई है ज़िन्दगी

संघर्ष, मुश्किलों में बिताई है ज़िन्दगी
ख़ुश हूँ कि मेरे दिल को ही भायी है ज़िन्दगी

इक दूसरे पे जान दें जब तक बहार है
मुद्दत से तुझको दिल में बसाई है ज़िन्दगी

शादी नहीं हुई है तो अपनी है बेटियाँ
घर से बिदा हुई तो पराई है ज़िन्दगी

तिनकों का आशियाना हो या घर किराये का
सच है 'सुधा' को रास न आई है ज़िन्दगी

नाम : शाज़िया नाज़
जन्म तिथि : 10 अगस्त, 1997
मशग़ला : विद्यार्थी
सम्पर्क का पता : राजा बाज़ार, समनपुरा, बेली रोड, पटना
मोबाइल / व्हाट्सएप : 7909064696 / 8873523989

सदक़े में उनसे हमने जो पाई है ज़िन्दगी
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

मुझको क़दम-क़दम पे रुलाई है ज़िन्दगी
तब जाके उसने मेरी सजाई है ज़िन्दगी

हर शख़्स तश्नालब था इस उजड़े दयार में
वहशतज़दा ये कैसी बिताई है ज़िन्दगी

तुम बन्दगी करो या करो आशिक़ी सनम
मैंने तो राहे-हक़ में लुटाई है ज़िन्दगी

अल्लाह जानता है मयस्सर न कुछ हुआ
आवारा जुगनुओं सी बिताई है ज़िन्दगी

किसको सुनाएँ 'शाज़िया' है कौन हम-नवा
मुझको ये किस मुक़ाम पे लाई है ज़िन्दगी

नाम : चैतन्य चन्दन
जन्मतिथि : 28 फ़रवरी, 1980
मशग़ला : सहायक कला सम्पादक, डाउन टू अर्थ पत्रिका
प्रकाशित कृतियाँ : कविता अनवरत (साझा संकलन)
सम्पर्क का पता : बी-187, जवाहर पार्क, देवली रोड, खानपुर, नई दिल्ली-110062
स्थायी पता : बड़ी कोठी, लल्लू बाबू का कूचा, पटना
मोबाइल / व्हाट्सएप : 9654764282

तुमने जो राहे-वस्ल[1] दिखाई है ज़िन्दगी
हमने भी फ़स्ले-इश्क़[2] उगाई है ज़िन्दगी

होता है मुश्किलों से मेरा रोज़ सामना
अपनी नज़र में एक लड़ाई है ज़िन्दगी

चलते रहे शरर[3] पे, कभी उफ़ नहीं किया
हमने इसी तरह से बिताई है ज़िन्दगी

झुक जाए न माथा मेरे भारत महान का
हमने वतन पे अपनी लुटाई है ज़िन्दगी

नफ़रत की तीरगी को मिटाने के वास्ते
बन के चराग़े-इश्क़[4] जलाई है ज़िन्दगी

फ़ाकाकशी के दौर से गुज़रा न जो कभी
उसकी नज़र में सिर्फ मलाई है जिंदगी

क्या-क्या है तज़्रिबात ये 'चन्दन' से पूछिये
शे'रो-सुखन में जिसने खपाई है ज़िन्दगी

1. प्रेम पथ, 2. प्रेम की फ़सल, 3. चिंगारी, 4. प्रेम का दीपक

नाम	: रमेश 'कँवल'
चेयर पर्सन	: बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना मरकज़े-रंगे-हुनर
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: सावन का कँवल, शोहरत की धूप और स्पर्श की चाँदनी (काव्य संग्रह हिन्दी में) लम्स का सूरज और रंगे-हुनर (उर्दू में शे'री मजमुआ)
मशग़ला	: Ex ADM Law & Order, Patna
निवास	: 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8789761287 / 7091596715
Facebook	: Facebook.com/rameshkanwal
Website	: rameshkanwal.com
E-mail	: rameshkanwal78@gmail.com

गमले में तुलसी जैसी उगाई है ज़िन्दगी
पूजा है, अर्चना है, दवाई है ज़िन्दगी

किसने कहा कि रास न आई है ज़िन्दगी
हद दर्जा सादगी से निभाई है ज़िन्दगी

बस टीवी मोबाइल से सजाई है ज़िन्दगी
हमने कहाँ-कहाँ न गँवाई है ज़िन्दगी

जबसे हुआ है प्रेम की ज़ुल्फ़ों में क़ैद वो
उसके लिए ग़मों से रिहाई है ज़िन्दगी

शर्तों पे अपने सबको नचाती रही है ये
कब दोस्तों की मुट्ठी में आई है ज़िन्दगी

शोहरत की धूप हमको मयस्सर नहीं हुई
बरगद के नीचे हमने बिताई है ज़िन्दगी

उसके बदन की ख़ुशबू समेटे हुए हूँ मैं
मेरी भी रूह में तो समाई है ज़िन्दगी

उस्ताद की नसीहते-पुर-मा'नी याद हैं
'अपनी नहीं है यारो, पराई है ज़िन्दगी'

बाग़ों की तितलियों सी लुभाती है ये 'कँवल'
ख़ुशियाँ हैं यानी ग़म से जुदाई है ज़िन्दगी

नाम	: शमअ कौसर 'शमअ'
तारीख पैदाइश	: 05-12-1990
मशग़ला	: इन्श्योरेंस
प्रकाशित कृतियाँ	: जलती है शमअ
सम्पर्क का पता	: फुलवारी शरीफ़, पटना - 801505
मोबाइल	: 9835202493

किस-किस के साथ यारी निभाई है ज़िन्दगी
'अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी'

मरने का ग़म नहीं न ही जीने की है हवस
किस मोड़ पर ये मुझको ले आई है ज़िन्दगी

ग़द्दार कह रहे हो तुम उसको ऐ ज़ालिमो !
जिसने वतन पे अपनी लुटाई है ज़िन्दगी

पढ़ कर तो देखिये ज़रा दीवान 'मीर' का
रो-रो तमाम उम्र बिताई है ज़िन्दगी

माना कि नामुराद रही उम्र भर यहाँ
लेकिन किसी को रास भी आई है ज़िन्दगी

सड़कों पे वो बहाने लगे हैं मेरा लहू
ऐ 'शमअ' दहशतों में नहाई है ज़िन्दगी

ज़िन्दगी पर 'हफ़ीज़' बनारसी के अशआर

कभी ख़िरद कभी दीवानगी ने लूट लिया
तरह-तरह से हमें ज़िन्दगी ने लूट लिया

एक सीता की रिफाक़त है तो सब कुछ पास है
ज़िन्दगी कहते हैं जिसको राम का बनवास है

ज़िंदगी भी किसी महबूब से कुछ कम तो नहीं
प्यार है उससे तो फिर नाज़ उठाते रहिए

ज़िंदगी दर्द की तस्वीर न बनने पाए
बोलते रहिए ज़रा हँसते-हँसाते रहिए -पेशकश : नसीम अख़्तर

आपकी याद आपका ग़म है
ज़िन्दगी के लिए ये क्या कम है

जिसने गुलशन को ज़िन्दगी बख़्शी
उसके दामन में कोई फूल नहीं

ज़िन्दगी नामे-रंजो-ग़म ही सही
मिल गयी है तो इससे प्यार करो

हुस्न से दोस्ती थी बहुत दिन हुए
ज़िन्दगी, ज़िन्दगी थी बहुत दिन हुए -पेशकश : प्रो. सुधा सिन्हा

जोशे-जुनूँ में आबला-पाई है ज़िन्दगी
अहले-ख़िरद के हाथ कब आई है ज़िन्दगी

दौड़े है काटने के लिए अपना साया भी
किस दश्ते-बेपनाह में लाई है ज़िन्दगी

जीना पड़ेगा औरों की ख़ातिर हमें यहाँ
अपनी नहीं है यारो पराई है ज़िन्दगी

कुछ इम्बिसाते-वस्ल भी कह लीजिये, मगर
सच पूछिये तो दर्दे-जुदाई है ज़िन्दगी

तब उनकी बज़्मे-नाज़ के क़ाबिल हुए हैं हम
बरसों बरंगे-शमअ जलाई है ज़िन्दगी

शर्म आ रही है काबे को जाते हुए 'हफ़ीज़'
हमने सनमकदों में गँवाई है ज़िन्दगी -पेशकश : तलअत परवीन

हरचन्द ग़म के हाथों सताये हुए तो हैं
हम ज़िन्दगी का बोझ उठाये हुए तो हैं

ज़िन्दगी तो उसी की है जिस पर
वो नज़र मेहरबान होती है

इश्क़ की ज़िन्दगी 'हफ़ीज़' न पूछ
हर घड़ी इम्तिहान होती है -पेशकश : निकहत आरा

जलवा-ए-रक़्से-शरर[1] है ज़िन्दगी
हाय कितनी मुख़्तसर[2] है ज़िन्दगी

कौन सी मन्ज़िल की है इसको तलाश
किसलिए गर्मे-सफ़र[3] है ज़िन्दगी

बे - चिराग़े - इश्क़ - ओ - बेनूरे - यक़ीं
एक शामे-बेसहर है ज़िन्दगी

1. चिंगारियों के नर्तन का स्वरुप, 2. संक्षिप्त, 3. यात्रारत

अपने काँधे पर लिए सदियों का बोझ
ज़िन्दगी की नौहागर[1] है ज़िन्दगी

हर तरफ़ है मौत की परछाइयाँ
गामज़न किस राह पर है ज़िन्दगी -पेशकश : शाज़िया नाज़

भागते सायों के पीछे ता ब-क़ै दौड़ा करूँ
ज़िन्दगी तू ही बता कब तक तेरा पीछा करूँ -पेशकश : नियाज़ नज़र फ़ातमी

1. वेदना का गान

मुहब्बत पर 'हफ़ीज़' बनारसी के अशआर

पैग़ाम दिया है कभी पैग़ाम लिया है
आँखों से मुहब्बत में बड़ा काम लिया है

इक मुहब्बत भरी नज़र के सिवा
और क्या अहले-दिल की क़ीमत है

इस नाम की निस्बत[1] से खाए हैं फ़रेब इतने
भूले से मुहब्बत का अब नाम नहीं लेंगे

माइल-ब-करम[2] होती हैं जब हुस्न की नज़रें
तब कोई मुहब्बत का हुनर याद करे है

हमने देखें हैं वो आलम भी मुहब्बत में 'हफ़ीज़'
आस्ताँ[3] ख़ुद जहाँ मुश्ताक़े-जबीं[4] होता है

-पेशकश : आराधना प्रसाद

कहाँ थे मेरे नग़मे इतने शीरीं
तेरे दर्द-ए-मुहब्बत का असर है

बे-पिए भी सुरूर होता है
जब मुहब्बत जवान होती है

यहाँ कारे-तन आसानी नहीं है
मुहब्बत आग है, पानी नहीं है

जब मुहब्बत की बादशाही थी
वो ज़माना ख़यालो-ख़्वाब हुआ

-पेशकश : शिप्रा श्रीवास्तव

1. सम्बन्ध, 2. कृपारत, 3. चौखट, 4. मस्तक प्रेमी

मेरी ज़िन्दगी मुहब्बत, मेरा मशग़ला है उल्फ़त
मैं 'हफ़ीज़' एक शायर मेरा सबसे दोस्ताना

रंगीं इन्हीं दोनों से दुनिया की कहानी है
इक लफ़्ज़ मुहब्बत है, इक लफ़्ज़ जवानी है

आज उसने मुहब्बत से दीवानों को देखा है
अन्जाम ख़ुदा जाने, आगाज़ तो अच्छा है

'हफ़ीज़' अब और आँसू मत बहाना
मुहब्बत के ये नज़राने बहुत है

-पेशकश : ज़ीनत शैख़

गुमराहे-मुहब्बत हूँ पूछो न मेरी मन्ज़िल
हर नक़्शे-क़दम मेरा मन्ज़िल का पता होगा

-पेशकश : नियाज़ नज़र फातमी

मयख़ाना पर 'हफ़ीज़' बनारसी के अशआर

या सबको पिला साक़ी, या हमको भी प्यासा रख
तनहा तेरे हाथों से हम जाम नहीं लेंगे

याद आया उन आँखों का पैमाने-वफ़ा जब भी
साग़र मेरे हाथों से बे-साख़्ता छूटा है

वहीं-वहीं तो चिराग़े-हयात[1] हैं रौशन
जहाँ-जहाँ तेरे मस्तों ने जाम उछाले हैं

तेरी आँखों से मिले जिसको अयाग़े-ज़िन्दगी[2]
क्यों वो पैमाना तलब हो क्यों हो सहबा आशना[3]

शऊरे-बादाकशी ही न था 'हफ़ीज़' हमें
भरी थी वरना रगे-ताक़ में शराब बहुत

-पेशकश : तलअत परवीन

लहू की मय बनाई, दिल का पैमाना बना डाला
जिगरदारों ने मक़तल को भी मयख़ाना बना डाला

भरी महफ़िल में हमने बात कर ली थी उन आँखों से
बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला

हमारे जज़्बा-ए-तामीर की कुछ दाद दो यारों
कि हमने बिजलियों को शमअ का शाना बना डाला

-पेशकश : ज़ीनत शैख़

मयख़ाने से मस्जिद तक मिलते हैं नक़ूशे-पा
या शैख़ गये होंगे या रिन्द[4] गया होगा

-पेशकश : नज़र फातमी

1. जीवन का दीप, 2. जीवन मदिरा का ग्लास, 3. मदिरा-प्रेमी, 4. शराबी

दिल अगर टूटे तो रश्क़े-जामो-पैमाना कहें
हुक़्मे-साक़ी है कि हम मक़तल को मयख़ाना कहें

बादाकशी से हमको तअल्लुक़ नहीं मगर
आँखों से तुम पिलाओ तो इनकार भी नहीं

मयकदे में चन्द कमज़र्फ़ आये थे
सारे मयख़ाने को रुसवा कर चले

-पेशकश : नसीम अख़्तर

इक बुज़ुर्ग आये हैं मयख़ाने में आज
सारे पैमाने खंगाले जायेंगे

साक़ी के बदलने से मयख़ाना कहाँ बदला
साग़र भी पुराने हैं सहबा भी पुरानी है

रिन्दों की मयकशी की ज़रूरत नहीं रही
साग़र उठाये कौन तुम्हारी नज़र के बाद

-पेशकश : शुभ चन्द्र सिन्हा

तरन्नुम में पेश किये गये हफ़ीज़ बनारसी के मतला, शे'र और मक़्ता

दिल की आवाज़ में आवाज़ मिलाते रहिये
जागते रहिये ज़माने को जगाते रहिये

दौलते-इश्क़ नहीं बाँध के रखने के लिए
इस खज़ाने को जहाँ तक हो लुटाते रहिये

फूल बिखराता हुआ मैं तो चला जाऊँगा
आप काँटे मेरी राहों में बिछाते रहिये

बेवफ़ाई का ज़माना है मगर आप 'हफ़ीज़'
नग़मा-ए-मेहरो-वफ़ा[1] सबको सुनाते रहिये -पेशकश : ज़ीनत शैख़

ग़म याद रहेगा, न ख़ुशी याद रहेगी
हाँ आपकी बेगाना-रवी याद रहेगी

दिन तिश्नालबी के तो गुज़र जायेंगे लेकिन
साक़ी तेरी पैमाँ-शिकनी याद रहेगी

भूलेगा कोई कैसे 'हफ़ीज़' अपने वतन को
का'बे में भी काशी की गली याद रहेगी -पेशकश : ज़ीनत शैख़

मुद्दत की तश्नगी का इनआम चाहता हूँ
मस्ती भरी नज़र से इक जाम चाहता हूँ

कल हमसे कह रहा था शोहरत तलब ज़माना
तुम काम चाहते हो, मैं नाम चाहता हूँ

बादे-सबा[2] से कह दो मेरी तरफ़ भी आये
मैं भी 'हफ़ीज़' उनका पैग़ाम चाहता हूँ -पेशकश :निकहत आरा

1. प्रेम और कृपा के गीत, 2. प्रात:समीर

नाम	: डॉ. मो. अरमान
तारिख पैदाइश	: 2-1-1977
मशग़ला	: हमदर्द में विक्रय प्रबन्धक, लेखन एवम् समाज सेवा
प्रकाशित कृतियाँ	: बिहार में उर्दू मर्सिया-निगारी का इर्तिक़ा
सम्पर्क का पता	: काशीनाथ कॉलोनी, कटारी हिल रोड, अन्ठा कोठी के सामने CREAN स्कूल के पास, गया - 823001
मोबाइल	: 9931441623
ई-मेल	: arman.mallick@rediffmail.com

हफ़ीज़ बनारसी के ग़ज़लिया मतले

डॉ. मोहम्मद अरमान- शांति बाग़, न्यू करीम गंज, गया

मोबइल : 99314 41623

(16 जून 2019 को बिहार उर्दू अकादमी के सभागार में आयोजित चौथे इजलास में पढ़ा गया)

मेरे मक़ाले[1] का मौज़ूँ[2] है :"'हफ़ीज़' बनारसी के ग़ज़लिया मतले"

हफ़ीज़ बनारसी यक़ीनन बीसवीं सदी की उर्दू शायरी का मारुफ़-ओ-मोतबर[3] और मुनफ़रिद[4] नाम है। उनका ज़माना हयात 1933 ई. से 2008 ई. तक पहुँचता है और उनकी अदबी ज़िन्दगी तक़रीबन 60 वर्षों का अहाता[5] करती है। वे अगरचे-क़ादिर-उल-कलाम[6] शायर गुज़रे हैं लेकिन उनकी अस्ल पहचान उनकी ग़ज़लों से ग़ज़लियात हफ़ीज़ के बाब में प्रो. एहतमाम हुसैन, फ़िराक़ो-मजरुह, प्रो. अब्दुल मुग़नी, डॉ. महमूद इलाही, जगन्नाथ आज़ाद और शफ़ी मशहदी इस बात पर अपनी-अपनी जगह मुत्तफिक़[7] भी हैं और मुतमईन[8] भी कि "वे अपने पुर-ख़ुलूस अन्दाज़े-नज़र और सुलझे हुए शायराना तर्ज़े-इज़हार[9] से पहचाने जाते हैं। उनके पास मुतालआ[10] की तवानाई[11] भी है और मुशाहिदे[12] की ताज़गी भी, शायरी उनके लिए महज़ ज़िन्दगी की अक्कासी नहीं, तहज़ीबो-तज़ईने-हयात[13] का ज़रिया भी है - उनकी शायरी में तनव्वो[14] है, रंगा-रंगी है, रवाँ-दवाँ अन्दाज़े-बयाँ है, जिद्दत तख़य्युल[15] और फ़न्नी महारत है - वे ग़ज़ल के अदा-शनास[16] ही नहीं उसकी ख़िलवतो-जल्वत[17] के राज़दारों

1. लेख /निबंध, 2. शीर्षक, 3. प्रसिद्ध और विश्वसनीय, 4. अद्वितीय, 5. चारदीवारी /नियत काल, 6. लेखनी के धनी / सामर्थ्यवान, 7. सहमत, 8. संतुष्ट, 9. अभिव्यक्ति की शैली, 10. अध्ययन, 11. मजबूती/ ताक़त/ योग्यता, 12. निरीक्षण करने वाले, 13. ज़िन्दगी को सँवारने सजाने, 14. विभिन्नता / वेराइटी, 15. आधुनिक ख्याल, 16. परिचित, 17. एकांत और सभाओं

में भी शामिल हैं। ग़ज़ल के लिए शर्ते-अव्वल[1] ग़नाइयत[2] है और ये शर्त उनके यहाँ पूरे चेहरे के साथ जलवागर है - वे ख़ुश-फ़िक्र और ख़ुश-गुफ़्तार शायर गुज़रे हैं।

उन्होंने ग़ज़ल के फ़न का सिर्फ़ मुताअला[3] ही नहीं किया बल्कि एक फ़नकार की हैसियत से इसे निहायत कामयाबी के साथ बरता भी है - उनकी ग़ज़ल हुस्ने-अल्फ़ाज़[4] और हुस्ने-मआनी[5] का एक निगारख़ाना[6] है - बिला शुबहा वे क्लासिकी और रूहानी शायरी के बेहतरीन ग़ज़लगो थे।"

और ये कहा जाए तो ख़िलाफ़े-वाक़या नहीं होगा कि उनके ग़ज़लिया मतले वाज़अ[7] तौर पर उन ख़सूसियात[8] और ख़यालात की तौफ़ीक़[9] में कामयाब नज़र आते हैं, जिनका ज़िक्र अभी किया गया।

कहने की ज़रूरत नहीं कि शाइरी और ख़सूसन ग़ज़ल की शाइरी में मतला और मक़्ता का निज़ामो-इल्तज़ाम[10] अपनी ख़ास अहमियत और पहचान रखता है।

ख़सूसन मतला से ग़ज़ल का रंगो-आहंग, ख़सूसी रुझान, क़वाफ़ी-ओ-रदायफ़[11] के एह्तमाम[12], मुहर्रिक़ात ख़याल के इशारे और अजीं क़ब्ल बहुत सारी बातों का अन्दाज़ा हो जाता है और मतलों का मुख़्तसर इन्तख़ाब भी ये बता देता है कि मज़ामीन की पेशकश, मौज़ूआत के तनव्वो[13], उसलूब[14] के इन्फ़रादी ख़सायस[15] और सनाआते-सुख़न[16] से शग़फ़[17] के बाब[18] में शाइर का अमूमि[19] और तरजीही[20] मिज़ाज क्या है और यहाँ ये बात बिला-खौफ़[21] तरदीद[22] कही जा सकती है कि 'हफ़ीज़' बनारसी अपने ग़ज़लिया मतलों के हवाले से एक बड़े कामयाब शाइर के रूप में हमारे सामने आते हैं। 'दरख़्शाँ'[23] और 'ग़ज़ालाँ'[24] से लेकर 'सफ़ीरे-शहरे-दिल'[25] तक उनके ग़ज़लिया कलाम का मतला ये बुनियादी तास्सुर[26] देता है कि उनके यहाँ मौज़ूआत[27] और मज़ामीन[28] का ज़बरदस्त तनव्वो मौजूद है।

ये ठीक है कि आशिक़ाना और रूमानी मतले उनके यहाँ निस्बतन ज़्यादा हैं और ऐसा शायद मुशायरों की ज़रूरत के तहत भी हुआ है लेकिन इस पर मुतज़दान[29] के मतलों की मौज़ूआती बू क़लमौनियत[30] बहरहाल मख़्फ़ी[31] नहीं रहती। कहीं उन्होंने जज़्बा-ओ-तनीयत[32] के साथ तक़ाबुली[33] अन्दाज़ में ज़मीने-वतन[34] के लुत्फ़े-ख़ास की बात की है और कहा है कि :

1. पहली शर्त, 2. गेयता / तरन्नुम, 3. अध्ययन, 4. शब्द-सौन्दर्य, 5. अर्थ सौन्दर्य, 6. प्रेयसी स्थल (सजी हुई जगह), 7. स्पष्ट, 8. विशिष्टता, 9. सामर्थ्य/ हौसला, 10 प्रबंध, 11. क़ाफ़िया और रदीफ़ का बहुवचन, 12. प्रबंध, 13. प्रकार, वेराइटी, 14 शैली,ढंग, 15. व्यक्तिगत विशेषता, 16. काव्य कौशल, 17. हॉबी/ अभिरुचि, 18. अध्याय, 19. साधारणतया, 20. प्रधानता/प्राथमिकता, 21. बिना भय, 22. खंडन/रद करना, 23, 24, 25. काव्य संग्रहों के नाम, 26. प्रभाव, 27. विषय, 28. निबंध, 29, नए अंदाज़/ढंग, 30. रंग-रंगी, 31. गुप्त/छुपा हुआ, 32. देशप्रेम की भावना, 33. मुकाबले, 34. मातृभूमि की मिटटी

रंगे-हयात यूँ तो हर इक अंजुमन में है
इक लुत्फ़े-ख़ास है जो ज़मीने-वतन में है

और कहीं सवालिया अन्दाज़ में मक़सदे-हयातो-अमल[1] बताया है और तामीरी जद्दो-जहद[2] की तरफ़ हौसला बख़्श तवज्जा[3] दिलाई है :

तलाश क्या है, तलब क्या है, आरज़ू क्या है
तेरे लिए जो नहीं है तो जुस्तजू क्या है

अफ़साना-ए-तामीर[4] के उन्वान[5] बहुत हैं
जीना है तो फिर ज़ीस्त[6] के सामान बहुत हैं

हफ़ीज़ बनारसी के मत्लों में फ़लसफ़ा-ओ-अख़लाक़[7] और तासीरे-इश्क़[8] से मुताल्लिक़[9] मज़मून भी बहुत नफ़ासतो-नज़ाकत[10] के साथ नज़्म[11] हुआ है। वे हक़ीक़तों के इज़हार को कारे-सवाब[12] बताते हैं और फूलों में सिर्फ़ रंगत के ही नहीं बल्कि ख़ुशबू के भी म-तलाशी[13] हैं। उनका अक़ीदा[14] है कि जुनूँ[15] के बग़ैर आगही[16] नहीं मिल सकती। इश्क़ की तासीर अँधेरों को उजालों में बदल देती है और अपनी ज़ात का इरफ़ान[17] ही इन्सान को मार्फ़त इलाही तक पहुँचाता है

ख़ुदा की अज़मतों का भी उसी को ज्ञान होता है
वो इन्साँ जिसको अपनी ज़ात का इरफ़ान होता है

हक़ीक़तों को अगर बेनक़ाब करता है
गुनाहगार भी कारे-सवाब करता है

ख़ुशबू नहीं तो फूल की रंगत फ़िज़ूल है
किरदार के बग़ैर ये सूरत फ़िज़ूल है

1. जीवन जीने का उद्देश्य, 2. संघर्ष, 3.ध्यान आकर्षण, 4. निर्माण कथा, 5. शीर्षक, 6. ज़िन्दगी, 7. प्रेम और दर्शन, 8. प्रेम का प्रभाव, 9. सम्बंधित, 10. कोमलता और सुकुमारता (नजाकत), 11. पिरोया हुआ, 12. पुण्य कार्य, 13. अन्वेषी, 14. विश्वास/मानना, 15 उन्माद, 16. ज्ञान /जानकारी, 17. विवेक/ तमीज़/ ब्रम्हज्ञान

जब तसव्वुर में कोई माहजबीं होता है
रात होती है मगर दिन का यक़ीं होता है

गुमरही शर्त है रहबरी के लिए
कुछ जुनूँ चाहिए आगाही के लिए

हफ़ीज़ के मत्लों में लहजे की मासूमियत के साथ इज़हारे-तमन्ना और दर-पर्दा इज़हारे-कर्ब भी मिलता है। यहाँ ख़ूबसूरत रूमानी तसव्वुर की प्यारी अक्कासी[1] भी है, ग़मे-इश्क़ की अज़मतों का ऐतराफ़[2] भी है और ज़िन्दगी-ओ-शख़्सीयत के हवाले से ग़मे-हबीब[3] और ग़मे-हयात[4] का तज़्किरा[5] भी -

ग़मे-हबीब ओ ग़मे-क़ायनात का संगम
मेरी हयात है हर दो हयात का संगम

आ जाओ ले के इक दिन तनवीर ज़िन्दगी की
मुद्दत हुई है देखे तस्वीर ज़िन्दगी की

कितनी दिलकश हयात होती है
दिल से जब दिल की बात होती है

पैग़ाम दिया है कभी पैग़ाम लिया है
आँखों से मुहब्बत में बड़ा काम लिया है

मेरा दिल नहीं परीशाँ, मेरी आँख नम नहीं है
तेरा ग़म रहे सलामत, मुझे कोई ग़म नहीं है

इतना ही नहीं बल्कि हफ़ीज़ बनारसी के मत्लों में नक़्द शाइरी का मज़मून या यूँ कहें कि जदीदियत[6] की क़रार वाक़ई तफ़हीम[7] भी मिलती है, ज़माने में हुनर और अहले-हुनर की ना-क़दरी[8] का दहशत-बदामाँ[9] बयान भी मिलता है और हिन्दुस्तानी तल्मीह[10] के हवाले से ज़िन्दगी की कैफ़ियत भी देखी और दिखाई जाती है -

1, चित्रण. 2, स्वीकृति. 3, प्रेयसी की वेदना. 4. ज़िन्दगी का दुःख, 5. वर्णन, 6. आधुनिकता, 7. समझ, 8. अनादर. 9. आतंक समेटे हुए, 10 संकेत/इशारा (किसी मशहूर क़िस्से वाक़ये या घटना जो आमतौर पर हदीसों,इतिहास,संस्कृति या अन्य श्रोतों से लिए जाते हैं)

एक सीता की रिफ़ाक़त है तो सब कुछ पास है
ज़िन्दगी कहते हैं जिसको राम का बनवास है

हिर्सो-हवस के दौर में क़द्रे-हुनर कहाँ
जाएँ तो जाएँ साहबे-फ़िक्रो-नज़र कहाँ

जदीदियत कि वही तो असास रखते हैं
ब-तर्ज़े-नौ जो रिवायत का पास रखते हैं

'हफ़ीज़' बनारसी के मत्ले उनकी ग़ज़लिया पयामी शाइरी पर भी गवाह हैं और उनके मत्लों में मुख़्तलिफ़[1] पहलुओं से ज़माने की झलकियाँ भी दिखाई गयी हैं। अहले-ज़माना की मुनाफ़िक़त[2], ख़ूने-इन्सानी की अर्ज़ानी[3], ख़िदमते-ख़ल्क़[4] और एसारो-क़ुर्बानी[5] की ज़रूरत, अद्लो-इन्साफ़ की रुसवाई और अहले-चमन की चमन की चमनो-शमन 'हफ़ीज़' के मत्ला ग़ज़ल में ब-आसानी देखी जा सकती है :

बहारों का सब बाँकपन लूटते हैं
चमन को ख़ुद अहले-चमन लूटते हैं

ज़ालिम की सनाख़्वानी, क़ातिल की पज़ीराई
इन्साफ़ के घर में है इन्साफ़ की रुसवाई

दिलों में ग़म के दफ़्तर हैं जहाँ हम लोग रहते हैं
मगर चेहरे मुनव्वर हैं जहाँ हम लोग रहते हैं

रंगे-वफ़ा लबों पे सजाये हुए हैं लोग
ख़ँजर भी आस्तीं में छुपाये हुए हैं लोग

सहर के गीत सुनाओ कि रात अँधेरी है
कोई चिराग़ जलाओ कि रात अँधेरी है

मता-ए-क़ल्बो-जिगर क्या, रगे-गुलू क्या है
न काम आये किसी के तो फिर लहू क्या है

1. विभिन्न, 2. पाखंड, 3. सस्तापन, 4. लोगों की सेवा, 5. त्याग और बलिदान

सस्ता है ख़ूने-आदमी, महँगी शराब है
क्या जाने कितनी दूर अभी इन्क़लाब है

मौज़ुआत और मज़ामीन से क़तअ नज़र जहाँ तक सनाआत सुख़न और तग़ज़्ज़ुल-बदामाँ उसलूब की बात है उनके मत्लों में ग़नाइयत[1], सहले-मुम्तना[2] का वस्फ़, तज़ादो-तक़ाबिल[3], मुनासिबात[4], रोज़मर्रा मुहावरा और तरकीबात[5] का हुस्न, हिन्दी अलफ़ाज़ का इस्तेमाल और मक़ौला[6] की कैफ़ियत जा-ब-जा मिलती है और 'इब्तिदा' को 'उरूज़' 'परावर' 'इज्ज़' को 'इब्तिदा' पर लौटाने की सनअत भी मौजूद है। सिर्फ़ दो तीन शे'र नज़रे-समाअत हैं :

तारीकियों में सुब्ह पर अनवार ले के आ
आ, ज़िन्दगी की दौलते-बेदार ले के आ

हर हसीं जिस्म कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है
हर महल ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

वही इनआम लेते हैं, वही इनआम देते हैं
हमारा नाम तो वो बस बराए-नाम लेते हैं

हफ़ीज़ के ग़ज़लिया मत्लों पर भी बहुत कुछ कहने और लिखने की गुन्जाइश है लेकिन अब उनके इस दुआइया मत्ले पर गुफ़्तगू मुख़्तसर की जाती है :

जो दिलनवाज़ हो, वो पैरहन भी दे यारब
हमारे फ़िक्र को मल्बूसे-फ़न[7] भी दे यारब

बिला-शुब्हा जनाब 'हफ़ीज़' की ये दुआ बाबे-अजाबत[8] से पहुँची और उसका एक ताज़ा सबूत आज की ये महफ़िल भी है। शुक्रिया

डॉ. मो. अरमान

1. गेयता/तरन्नुम, 2. ऐसा शे'र जो आसान लगे मगर कहना असंभव, 3. परस्पर विरोधी और मुकाबला वाला, 4. सत्यता/सापेक्षता, 5. तरीके, 6. कथन, 7. कला का परिधान, 8. अद्भुत अध्याय/(जहाँ दुआ कबूल होती है)

'हफ़ीज़' बनारसी : गौहरे-नायाब शख़्सीयत : मासूमा ख़ातून

नाम ज़िन्दा रहेगा हमारा 'हफ़ीज़'
आबरू-ए-ग़ज़ल हम बचा ले गये

बेशक 'हफ़ीज़' बनारसी ग़ज़ल की आबरू हैं। उन्होंने अपने मुताल्लिक़ जो भी अशआर कहे हैं वे अपनी जगह पर दुरुस्त हैं। आज वे इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनकी तख़्लीक़ ज़िन्दा है और उसकी बिनाह पर उनका नाम भी ज़िन्दा है। उनकी ग़ज़लें, नज़्में हर पढ़ने वाले के दिल को छू जाती है। हफ़ीज़ बनारसी की शाइरी के मुताल्लिक़ उनके मुताले से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि उनमें ऐसे भी अशआर मौजूद हैं जो निहायत बुलन्द पाया के हैं और उनकी तख़्लीक़ी बरतरी का मुस्तहक़म हिस्सा है।

'हफ़ीज़' बनारसी के क़लम में जहाँ हमें सामाजिक अशआर नज़र आते हैं वहीं उनका रिवायती और क्लासिकी अदब से शग़ाफ़ और उसका भरपूर असर भी हमें उनके उसलूब बयान में देखने को मिलती है :

मक़सूदे-सफ़र भूल गये जोशे-सफ़र में
यारों की यही राह-रवी याद रहेगी

लबे-फ़ुरात[1] वही तश्नगी का मँज़र है
वही हुसैन वही क़ातिलों का ख़ँजर है

मेरी जबीं को हिक़ारत से देखने वालो
मेरी जबीं से तेरा आस्ताँ मुनव्वर है

सब हैं अल्फ़ाज़ के जादू में गिरफ़्तार 'हफ़ीज़'
कौन इस दौर में गुल-हाय-मुआफ़ी माँगे

'हफ़ीज़' बनारसी एक सच्चे और अच्छे फ़नकार थे और तख़्लीक़ीयत के असली जौहर से बख़ूबी वाक़िफ़ थे जो कि हमें मसर्रतो-इन्बिसात[2] और तमनियतो[3]-बसारत[4] से हमकिनार[5] करता है। बिला-शुबहा उन्होंने उर्दू ग़ज़ल को मज़बूत और तवाना[6]

1. फ़ुरात (एक नदी) के होंठ (किनारे), 2. प्रसन्नता, 3. संतोष/विश्वास, 4. खुशखबरी/मानवीयता 5. अवगत, 6. बुलंद,

रिवायत बख़्शी है। इसके अलावा क़ुदरत ने उन्हें मुतरन्नुम और पुर-कशिश आवाज़ बख़्शी थी जिसकी वजह से कारे-सामईन और अवामो-ख़ास मह्ज़ूज़ हुआ करते थे। इसी वजह से उनकी शायरी काफ़ी मक़बूल भी हुई। उनकी शाइरी में साहिरी[1] और पैग़म्बरी का ऐसा इम्तज़ाज[2] है जिसका असर लोगों के ज़हन पर छाया रहता है। उनके अशआर देखें कि किस तरह से हालाते-हाज़रा पर भरपूर तन्ज़ किया गया है :

लहू की मय बनाई, दिल का पैमाना बना डाला
जिगरदारों ने मक़तल को भी मयख़ाना बना डाला

सितम ढाते हो लेकिन लुत्फ़ का एहसास होता है
इसी अन्दाज़ ने दुनिया को दीवाना बना डाला

'हफ़ीज़' बनारसी एक इन्सान, दोस्त, शाइर थे। उनकी शाइरी इन्सानी दोस्ती से लबरेज़ हुआ करती थी। मुल्क़ के अन्दर जिस तरह इन्सानियत का क़त्ल हो रहा है, जिस तरह ज़ुल्म का बाज़ार गर्म है उसे देखकर एक हस्सास फ़नकार की तरह उनका दिल दहल जाता है और वे ये कहने पर मजबूर हो जाते हैं :

लाज सीता की फिर आज ख़तरे में है
राम कोई नहीं और रावण कई

इसमें दो राय नहीं हो सकती कि वे एक सच्चे देशभक्त मर्दे-मोमिन थे। उन्हें अपने मुल्क़, अपनी सरज़मीन[3] से वालिहाना उल्फ़त थी। वे अपने मुल्क़ से बेपनाह मुहब्बत किया करते थे और उन्हें अपने हिन्दुस्तानी होने पर बे-इन्तिहा फ़ख़्र[4] था। उनके ये अशआर देखें:

मन में झाँका तो गंगा मिली
मन में डूबे तो शँकर मिले

भूलेगा 'हफ़ीज़' कैसे कोई अपने वतन को
का'बे में भी काशी की गली याद रहेगी

परवरदा-ए-फ़िज़ा-ए-बनारस हूँ मैं 'हफ़ीज़'
मेरी ज़बाँ में चाशनी-ए-आबे-गंग है

1. जादूगरी, 2. मेल, 3. प्रेमपूर्वक. 4, गर्व

उन्होंने अपनी ग़ज़लों, नज़्मों में इस बात को वाज़ेह तौर पर बयान किया है कि एक सच्चा मर्दे-मोमिन ग़द्दार नहीं हो सकता बल्कि वो अपने वतन की ख़ातिर अपनी जान तक निसार करने को हर वक़्त तैयार रहता है। उसे अपने मुल्क़ की मिट्टी की सौंधी ख़ुशबू मुश्क़ अंबर से कम नहीं लगती। 'हफ़ीज़' बनारसी मायूसी-ओ-अफ़्सुर्दगी और तारीक़ी से बाहर आने और माहौल को बुलन्द और साज़गार बनाकर मुनव्वर करने का फ़न जानते हैं। वे अपने अहद के उन तमाम शाइरों से मुख़्तलिफ़ हैं जिन्हें हुस्नो-इश्क़, माशूक़ा के गेसू की मिदहत[1]-सराई से फ़ुर्सत नहीं या जो अल्फ़ाज़ के अन्दर मा'नी की नयी दुनियाओं की तलाश में इस क़दर मसरूफ़ रहते हैं कि उनकी बातों को समझना दुश्वार हो जाता है। 'हफ़ीज़' बनारसी बिला-शुबहा अपनी शाइरी के मार्फ़त से क़ौम को हौसला-ओ-हिम्मत का पैग़ाम देना चाहते हैं और बताते हैं कि

बिजलियों से जिसमें टकराने का होगा हौसला
इस चमन में बस उसी का आशियाँ रह जाएगा

पैदा नज़र भी कीजिये गर शौक़े-दीद है
औरों की आँख से कोई मँज़र न देखिये

'हफ़ीज़' बनारसी की ज़बान बेहद सहलो-रवाँ है। उनके अल्फ़ाज़ में चाशनी है। उनके अल्फ़ाज़ में सुब्हे-बनारस की रंगीनी झलकती है और बहुत से अशआर शामे-अवध का मँज़र पेश करते हैं। वो सहले-मुम्तना[2] में शे'र कहने की महारत रखते हैं। उनके अशआर पढ़ने पर ऐसा मालूम होता है कि कोई बे-साख़्ता, बे-तक़ल्लुफ़ी से हम कलाम हो रहा है और अपने अज़्म का इज़हार करता चला जा रहा है।

ज़िन्दगी से जो आशनाई न दे
देने वाले वो पारसाई न दे

आइने का क़सूर क्या इसमें
ऐब अपना अगर दिखाई न दे

ज़हर उगला करें ये ज़हर उगलने वाले
हम नहीं तर्ज़े-सुख़न अपना बदलने वाले

1. तारीफ़ (प्रशंसा), 2. अति आसान

रास क्या आयेगी साहिल की ख़मोशी उनको
जो हैं तूफ़ान की आग़ोश में पलने वाले

इतना ही नहीं बल्कि 'हफ़ीज़' बनारसी राहे-हक़ पर चलने वाले को हिम्मत दिलाते हैं कि तुम बातिल[1] के शोब्दा-आवाज़ों[2] से मुक़ाबले के लिए असाये-मूसा[3] ले कर उठो। हाथ पर हाथ रख कर बैठने से या नौहा मातम करने से बिगड़े हुए हालत बदलने वाले नहीं हैं :

तुम भी हाथों में असा-ए-मूसवी लेकर उठो
शोब्दाबाज़ी दिखाने शोब्दागर आयेंगे

बिला-शुबहा 'हफ़ीज़' बनारसी की ग़ज़लों में जहाँ इंक़लाबी अशआर हैं वहीं वे अपनी ग़ज़लों में मिल्लत के हालातो-जज़्बात की खुलकर तर्जुमानी भी करते हैं। आज़ादी के बाद मिल्लत जिन आज़माइशों से गुज़रती रही है अगर उनकी अक्कासी देखनी हो तो 'हफ़ीज़' बनारसी के चन्द अशआर मुलाहिज़ा फ़रमाएँ :

दिया ख़ूने-दिल भी जिसने तेरे मयकदे की ख़ातिर
तेरे मयकदे में साक़ी वही मोहतरम नहीं है

हम शुक्र करें किसका, शाकी हों तो किसके हों
रहज़न ने भी लूटा है रहबर ने भी लूटा है

हमारा दिल भी यहीं है, हमारा घर भी यहीं
मगर हमें वे ग़रीबे-दयार कहते हैं

'हफ़ीज़' बनारसी के इन अशआर से ये अन्दाज़ा होता है कि उन्होंने शाइरी करते वक़्त शे'री लवाज़्मात[4] को बरतने में जिस सलीक़ामन्दी का सबूत दिया है वो कोई मामूली बात नहीं है उनके शे'रों में मौजूद किरदार का अपना वजूदी तजरिबा सर चढ़ कर बोलता है।

बिला-शुबहा अहले-अदब के दिलों में वे कल भी ज़िंदा थे और आज भी हैं।

-मासूमा ख़ातून

1. मिथ्या/ग़लत, 2. जादूगरों/अनहोनी करने वालों, 3. मूसा (एक पैगम्बर) का डंडा 4. लाजिम का बहुवचन (आवश्यक)

16 जून 2019 की एक शाम : उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की यादों के नाम एज़ाज़ी सनद और मोमेंटो से नवाज़े गये शख़्सीयात की सूची

ज़िन्दगी, मुहब्बत और मयख़ाना पर हफ़ीज़ बनारसी के अशआर पेश करने वाले निम्नलिखित शायरों को बहुत पसन्द किया गया और उन्हें सम्मान-पत्र और मोमेंटो (सनद और एज़ाज़ी मोमेंटो) से नवाज़ा गया :

ज़िन्दगी	:	श्रीमती निकहत आरा
		डॉ. प्रो. सुधा सिन्हा
मुहब्बत	:	श्रीमती आराधना प्रसाद
		सुश्री शिप्रा श्रीवास्तव
मयख़ाना	:	श्रीमती ज़ीनत शैख़
		श्री शुभ चन्द्र सिन्हा
तरन्नुम में ग़ज़ल	:	श्रीमती ज़ीनत शैख़
		श्रीमती पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'
तरही ग़ज़ल	:	श्रीमती हिना रिज़वी हैदर
		श्री अरुण कुमार आर्य
निज़ामत	:	श्री फ़ख़रुद्दीन आरफ़ी
ग़ज़ल गायन	:	डॉ. शँकर प्रसाद
मक़ाला	:	डॉ. मो. अरमान
		श्रीमती मासूमा ख़ातून

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी की जानिब से एज़ाज़ी मोमेंटो और सनद पाने वाले सभी ख़्वातीनो-हज़रात को बहुत-बहुत मुबारकबाद।

रमेश 'कँवल'
चेयरपर्सन

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी : मरकज़े-रंगे-हुनर
6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन्स रोड, जगदेव पथ, पटना - 800014

بزم حفیظ بنارسی : مرکز رنگ ہنر
6 منگلم وہار کالونی، آرا گارڈنس روڈ، جگدیو پتھ، پٹنہ 800014

Bazm-e-Hafeez Banarasi : Markaz-e-Rang-e-Hunar
6, Mangalam Vihar Colony, Ara Gardens Road, Jagdev Path, Patna - 800014.
E-mail : bazmehafeezbanarasipatna@gmail.com
Mobile : 878 976 1287, WhatsApp : 709 159 6715

रमेश कँवल	**अख़्तर मसूद**	**परवेज़ आलम**
चेयरमैन	जेनरल सेक्रेटरी	ओर्गेनाजिंग सेक्रेटरी

पत्रांक : 14 / दिनांक : 17 जून 2019

सेवा में,
श्री इम्तियाज़ अहमद करीमी,
डायरेक्टर,
निदेशालय, राजभाषा उर्दू,
बिहार

विषय : ज़श्ने-उर्दू के अवसर पर शायरों को पुरस्कृत एवम् सम्मानित करने का प्रस्ताव

महाशय,

कृपया 16 जून 2019 को बिहार उर्दू अकादमी के सभागार में दिए गये अपने निदेश का स्मरण करें। ज़श्ने-उर्दू के अवसर पर उर्दू ज़बान के 3 पुरुष और 3 महिला शो'अरा को पंद्रह-पंद्रह सौ रुपये (रु.1500/-) की मानद राशि से पुरस्कृत करने का प्रस्ताव तीन सदस्यीय कमेटी द्वारा भेजा गया है। उन शायरों के सम्पर्क सूत्र (मोबाइल) निम्नवत हैं :

- **श्री अरुण कुमार आर्य** 943 162 0560
- **श्रीमती आराधना प्रसाद** 725 060 6100
- **श्री क़ाजिम रज़ा** 943 141 0433
- **श्री घनश्याम** 950 721 9003
- **सुश्री शाज़िया नाज़** 887 352 3989
- **श्रीमती हिना रिज़वी हैदर** 780 031 3410

सूचनार्थ और आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित

नियाज़मन्द
रमेश 'कँवल', चेयरपर्सन

चौथा इजलास : बिहार उर्दू अकादमी पटना का सभागार :16 जून 2019
मंच पर बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी के सदस्यगण

सरस्वती वंदना करते हुए आराधना प्रसाद

रमेश 'कँवल' बज़्म को ख़िताब करते हुए

मोहतरमा हिना रिज्वी हैदर अपनी ग़ज़ल पेश करते हुए

श्री सुनील कुमार को मोमेंटो देकर
सम्मानित करते हुए

मोहम्मद अरमान को मोमेंटो देकर
सम्मानित करते हुए

डॉ. अख्तर मसूद को मोमेंटो देकर
सम्मानित करते हुए

डॉ. शँकर प्रसाद को मोमेंटो देकर
सम्मानित करने का दृश्य

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए

श्रीमती पूनम सिन्हा श्रेयसी को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए

मोहतरमा हिना रिज्वी हैदर को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए

डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए

दर्शकों की मुस्कराहट

मोहतरमा ज़ीनत शैख़ अपना कलाम पेश करती हुईं

जनाब ज़फ़र सिद्दीक़ी को सनद से सम्मानित करते हुए

श्री अरुण कुमार आर्य को मोमेंटो और सनद देकर सम्मानित करते हुए

जनाब नसीम अख्तर को मोमेंटो देकर
सम्मानित करते हुए

कुमारी स्मृति कुमकुम को मोमेंटो देकर
सम्मानित करते हुए

सुश्री शाज़िया नाज़ ग़ज़ल पेश
करते हुए

डॉ. मीना कुमारी परिहार को सनद देकर
सम्मानित करते हुए

जनाब नईम सबा को सनद देकर
सम्मानित करते हुए

श्री शुभ चन्द्र सिन्हा को मोमेंटो देकर
सम्मानित करते हुए

मोहतरम हफ़ीज़ बनारसी साहब की एक नायब तस्वीर

पटना पुस्तक-मेला-2019 में शानदार मुशायरा

16 नवम्बर, 2019

गाँधी मैदान, पटना

काग़ज़ के चन्द टुकड़ों की उम्मीद में 'हफ़ीज़'
लेकर कहाँ-कहाँ न हम अपनी ग़ज़ल गये

पटना पुस्तक-मेला 2019 में
मुनअक़्क़द मुशायरे की दास्ताँ

25वें पटना पुस्तक-मेला में आज का दिन शे'रो-शाइरी से शौक़ रखने वाले लोगों के लिए बेहद ख़ास रहा। बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना द्वारा आयोजित मुशायरे का उदघाटन जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी, निदेशक, राजभाषा उर्दू, बिहार सरकार ने शाइराना अन्दाज़ में किया। उन्होंने कहा शरद का स्वागत अगर देश के नामी-गिरामी शाइरों की मौजूदगी में उर्दू-हिन्दी की बेहतरीन शाइरी सुनने-सुनाने से हो तो उसकी यादें बहुत दिनों तक ज़हनो-दिल के दरवाज़े पर दस्तक देती रहेंगी। उन्होंने पुस्तक-मेला के 25वें आयोजन (सिल्वर जुबली) को पटना के साहित्य अनुरागियों के पुस्तक प्रेम का उत्कृष्ट प्रमाण बताया। उन्होंने पुस्तक ख़रीद कर पढ़ने का आह्वान किया और कहा कि उर्दू और हिन्दी सगी बहनें हैं। उर्दू का स्पर्श ही आपकी ज़बान को दिलकश बना देता है। पुस्तक-मेला में गंगा-जमुनी तहज़ीब की मिसाल पेश करते हुए उर्दू-हिन्दी के शाइरों-कवियों को एक मंच पर इकठ्ठा करने के लिए बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के चेयरपर्सन और मशहूर शायर रमेश 'कँवल' के प्रति हार्दिक आभार और तहे-दिल से शुक्रिया अदा किया गया।

मशहूर शायर जनाब नाशाद औरंगाबादी, मुख्य अतिथि और अपनी मख़मली आवाज़ के लिए मशहूर ग़ज़ल गायक डॉ. शँकर सागर, उपाध्यक्ष बिहार हिन्दी साहित्य सम्मलेन ने प्यारी-प्यारी ग़ज़लें पेश कर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

श्री रमेश 'कँवल', चेयरपर्सन, बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना ने मुशायरे में शिरकत करने वाले सभी शाइरों-शाइरात और श्रोताओं का स्वागत-अभिनन्दन किया और पुस्तक-मेला के आयोजकों विशेषकर रत्नेश्वर जी एवम् विनीत जी को मुशायरे के लिए पुस्तक-मेला का आम सभागार उपलब्ध कराने के लिए हार्दिक आभार प्रकट किया।

श्री शकील सहसरामी ने मुशायरे की निज़ामत की। उन्होंने मंच सञ्चालन कुछ इस अन्दाज़ में शुरू किया :

हथेलियाँ भी बड़ी ख़ुश-अदाएँ होती हैं
जुड़ें तो पूजा, खुलें तो दुआएँ होती हैं

- शकील सहसरामी

मुशायरे का आगाज़ अरुण कुमार आर्य की हम्द : हुस्नो-जमाल,

बख़्शीशो-ने'मत ख़ुदा की है और आराधना प्रसाद के स्वर में निराला की सरस्वती वंदना "वर दे वीणावादिनी वर दे" से हुआ। घनश्याम ने मुशायरे का समाँ बाँध दिया :

तेरी आँखों की नादानी न होती
मुझे इतनी परेशानी न होती

हमारी ज़िन्दगी में तुम न होते
तो जीने में भी आसानी न होती

समीर परिमल ने हाल में पटना में आई बाढ़ का मँज़र पेश करते हुए फ़रमाया :

जो न करना था कर गया पानी
देखो हद से गुज़र गया पानी

जब जगह मिल सकी न आँखों में
हर गली-घर में भर गया पानी

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के चेयरपर्सन रमेश 'कँवल' सामईन को रूमानी दुनिया में ले गये :

मैं अपने होंठों की ताज़गी को तुम्हारे होंटों के नाम लिख दूँ
हिना की रौशन हथेलियों से नज़र के दिलकश पयाम लिख दूँ

डिलीट कर दूँगा उसके ग़म को मैं दिल के अब लैपटॉप से ही
ख़ुशी के जितने मिले हैं DATA उन्हें मैं दिलबर के नाम लिख दूँ

मुशायरे में ख़ातून शाइरात की शिरकत भी चर्चित रही। उनकी आवाज़ भी लोगों को प्रभावित करती रही :

मेरी मुझसे ही ठनने लगी
बात बिगड़ी थी बनने लगी

तेरे शब्दों ने मन को छुआ
और मैं भी पिघलने लगी - पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'

क्या हुआ क्या कहा कि ख़फ़ा हो गया
सोचती हूँ तुझे आज क्या हो गया - शाज़िया नाज़

तेरे ज़ुल्मो-सितम का हर चेहरा
आँसुओं ने मचल के देखा है - तलअत परवीन

दिल के रग-रग में उतरता हुआ ख़ँजर देखूँ
जो किसी ने भी न देखा है वो मँज़र देखूँ - आराधना प्रसाद

जीती हूँ सर उठा के हज़ारों के बीच में
अहले-क़लम की कम कभी इज्जत नहीं रही - डॉ. शमअ नास्मीन

इन अँधेरों से कोई खौफ़ नहीं है मुझको
मैं समझती हूँ यहाँ नूर की बारिश होगी - डॉ. आरती कुमारी'

हर्फ़े-इक़रार तो आए थे मेरे होंठों तक
लब सिले ऐसे न कुछ कहने दिया - डॉ. अर्चना त्रिपाठी

जिगर और दिल में समाने लगे हैं
मुझे इतना क्यों याद आने लगे हैं - डॉ. प्रो. सुधा सिन्हा

अन्य शाइरों ने भी एक से बढ़ कर एक उम्दा कलाम सुनाये। निम्नलिखित शायरों के अशआर बहुत पसन्द किये गये।

मौत से नहीं मैं तो ज़िन्दगी से डरता हूँ
दुश्मनी से क्या डरना दोस्ती से डरता हूँ - अरुण कुमार आर्य

'किरण' बाज़ार में खोटी-खरी हर चीज़ बिकती है
ख़रीदारों में शामिल है तो पैदा कर नज़र पहले - प्रेम किरण

ये किस समाज की तहज़ीब है कि आपस में
जो राम-राम न हो और दुआ-सलाम न हो - नाशाद औरंगाबादी

दायरे में सुकून मिलता है
इससे बाहर नहीं हुआ करते - असर फ़रीदी

जहाँ जिस पर भी होती है ख़ुदा के नूर की बारिश
वही शायर भी होता है वही फ़नकार होता है - आर.पी. घायल

हालात ने दिलों को समन्दर बना दिया।
पुरख़ार रास्तों को मुक़द्दर बना दिया -डॉ. शँकर प्रसाद 'सागर'

अभी तो शाम हुई है, ज़रा ठहर जाओ
तमाम रात पड़ी है, ज़रा ठहर जाओ - कलीम अख़्तर

सुर्ख़ आँखों में फ़साना दर्द का
ज़िंदगी है इक तराना दर्द का - चैतन्य उषाकिरण 'चन्दन'

कुछ लुत्फ़ और आता मेरी हँसी-ख़ुशी में
थोड़ा-सा ग़म जो मिलता थोड़ी-सी ज़िन्दगी में - नईम सबा

हाय! कब तक दुश्मनी की आग में
बेकफ़न ज़िन्दा जलाए जायेंगे - सिद्धेश्वर

मुशायरे की निज़ामत जनाब शकील सहसरामी ने बड़े ही रोचक अन्दाज़ में की।

प्रस्तुति : रमेश 'कँवल'

डॉ. अब्दुल मन्नान तरज़ी साहब की एक नज़्म हफ़ीज़ बनारसी साहब की नज़्र

शायर जो इक बड़े हैं 'हफ़ीज़े'-बनारसी
पेशे-नज़र[1] है आज मेरे उनकी शायरी

लेना है जायज़ा मुझे उनके कलाम का
आईना इक बनाना है फ़न्नी[2] मुक़ाम का

दिल की ज़ुबाँ समझने को है दर्द लाज़िमी
उसके बग़ैर पूरा नहीं होता आदमी

दिल ही का दर्द इल्मो-अदब[3] की है आबरू
फ़न इससे दूर जैसे इबादत है बेवज़ू[4]

ख़ूने-जिगर से सोज़े-दरूँ[5] का वजूद[6] है
सोज़े-दरूँ के हाथ में हक़ की नमूद[7] है

गर जायज़ा कलाम का लें इस उसूल पर
हर शेर आगही[8] का ख़ज़ाना है मोतबर[9]

पहली किताब 'शेरे-दरख़्शाँ'[10] अगर है दी
फिर दूसरी है 'बादा-ए-इरफ़ाँ'[11] भी इक मिली

1. समक्ष, 2. कला, 3. ज्ञान और साहित्य, 4. अस्वच्छ, 5. प्रेम की आग, 6. अस्तित्व, 7. धूम-धाम/ख्याति, 8. ज्ञान, 9. श्रेष्ठ, 10,11, काव्य संग्रहों के नाम,

हुब्बे-वतन पे नज़्मों का क़ौलो-क़सम[1] है नाम
यकजहती बैन क़ौम का इसमें हैं इल्ज़ाम[2]

गुलदस्ता-ए-दुआँ[3] तो नबी का क़सीदा भी
इक साहिरी-ए-फ़न[4] है 'ग़ज़ालाँ'[5] की शायरी

यानी ग़ज़ल ने पायी है वो रिफ़अते–बयाँ[6]
हर शे'र मोतबर है तो हर नक़्श कामराँ[7]

मख़सूस[8] दिल की कैफ़ियत[9] का नाम है ग़ज़ल
सहबा-ए-सद-निशात[10] ही का जाम है ग़ज़ल

दश्त-ए-जनूँ[11] की रेत पर तहरीर[12] है ग़ज़ल
गाहे-हरीमे-शौक़[13] की तनवीर[14] है ग़ज़ल

पाती है जिससे रौशनी तारीक़ी-ए-हयात[15]
पोशीदा[16] हैं ग़ज़ल ही में ऐसी तजल्लियात[17]

डॉ. अब्दुल मन्नान तरज़ी

1. काव्य संग्रहों के नाम, 2. प्रबंध / अनिवार्य विवरण, 3.काव्य संग्रहों के नाम, 4. कला की जादूगरी,
5. हफ़ीज़ बनारसी के काव्य संग्रह के नाम 6. अभिव्यक्ति में महारत, 7. कामयाब, 8. विशेष, 9. आनंद,
10. ख़ुशी के सैंकड़ों मदिरा प्याला, 11. उन्माद वन, 12. लिखावट, 13. कभी प्रेम कक्ष, 14. प्रकाश,
15. जीवन के अंधेरे, 16. अन्तर्निहित, 17. आभा/चमक

2020 की लाजवाब ग़ज़लें

इस दौर के भारत का अंदाज़ अनूठा है
अब रिश्ता अदालत का इन्साफ़ से टूटा है

जो बात नहीं शामिल क़ानूनी मसौदे में
उस पर ही सियासत ने इस देश को लूटा है

अफ़्वाहों की शहज़ादी कहती है अदालत में
मैं वाक़ई झूटी हूँ, सब वाक़आ झूटा है

रमेश 'कँवल'

नाम	: पूनम सिन्हा "श्रेयसी"
जन्मतिथि	: 5 सितम्बर
मशग़ला	: स्वतन्त्र लेखन
प्रकाशितकृतियाँ	: (1) तेरी हँसी कृष्ण विवरसी (कविता संग्रह) साझासंग्रह- 2) नीलाम्बरा 3) नई रौशनी नया आसमान 4) त्रिवेणी 5) कविता के दस रंग 6)भाषा सहोदरी
सम्पर्क का पता	: द्वारा श्री नरेन्द्रकुमार सिन्हा, (भा०प्र०से०) पटना स्काइज अपार्टमेंट, फ़्लैट न० 21, विवेकानन्द पार्क रोड, रोड न०1, न्यू पाटली पुत्र कोलोनी, पटना
Mobile no	: 8340484896
Email	: punamsinha2013@gmail.com

हम अब ये प्यार की उलझन कभी सुलझा नहीं सकते
हुआ क्यों आपसे है प्यार ये समझा नहीं सकते

बहुत तड़पे मगर अब प्यार में कैसे कहें तुमको
निभायेंगे वफा हम भी क़सम ये खा नहीं सकते

करें हम लाख अब इन्कार ये सच है मगर जानम
मुसल्सल आप के धोखे से दिल बहला नहीं सकते

करो अब तुम न कोई भी जतन इस प्यार में साजन
सम्भल अब हम गये हैं, आप हमको पा नहीं सकते

चलो 'पूनम' करो अब माफ़ उनको, माफ़ भी कर दो
मिले हैं तुमसे वो ऐसे कि दूर अब जा नहीं सकते

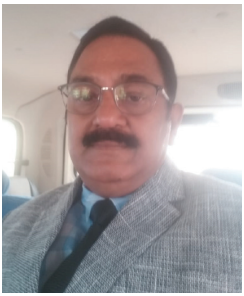

नाम : अनिल कुमार सिंह
तारीख़ पैदाइश : 2-1-1959
मशग़ला : रिटायर्ड डी.आई.जी. ऑफ पुलिस
प्रकाशित कृतियाँ : 1.आधी रोटी पूरा चाँद
(मजमुआ-ए-गीत-ओ-ग़ज़ल)
2. सन्नाटे की चीख़
(मजमुआ-ए-गीत-ओ-ग़ज़ल)
सम्पर्क का पता : 506, प्रशाम्बीसर युग विहार अपार्टमेंट,
पाटलिपुत्र थाना के उत्तर गोशाईं टोला,
पटना - 800013.
मोबाइल : 9431150967

दिलों में रहने वाले दूर दिल से जा नहीं सकते
यूँही उलझे मसाइल[1] और भी उलझा नहीं सकते

हमारी धड़कनों में ज़ज्ब[2] हैं कुछ हसरतें ऐसी
जिन्हें हम चाहकर भी दिल से बाहर ला नहीं सकते

तलातुम[3] सा उठा करता है अन्दर भी औ' बाहर भी
सफ़ीने[4] से सफ़ीने को मगर टकरा नहीं सकते

चलो कोशिश करें हम-तुम नई राहें बनाने की
ग़लत रस्ते तो मंज़िल तक हमें पहुँचा नहीं सकते

अभी हम देखकर आते हैं ख़ुद मँज़र तबाही का
फ़कत अफ़वाह पर हम अपना दिल दहला नहीं सकते

खिलौनों से तो होते थे मसाइल हल लड़कपन के
हर इक मुद्दे पे जी इनसे तो हम बहला नहीं सकते

1. समस्या, 2. शामिल, 3. तूफ़ान, 4. नाव

न हम पर ज़ोर डालो एक लंबी आशनाई का
तेरी ऐ ज़िन्दगी झूठी क़सम हम खा नहीं सकते

यही तारीख़ कहता है तजुरबा भी यही मेरा
जो थक-कर बैठ जाते हैं वो मंज़िल पा नहीं सकते

नाम	: सुनील कुमार
जन्मतिथि	: 21 जनवरी 1964
मशग़ला	: पटना उच्चन्यायालय में सहायक निबंधक के पद पर कार्यरत।
प्रकाशित कृतियाँ	: 'नीलाम्बरा' व 'हृदय की विह्वलधारा' दो साझा संग्रह।
सम्पर्क का पता	: बी-11, इंद्रपुरीपथ, सरिस्ताबाद रोड, पटना- 800001
मोबाइल	: 943 100 3980

हक़ीक़त नीम सी कड़वी है पर झुठला नहीं सकते
पखेरू बिन परों के आसमाँ पे छा नहीं सकते

मसाफ़त में हमेशा झेलनी पड़ती है दुश्वारी
'जो थक-कर बैठ जाते हैं वो मन्ज़िल पा नहीं सकते'

घिरे हैं इस तरह हम ख़्वाहिशों के दरमियाँ यारो
ये कैसी ख़्वाहिशें हैं हम तुम्हें बतला नहीं सकते

ये जलवा हुस्न का है इक पहेली की तरह इनको
हम अपनी कोशिशों के बाद भी सुलझा नहीं सकते

मुझे सब कुछ पता है कौन कब क्यों याद करता है
किसी के हफ़ीज़े में बे-ग़रज़ हम आ नहीं सकते

हमारे दिल से निकली आह हर इक़ शे'र में ढलकर
सदाओं में असर ऐसा करे समझा नहीं सकते

नाम : आर.पी. 'घायल'
जन्मतिथि : 17 जुलाई, 1949
मशग़ला : राजभाषा पदाधिकारी (सेवानिवृत) रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया, शायरी का शौक़ और कृषि कार्य
प्रकाशित कृतियाँ : लपटों के दरमियाँ
सम्पर्क का पता : एम.आई.जी.73, ब्लॉक 3, सेक्टर 6, बिहार हाउसिंग कॉलोनी, भूतनाथ रोड, पटना - 800026
मोबाइल : 9199810038

वफ़ा जिनमें नहीं है वो कभी मुस्का नहीं सकते
किसी के प्यार का नग़मा कभी भी गा नहीं सकते

हमें मालूम है कि उनके आगे खाई है गहरी
मगर वो कश्ती लेकर भी किनारा पा नहीं सकते

पुरानी रूढ़ियों में जो बंधे हैं इस ज़माने में
नये इस दौर के अन्दाज़ उनको भा नहीं सकते

महज़ जो बात करते हैं मगर कुछ भी नहीं करते
ज़मीं पर तोड़कर तारे कभी भी ला नहीं सकते

अँधेरों से जो डरते हैं वही चिल्लाते हैं लेकिन
कभी चिल्लाने से उनके उजाले आ नहीं सकते

किसी का प्यार पूजा है नहीं जिनके लिए 'घायल'
किसी का प्यार दुनिया में कभी वो पा नहीं सकते

नाम : ज़ीनत शैख़
जन्म : 27 फ़रवरी, 1974
मशग़ला : रेडियो जौकी, गृहणी
सम्पर्क का पता : एफ.सी.रोड, मौलाना आज़ाद नगर, फुलवारी शरीफ़, पटना - 801505
मोबाइल : 8987305786

दीवानगी-ए-शौक़ से जब काम लिया है
तब हमने दरे-इश्क़ से इन'आम लिया है

छुपकर नहीं मैनें तो सरेआम लिया है
उस वादा-फ़रामोश[1] का जब नाम लिया है

हर हाल में हम चलते रहे उनकी तलब में
रस्ते में कहीं ठहरे न आराम लिया है

ता-उम्र न पीने की क़सम तोड़ दी उसने
जब दस्ते-हिनाई से मेरे जाम लिया है

यूँ डूबती साँसों को दिया मैंने सहारा
जब याद तेरी आई तो दिल थाम लिया है

बच्चे नहीं बढ़ते हैं बुज़ुर्गों की नज़र में
माँ-बाप ने कब बच्चों से आराम लिया है

भूली ही नहीं तुमको किसी हाल में "ज़ीनत"
उसने सहरो-शाम तेरा नाम लिया है

1. वचन याद न रखने वाले

नाम	: कुन्दन आनन्द
पेशा	: कविता, शायरी, लेखन, सह-अध्यापन
पुस्तक	: एक महँगा एक सस्ता चेहरा (प्रकाशनाधीन)
जन्मतिथि	: 22.02.1994
सम्पर्क का पता	: शिवनगर, खेमनीचक, कंकड़ बाग़, पटना
मोबाइल	: 9117361775
E-mail	: anand22021994@gmail.com

किसी को राह की तकलीफ़ भी समझा नहीं सकते
'जो थककर बैठ जाते हैं वो मन्ज़िल पा नहीं सकते'

ये मायूसी, ये ख़ामोशी, ये उतरा सा तेरा चेहरा
है कैसी बात कि हमको भी तुम बतला नहीं सकते

घुमाओ यूँ न हमको इन ज़माने भर की बातों में
मैं सुलझा आदमी हूँ तुम मुझे उलझा नहीं सकते

मुलाज़िम तुम बड़े हो शाह के किस काम के बोलो
हमारा इक ज़रा सा काम जब करवा नहीं सकते

सियासत ने किया ख़ारिज हमें इस बात को सुनकर
कि हम कुर्सी की ख़ातिर क़ौम को लड़वा नहीं सकते

है तुम पर हक़ हमारा इसलिए हमसे बिना पूछे
कोई भी क़हर तुम ख़ुद पर कभी बरपा नहीं सकते

हिदायत सख़्त है हमको शहर के हाकिमों से कि
तुम्हारा नाम भी अब हम ज़ुबाँ तक ला नहीं सकते

मैं हर दिन तेरे दर तक आ पहुँचता हूँ बहुत चलकर
किसी दिन तुम भी चलकर क्या मेरे घर आ नहीं सकते

नाम	: डॉक्टर शँकर प्रसाद
जन्मतिथि	: 04-07-1946
मशग़ला	: अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग पटना विश्वविद्यालय, पटना।
प्रकाशित कृतियाँ	: 1. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों के नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 1950 से 1975 तक, 2. मुक्तिबोध के काव्य में अस्तित्ववादी दर्शन, 3. समय का सूर्य लालूयादव, 4. लालू यादव का नया बिहार, 5. तुमसे दूर 40 दिन (संस्मरण साहित्य), 6. ग़ज़ल की किताब प्रेस में
सम्पर्क का पता	: 306 महादेवी अपार्टमेंट काशीनाथ लेन, पूर्वी लोहानीपुर, पटना-800003
मोबाइल	: 983 5056266

रिश्ता जो बना कोई हर बार ही टूटा है
हर रब्त ज़माने में लगता है कि झूटा है

जीता है उमीदों पर हर शख़्स ज़माने में
मुश्किल भी अगर आये ये साथ न छूटा है

हर शख़्स पराया है रोता है जो अपनों पर
मुश्किल है यहाँ जीना अरमान भी झूटा है

ये हुस्न का जादू है जलवा है निगाहों का
'जब ज़ुल्फ़ सँवारी है एक आइना टूटा है

एक प्यार का नग़मा है गाया है जिसे सबने
इल्ज़ाम लगायें क्या दिलबर ने ही लूटा है

फ़ानी है ये दुनिया भी हर चीज़ ही जानी है
क्यों फ़िक्र करें उसका रस्ते में जो छूटा है

नाम	: प्रो. डॉ. सुधा सिन्हा
जन्मतिथि	: 16 फरवरी
मशग़ला	: आचार्य एवं अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय (से.नि.)
प्रकाशित कृतियाँ	: 'जयतीर्थ' की 'न्याय सुधा' का दार्शनिक पक्ष, गगरिया छलकत जाये कविता संग्रह
सम्पर्क का पता	: कुमुद एन्क्लेव, बी-1 कृष्णा निकेतन स्कूल के पास, बुद्धा कॉलोनी, पटना
मोबाईल	: 943 028 4838 / 840 994 0929

ख़ुशियों का मेरे होंठों से इक जाम लिया है
मुझसे ही मुहब्बत भरा पैग़ाम लिया है

रक्खा है मुझे दुनिया की तोहमत से बचाकर
'दीवानों ने सब अपने सर इल्ज़ाम लिया है'

उनके बिना अब तो मेरा जीना भी है मुश्किल
मैंने भी ये किस तरह का ईनाम लिया है।

जब भी कोई मुश्किल की घड़ी आई है मुझ पर
दिलबर ने मेरे हाथों को बस थाम लिया है

कैसे मैं बताऊँ कि उन्हें चाहूँ मैं कितना
नाम उनका ही मैंने तो सुब्हो-शाम लिया है

नेकी की घनी धूप किया जग के हवाले
बदले में 'सुधा' ग़म से सजी शाम लिया है

नाम	: रमेश 'कँवल'
चेयर पर्सन	: बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना मरकज़े-रंगे-हुनर
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: सावन का कँवल, शोहरत की धूप और स्पर्श की चाँदनी (काव्य संग्रह हिन्दी में) लम्स का सूरज और रंगे-हुनर (उर्दू में शे'री मजमुआ)
मशग़ला	: Ex ADM Law & Order, Patna
निवास	: 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना
मोबाइल/व्हाट्सएप	: 8789761287 / 7091596715

इस दौर के भारत का अंदाज़ अनूठा है
अब रिश्ता अदालत का इन्साफ़ से टूटा है

जो बात नहीं शामिल क़ानूनी मसौदे में
उस पर ही सियासत ने इस देश को लूटा है

मस्ती थी, बहलते थे, सुहबत के उजालों में
अब कैसे बताएँ हम क्यूँ साथ वो छूटा है

यौवन के दरीचों पर इतराते हुए बोले
अब फिर न कभी कहना इस शोख़ ने लूटा है

उस हुस्न-सिफ़त दिलबर की ऐसी तमन्ना थी
'जब ज़ुल्फ़ सँवारी है इक आइना टूटा है'

अफ़्वाहों की शहज़ादी कहती है अदालत में
मैं वाक़ई झूटी हूँ, सब वाक़आ झूटा है

अब सोचिए मंदिर या मस्जिद में 'कंवल' जाकर
चौराहे पे आकर क्यों सर आपका फूटा है

प्रो. अब्दुल मन्नान 'तरज़ी'

रमेश 'कँवल' का शे'री मज्मुआ 'रंगे-हुनर'

शे'री मज्मूआ[1] 'कँवल' का जो मिला रंगे-हुनर
हर अदा महबूब की दिखला गया रंगे-हुनर

आशिक़ाने-फ़िक्रो-फ़न[2] का है अगर महबूब तो
शायरों की बज़्म[3] में भी छा गया रंगे-हुनर

रिंद[4] क्या कि शैख़ ने भी अपनी तौबा तोड़ दी
साक़ी ने साग़र में यूँ छलका दिया रंगे-हुनर

महवशे-उसलूब[5] ने पहना गुलाबी पैरहन[6]
तो बुताने-फ़िक्र[7] पर भी है चढ़ा रंगे-हुनर

इक तमाशा है कफ़े-महबूब[8] पर रंगे-हिना
क़तरा-ए-ख़ूने-जिगर[9] से ही बना रंगे-हुनर

वारदाते-इश्क़ का शे'रों में इज़्हारे-हसीं[10]
इसकी तख़्लीक़ों को है चमका गया रंगे-हुनर

1. काव्य संग्रह, 2. कला और दर्शन के प्रेमियों, 3. महफ़िल, 4. शराबी, 5. शैली (उपमाओं) की चंद्रमुखी, 6. वस्त्र, 7. विचारों की प्रतिमाओं, 8. प्रेयसी की हथेली, 9. जिगर के रक्त की बूंद-बूंद, 10. सुन्दर प्रस्तुति

ज़िन्दगी में तो 'कँवल' के रंग भी थे बेशुमार
मरहबा कहिये कि इसको भा गया रंगे-हुनर

इसकी तख़्लीक़ात से होता भी है ज़ाहिर यही
इसके फ़न में मो'तबर[1] साबित हुआ रंगे-हुनर

जिसने बख़्शा भी सुख़न में इसको इक आला मुक़ाम
जज़्बा-ओ-एहसास में शामिल हुआ रंगे-हुनर

दस्तरस कुछ ऐसी हासिल है इसे इज़्हार पर
गुलशने-फ़न में है जिससे खिल पड़ा रंगे-हुनर

इसके हर इक शे'र में है कैफ़े-सहबा[2] मौजज़न
लफ़्ज़ो-मा'नी[3] का है जैसे मयकदा रंगे-हुनर

फ़िक्र की पैकर-तराशी से है ज़ाहिर वो कमाल
शे'र में असनाम[4]-साज़ी कर गया रंगे-हुनर

अहले-फ़न[5] से वो पज़ीराई[6] इसे हासिल हुई
सिक्का-ए-राइज[7] की सूरत चल गया रंगे-हुनर

बू-ए-गुल[8],शाख़े-हिना[9],मौजे-सबा[10],जज़्बे-वफ़ा[11]
यानी इन चारों से मिल कर है बना रंगे-हुनर

आपकी ग़ज़लों ही का ऐजाज़[12] है प्यारे 'कँवल'
मो'तबर[13] साबित हुआ जो आपका रंगे-हुनर

1. श्रेष्ठ, 2. मद्य का आनंद, 3. शब्दों और अर्थों, 4. मूर्ति का बहुवचन, 5. कला पारखी, 6. प्रशंसा, 7. राजकीय मुद्रा, 8. पुष्प-सुगंध, 9. मेहंदी की डाली, 10. प्रात:आनंद, 11. प्रेम की भावना, 12. सम्मान, 13. श्रेष्ठ,

आपके हुस्ने-सुख़न[1] की दाद देता हूँ जनाब
बन गयी महबूब ही की हर अदा रंगे-हुनर

बात जो सहबा-ओ-साग़र से नहीं मुमकिन हुई
हुस्ने-फ़न ही काम ऐसा कर गया रंगे-हुनर

शायरों के दरमियाँ ये बात है ज़ेरे-बहस
है तबाअत[2] का तमाशा ख़ुशनुमा रंगे-हुनर

कम से कम इतनी हक़ीक़त अब तो साबित हो गयी
कि जमाले-यार[3] से पैदा हुआ रंगे-हुनर

इक इरम[4] फ़र्दुल-हसन[5] का है जो दरियापूर में
उसने छापी ये किताबे-दिलकुशा[6] रंगे-हुनर

मा'नवी सूरी महासिन[7] से मुज़य्यन[8] है किताब
'खूब है' कहना पड़ा 'तरज़ी' को भी रंगे-हुनर

प्रो. अब्दुल मन्नान 'तरज़ी'

1. काव्य सौन्दर्य, 2. छपाई, 3. प्रेयसी का सौन्दर्य, 4. घर, 5. मुद्रक का नाम, 6. दिल को मोहने वाली किताब, 7. प्रेम, 8. सजाई

हार्दिक आभार संसूचन

डॉ. (प्रो.) तल्हा रिज़्वी 'बर्क़'	वफ़ा सिकंदरपुरी
डॉ. अख्तर मसूद	डॉ. अर्चना त्रिपाठी
अता उर रहमान अता	डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
अनिल कुमार सिंह	डॉ. अब्दुल क़ादिर हफ़ीज़
डॉ.(प्रो.)अब्दुल मन्नान तरज़ी	डॉ. (मो.) अरमान
अरुण कुमार आर्य	असरार आलम सैफ़ी
डॉ. आरती कुमारी	आर.पी.'घायल'
आराधना प्रसाद	इरफ़ान अहमद बेलहारवी
डॉ.(प्रो.) एहसान शाम	डॉ. (प्रो.) एजाज़ अली अरशद
कुंदन आनंद	कुमारी स्मृति कुमकुम
ग़ुलाम रब्बानी अदील	घनश्याम
चैतन्य चन्दन	ज़फ़र महमूद
ज़फ़र सिद्दीक़ी	ज़ीनत शैख़
तबस्सुम नाज़	तलअत परवीन
नईम सबा	नन्दनी प्रनय
नसर आलम नसर	मो.नसीम अख्तर
नाशाद औरंगाबादी	निकहत आरा
नेयाज़ नज़र फ़ातमी	नेयाज़ नादिर
पूनम सिन्हा श्रेयसी	मासूमा ख़ातून
यावर राशिद	रहमतुल्ला अली उर्फ़ रहमत अली रहमत
डॉ. शँकर प्रसाद सागर	शकील सह्सरामी
शमअ कौसर शमअ	डॉ. शमअ नास्मीन नाजां
शाज़िया नाज़	डॉ. शालिनी पाण्डेय
शुभ चन्द्र सिन्हा	डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा
सुनील कुमार	सोमा आनंद गुप्ता

और हिना रिज़्वी हैदर को जिनकी रचनाओं के गुलाब ने 'अक़ीदत के फूल' के सौन्दर्य ताल में खुशियों की ख़ूबसूरती के कँवल खिला दिए |

प्रयागराज
29 फ़रवरी 2020

रमेश 'कँवल'